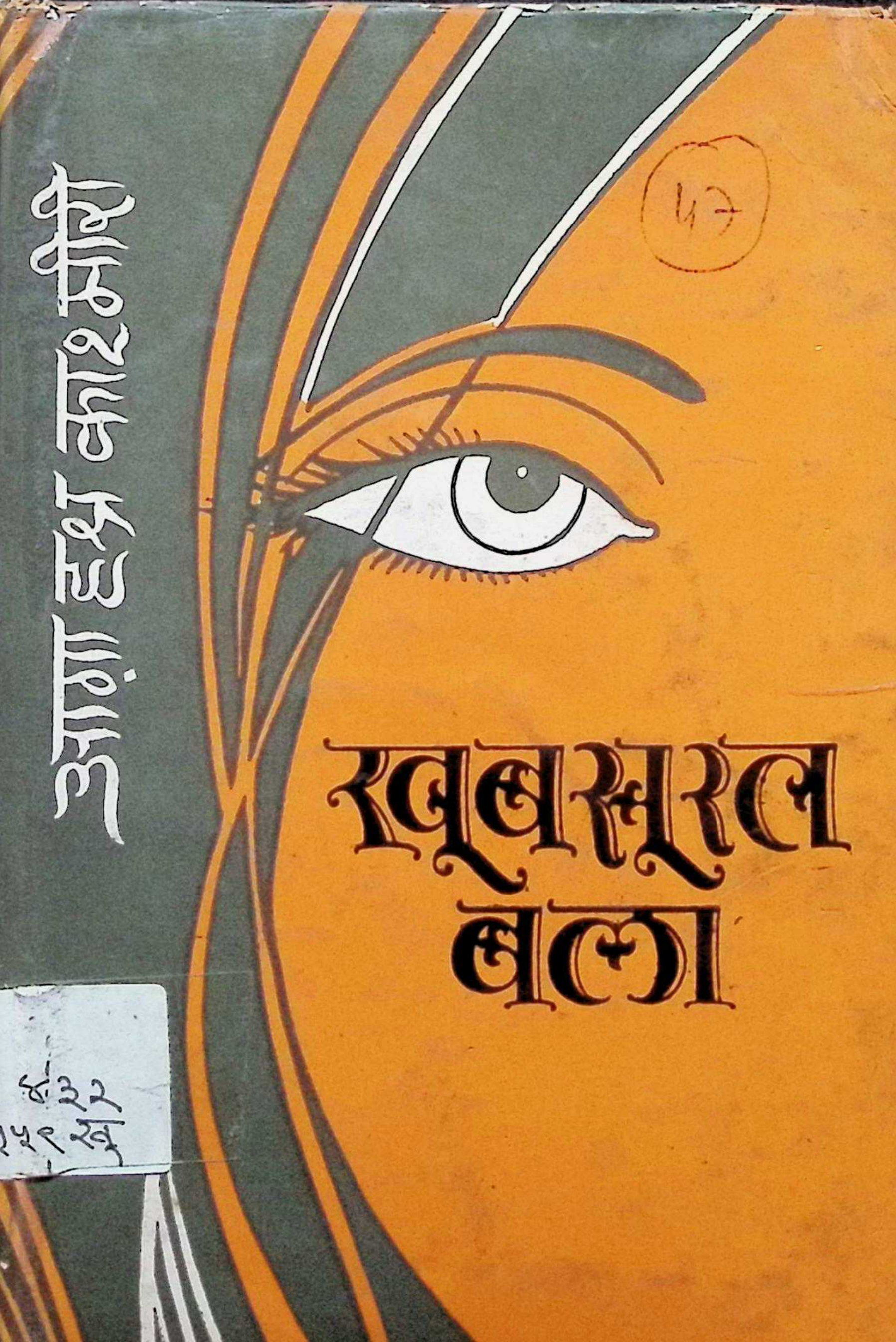

खूबसूरत बला

आगा हश्र काश्मीरी

८.३२
५१ खू

खूबसूरत बला

खूबसूरत बला पूर्व-प्रसाद और प्रसाद-युग के
प्रसिद्ध नाटककार आग़ाहश्र काश्मीरी का एक
अत्यन्त प्रसिद्ध और लोकप्रिय नाटक है जिस
का मंचन सर्वप्रथम सन् १९०९ में न्यू अल्फ्रे
कम्पनी में हुआ था. बाद में अन्यत्र भी कितन
ही जगहों से इसका मंचन हुआ. इस नाटक
ही आग़ाहश्र इंडियन शेक्सपियर कहलाने ल
थे. आग़ाहश्र की नाट्यकला का उत्कर्ष इस
स्पष्ट पाया जाता है. अर्से तक लोग इ
फ़ारसी लिपि में होने के कारण उर्दू की रचन
समझते रहे हैं पर वास्तविकता यह है ि
'खूबसूरतबला' भाषा-शैली की दृष्टि से भ
सर्वथा हिन्दी की रचना है. हिन्दी में यह नाट
पहली बार संपादित और प्रकाशित कि
जा रहा है. अपनी शाश्वत थीम—नेकी-ब
का संघर्ष और अंततः नेकी की विजय, गह
संवेदना और रस-संचार, काव्यात्मक संवा
शैली आदि गुणों के कारण यह नाटक हिन्द
उर्दू की ही नहीं, विश्व-साहित्य की ए
अनुपम कृति है. आशा है साम्प्रतिक रंगमं
रेडियो तथा टेलिवीजन आदि मंचन, प्रसा
और चित्रण के आधुनिक साधनों पर
इसका खूब प्रदर्शन और प्रसारण होगा.

खूबसूरत बला

1587

ख़ूबसूरत बला

आग़ा हश्र काश्मीरी

संपादक
डॉ० कृष्णदेव झारी

शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली

शारदा प्रकाशन

- शोरूम : १६/एफ ३, अंसारी रोड,
  दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२
- प्रधान कार्यालय : भूलभुलैयां रोड, महरौली, नई दिल्ली-११००३०

डा० दिल्ली रमण रेड्डी
कल्याणी रेड्डी स्मारक
पुस्तकालय

खूबसूरत बला : आग़ा हश्र काश्मीरी

संस्करण 1985

मूल्य : २५-००

- शारदा प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली-१००३० द्वारा प्रकाशित,
- NAZIA PRINTERS
  2172, Rodhgran, Lal Kuan,
  DELHI - 110006.

Rs : 25.00

KHOOBSOORAT BALAA (Play)

by

AGHA HASHRA KASHMIRI

Edited by Dr. Krishan Dev Jhari

डा० दिल्ली रमण रेड्डी
कल्याणी रेड्डी स्मारक

आग़ा हश्र काश्मीरी

•

आग़ा हश्र काश्मीरी हिन्दी-उर्दू के प्रसिद्ध नाटककार हैं। दुर्भाग्य से हिन्दी वालों ने आज तक उनके प्रति उपेक्षा का भाव जताया : उनके कृतित्व का कोई समुचित और समग्र अध्ययन किसी ने नहीं किया। उनके प्रति हिन्दी जगत् में एक पूर्वाग्रह का प्रचार ही प्रचलित हो गया कि उन्होंने पारसी व्यावसायिक नाटक मण्डलियों के लिए ही नाटक लिखे हैं और चूंकि पारसी व्यावसायिक नाट्य मंडलियों और कम्पनियों का उद्देश्य दर्शकों का सस्ता मनोरंजन कराना था, अतः उनके नाटक भी साहित्यिक उच्च स्तर के नहीं हैं···। कुछ ऐसी ही भ्रांत धारणा आग़ा हश्र और उनके नाटकों के सम्बन्ध में हिन्दी इतिहासकारों तथा विचारकों ने प्रचारित कर दी। उर्दू साहित्य में फिर भी उनका चर्चा सम्मान और आदर से हुआ है : उनकी रचनाओं के अध्ययन और शोध का कार्य उच्च साहित्यिक स्तर पर किया गया है। उच्च कक्षाओं में उनके नाटकों को पाठ्यक्रम में भी स्थान दिया गया है। जबकि सच्चाई यह है कि आग़ा हश्र सौ फी सदी हिन्दी के लेखक और साहित्यकार हैं। उनके नाटकों का न-केवल ऐतिहासिक महत्त्व अक्षुण्ण है, अपितु साहित्यिक महत्त्व भी कम नहीं है।

बीसवीं शताब्दी के आरंभिक दशकों में जबकि भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के पश्चात् और जयशंकर प्रसाद के आगमन के पूर्व हिन्दी साहित्य में नाट्य-रचना की दृष्टि से एक रिक्तता (अभाव) की स्थिति उत्पन्न हो गई थी, उस समय आग़ा हश्र काश्मीरी ने अपने दर्जनों नाटकों की रचना द्वारा द्विवेदी-युग से प्रसाद-युग तक हिन्दी नाट्य साहित्य को समृद्ध करने का अत्यन्त स्तुत्य प्रयास किया।

शारदा प्रकाशन

- शोरूम : १६/एफ ३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२
- प्रधान कार्यालय : भूलभुलैया रोड, महरौली, नई दिल्ली-११००३०

डा. डिल्ली रमण रेश्मी
कल्याणी रेश्मी स्मारक
पुस्तकालय
9288

खूबसूरत बला : आग़ा हश्र काश्मीरी
संस्करण 1985

मूल्य : २५-००

- शारदा प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली-१००३० द्वारा प्रकाशित,
- NAZIA PRINTERS
2172, Rodhgran, Lal Kuan,
DELHI - 110006.

Rs : 25.00

KHOOBSOORAT BALAA (Play)

by

AGHA HASHRA KASHMIRI

Edited by Dr. Krishan Dev Jhari

डा. डिल्ली रमण रेश्मी
कल्याणी रेश्मी स्मारक

आग़ा हश्र काश्मीरी

●

आग़ा हश्र काश्मीरी हिन्दी-उर्दू के प्रसिद्ध नाटककार हैं। दुर्भाग्य से हिन्दी वालों ने आज तक उनके प्रति उपेक्षा का भाव जताया : उनके कृतित्व का कोई समुचित और समग्र अध्ययन किसी ने नहीं किया। उनके प्रति हिन्दी जगत् में एक पूर्वाग्रह का प्रचार ही प्रचलित हो गया कि उन्होंने पारसी व्यावसायिक नाटक मण्डलियों के लिए ही नाटक लिखे हैं और चूंकि पारसी व्यावसायिक नाट्य मंडलियों और कम्पनियों का उद्देश्य दर्शकों का सस्ता मनोरंजन कराना था, अतः उनके नाटक भी साहित्यिक उच्च स्तर के नहीं हैं...। कुछ ऐसी ही भ्रांत धारणा आग़ा हश्र और उनके नाटकों के सम्बन्ध में हिन्दी इतिहासकारों तथा विचारकों ने प्रचारित कर दी। उर्दू साहित्य में फिर भी उनका चर्चा सम्मान और आदर से हुआ है : उनकी रचनाओं के अध्ययन और शोध का कार्य उच्च साहित्यिक स्तर पर किया गया है। उच्च कक्षाओं में उनके नाटकों को पाठ्यक्रम में भी स्थान दिया गया है। जबकि सच्चाई यह है कि आग़ा हश्र सौ फी सदी हिन्दी के लेखक और साहित्यकार हैं। उनके नाटकों का न-केवल ऐतिहासिक महत्त्व अक्षुण्ण है, अपितु साहित्यिक महत्त्व भी कम नहीं है।

बीसवीं शताब्दी के आरंभिक दशकों में जबकि भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के पश्चात् और जयशंकर प्रसाद के आगमन के पूर्व हिन्दी साहित्य में नाट्य-रचना की दृष्टि से एक रिक्तता (अभाव) की स्थिति उत्पन्न हो गई थी, उस समय आग़ा हश्र काश्मीरी ने अपने दर्जनों नाटकों की रचना द्वारा द्विवेदी-युग से प्रसाद-युग तक हिन्दी नाट्य साहित्य को समृद्ध करने का अत्यन्त स्तुत्य प्रयास किया।

हिन्दी-साहित्य-इतिहासकार और नाट्य-समीक्षक उनके केवल चार-पांच नाटकों—सूरदास बिल्वमंगल, बनदेवी, सीता बनवास, लव-कुश, भीष्म आदि—को ही बताते रहे हैं जो हिन्दू-धार्मिक और पौराणिक कथा-प्रसंगों से सम्बन्धित हैं तथा नागरी लिपि में प्रकाशित हुए हैं। पर जिन नाटकों को आग़ा हश्र ने फारसी लिपि में नाटक कम्पनियों के लिए लिखा था, उन्हें हिन्दी वालों ने उर्दू की रचनाएं मानकर हिन्दी साहित्य में स्थान नहीं दिया। वस्तु-तथ्य यह है कि आग़ा हश्र के 'ख़ूबसूरत बला', 'यहूदी की लड़की', 'सैदे-हवस' (हवस का पुतला), 'आंख का नशा', 'सुफ़ेद ख़ून', 'मधुर मुरली', 'दोरंगी दुनिया', 'भगीरथ गंगा', 'पहला प्यार', 'दिल की प्यास', 'तुर्की हूर' आदि अन्य लगभग बीस नाटक भी सौ फीस दी हिन्दी की रचनाएं हैं। केवल थोड़े-से उर्दू-नुमा रंग और शैली की चाशनी तथा लिपि-भेद के कारण ही हम इन रचनाओं को हिन्दी नाटक साहित्य से बाहर नहीं रख सकते। अतः आग़ा हश्र के समस्त कृतित्व को एक प्रबुद्ध हिन्दी नाटककार का महत्त्वपूर्ण कृतित्व मानना होगा और सच तो यह है कि भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के बाद आग़ा हश्र ही हिन्दी के ऐसे श्रेष्ठ नाटककार बनकर आये जिन्होंने प्रसाद-पूर्व युग तथा प्रसाद-युग में हिन्दी नाटक साहित्य को खूब समृद्ध बनाया।

काल-क्रम से आग़ा हश्र के नाटकों का विवरण यों है—

१. आफ्ताबे-मुहब्बत, सन् १८९७ में फ्रेंड्ज क्लब बनारस के लिए रचा गया और छपा।
२. मुरीदे-शक, सन् १८९९ में एल्फ्रेड कं० द्वारा खेला गया।
३. मारे-आस्तीन, सन् १९०० में उपर्युक्त कं० में दर्शित।
४. असीरे-हिर्स, सन् १९०२ में " " "।
५. दोरंगी दुनिया (मीठी छुरी), १९०४ ई., नौरोजजी परी की कं०।
६. दामे-हुस्न, १९०५ ई., नौरोजजी परी की कं०।
७. सफेद ख़ून, १९०६ ई., दादाभाई ठूटी की पारसी नाटक कं०।
८. सैदे-हवस, १९०७ ई., उपर्युक्त पारसी कं० में।
९. ख्वाबे-हस्ती, १९०८ ई., न्यूअल्फ्रेड में, 'मैकबेथ' की छाया पर रचित।

१०. खूबसूरत बला, १६०६ ई., न्यू अल्फ्रेड में।
११. सिल्वर किंग (नेक परवीन उर्फ अछूता दामन), १६१० ई., अपनी ही दी ग्रेट एल्फ्रेड थेट्रिकल कं० ।
१२. यहूदी की लड़की, १६१३ ई., अपनी दूसरी कम्पनी, इण्डियन शेक्सपियर थेट्रिकल कं० आफ लाहौर में।
१३. बिल्वमंगल सूरदास, १६१५ ई. में अपनी कम्पनी के लिए कलकत्ता में लिखा। यह उनका पहला धार्मिक नाटक है।
१४. वनदेवी, १६१६ ई. में अपनी ही कम्पनी के लिए कलकत्ता में रचा। इसे ही १६२० ई. में भारत रमणी नाम से दोबारा लिखा।
१५. मधुर मुरली, १६१६ ई.।
१६. भगीरथ गंगा, १६२० ई.।
१७. हिन्दुस्तान : कदीम व जदीद, १६२१ ई., पहला सामयिक राजनीतिक नाटक।
१८. तुर्की हूर, १६२२ ई.।
१९. पहला प्यार (संसार-चक्र), १६२३ ई., कोरिनथियन थियेटर में।
२०. आंख का नशा, १६२४ ई., कोरिनथियन थियेटर में।
२१. भीष्म, १६२५ ई., आग़ा हश्र ने इसकी फिल्म बनानी भी शुरू की थी।
२२. सीता-बनवास, १६२८ ई.।
२३. रुस्तम-सोहराब, १६२६ ई., पारसी इम्पीरियल कं० बम्बई में।
२४. धर्मी बालक (गरीब की दुनिया), १६३० ई. कोरिनथियन थियेटर में।
२५. भारतीय बालक (समाज का शिकार), १६३१ ई., कोरिनथियन में।
२६. दिल की प्यास, १६३२ ई. कोरिनथियन में।

इनके अतिरिक्त आग़ा हश्र ने शीरीं-फर्हाद, औरत का प्यार, यहूदी की लड़की और चंडीदास, ये चार फिल्मी स्क्रिप्ट भी १६३२-३४ के बीच तैयार किये थे। १६३४ ई. में हश्र ने 'हश्र पिक्चर्स' नाम से एक अपनी फिल्म कं० स्थापित की थी। किन्तु स्वास्थ्य खराब रहने के कारण

२८ अप्रैल १६३५ को उनका लाहौर में देहान्त हो गया। तबीयत आजाद पाई थी। पर पत्नी से भी बहुत प्यार था। १६१८ ई. में उनकी पत्नी का लाहौर में देहान्त हो गया था। आग़ा हश्र ने दूसरी शादी नहीं की। और लाहौर में अपनी पत्नी की कब्र के साथ दफनाए गए। उनकी एकमात्र संतान दो माह का लड़का नादिर शाह १६१४ ई. में गुजर गया था। उसका उन्हें बहुत सदमा पहुंचा था। इसी समय उनकी टांग टूट गई थी।

आग़ा मुहम्मद शाह 'हश्र' का जन्म ४ अप्रैल १८७६ (११ रबी उस्सानी १२६६ हिजरी) में बनारस में हुआ था। आपके पिता का नाम आग़ा ग़नी शाह (पीरज़ादे) था। आरम्भिक शिक्षा स्कूल में छठे दर्जे तक ही पाई। बालपन से ही शेर-शायरी और नाटक-तमाशों का शौक था। फारसी, अरबी, उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया—अनियमित रूप से ही और अठारह साल की उम्र से ही लिखने लगे। आग़ा हश्र को अपने युग का हिन्दी-उर्दू का शेक्सपियर उचित ही कहा जा सकता है। उनके अधिकांश नाटकों में कवित्वपूर्ण काल्पनिक स्वच्छन्दता, रोमांस और सामंतीय आदर्शवाद की लगभग वैसी ही प्रवृत्ति पाई जाती है, जैसी शेक्सपियर के नाटकों में थी। बेशक, आग़ा साहब ने मूलत: नाटक कम्पनियों के लिए लिखा और इस दृष्टि से जन-रुचि का उन्हें हर समय ध्यान रहा, और शायद इसी कारण साहित्यिक प्रौढ़ता और बहुत कुशल रंग-परिकल्पना उनके नाटकों में नहीं आ पाई, जन-जीवन की यथार्थता खोजने वालों को भी उनमें अधिक कुछ नहीं मिलेगा, पर उस युग में नाटक को साहित्यिक जन-अभिरुचि का माध्यम बनाने का जो ज़बर्दस्त प्रयास उन्होंने किया, उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। उनके नाटक विशेषत: 'यहूदी की लड़की', 'खूबसूरत बला', 'हवस का पुतला', 'बिल्वामंगल सूरदास', 'रुस्तम-सोहराब' आदि अपनी शाश्वत थीम, संवेदनापूर्ण कथानक, कवित्वमय संवाद-शैली, महत् उद्देश्य और आद्यंत रस-संचार के कारण किसी भी भाषा के साहित्य का गौरव बढ़ाने वाले उत्कृष्ट नाटक हैं।

कृष्णदेव झारी

भूलभुलैयां रोड,

महरौली, नई दिल्ली-११००३०

खूबसूरत बला

☐ पुरुष पात्र

तौफ़ीक : एक राजभक्त, विश्वासपात्र सामंत (दरबारी)
हशाम : तौफीक का वफादार सेवक
नवाव क़तलू : कपटी और नृशंस वज़ीर
तग़रल बेग : एक सरदार (क़तलू का बेटा)
क़हरमान : एक सरदार
शहरयार : „ „
सफ़दर : महारानी का सेवक
सहील : हत बादशाह का अबोध लड़का
रशीद : तौफ़ीक का अबोध लड़का
खैरसल्ला : नवाब क़तलू का मुसाहिब
माशाअल्ला : शहरयार का सेवक
एजेंट : शादी के दफ़्तर का एजेंट
कप्तान : एक रिटायर फोजी, बिगड़ा हुआ रईस
शहबाज : एक विक्षिप्त (पागल) आदमी, जो पागलखाना से भाग आया है।
मुश्किल आसां : एक नोजवान मुसाफिर
चचा : मुश्किल आसां का चचा
फ़ैजू : शहरयार का सेवक
सैफू : खैरसल्ला का सेवक

इनके अतिरिक्त डाक्टर, जमादार, चोबदार, क़ासद, दरबारी, सिपाही व अन्य नौकर-चाकर आदि।

□ स्त्री पात्र

शमसा : दुश्चरित महारानी

ताहिरा : तौफ़ीक की नेक बीवी

तसनीम : एक नौजवान अमीरजादी, शहरयार और तग़रल की प्रेमिका।

शीरीं : एक नौजवान सुन्दरी

मैडम : खैरसल्ला की बीवी

मुमताज़ : माशाअल्ला की बीवी।

इनके अतिरिक्त नेकी और बदी प्रतीक पात्र तथा सहेलियां, नर्तकियां और दासियां आदि। □

अंक पहला

दृश्य पहला

[नेपथ्य से नेकी का गाते हुए आना]

रब की शान न्यारी !
न्यारी पर वारी बलिहारी !
तोरी कहानी घर-घर, मनमानी जान यकतायी,[1] चतुराई,
प्यारी,
प्यारी-प्यारी सारी ! रब की शान न्यारी !...
नेकी पर बंदे ध्यान धरना, क्रोध, काम से नित डरना।
हवस[2] लपट करत फिरत, छल की मारी दुनिया सारी।
निस दिन आरी है ख्वारी ![3] रब की...।

खुदावंद का जलाल हो ! पाक है वह खुदा जो आदम के सरकश[4] और बाग़ी बेटों को मां-बाप की तरह प्यार करता है ! धन्य है वह इन्सान जो सच्चे दिल से और पूरी सचाई के साथ उसकी आज्ञा मानता है! ऐ भटके हुए प्राणी ! जो अन्धा और पागल बना हुआ तबाही की अन्ध गुफा की ओर दौड़ा जा रहा है, आ रोशनी की तरफ आ। वह दयालु परमात्मा तेरी पुकार की ओर कान लगाये है। उसकी कृपा तुझे गोद लेने के लिए मुहब्बत के बाज़ू फैलाए है—

१. अकेली २. वासना ३. दुःख ४. विद्रोही।

जिस राह में हों ठोकरें वह राह ऐ इन्सान ! न चल।
अपराध-पाप के बोझ से वरना गिरेगा मुंह के बल॥
अंधेरे हैं हर तरफ़ अन्धा न बन अब भी संभल।
धर्म का फानूस ले और उसमें जला कर्म की अनल॥
उठ, दौड़, भाग आ इस तरफ़ ताक़त अभी है पाँव में।
आराम-ओ-राहते-जिन्दगी सब हैं खुदा की छाँव में॥

[वदी आती है]

बदी : मैं हूं, जहान् की खुशी मैं हूं !

नेकी : दुनिया की मुसीवत ! खुदा और इन्सान के बीच में दीवार!

बदी : दुनिया की किस्मत मेरे दायें हाथ में है और उसकी कुंजी मेरे वायें हाथ में है। तुम जो स्वर्ग की आशा में दुनिया को नरक बनाये हुए हो, मेरी तरफ आओ और मेरा दरवाजा खटखटाओ। मेरी दया के बादल मोती बरसायेंगे और तुम्हारे दामन को मालामाल कर देंगे।

नेकी : तू झूठी है ! तू आदमी को बदनामी, मुसीबत और भयानक मौत के सिवा कुछ नहीं दे सकती।

बदी : चुप ! तू ही मेरी तरफ आने वालों को रोकती है।

नेकी : और तू नेक राह पर चलने वालों को नरक के अंधकूप में गिराती है।

बदी : तू न होती तो संसार में स्वर्ग का मजा आता।

नेकी : वदी ! तू न होती तो खुदा नरक को बनाता ही न।

बदी : नेकी ! लड़ाई छोड़ !

नेकी : वदी ! वुराई छोड़ !

बदी : अरी ! दुनिया आशिकों का बाजार है ! इसमें कोई तेरा खरीदार है, कोई मेरा तलबगार[1] है—

अगर नफरत है मेरे आशिक़ों को तेरी सूरत से।
तो मुझ से किस लिये लड़ती है, जा लड़ अपनी क़िस्मत से॥

१. चाहने वाला

नेकी : जो आज जानते हैं दुनिया की हूर तुझ को।
दे बैठे हैं जो दिल से अक्ल-ओ-शऊर[1] तुझको ॥
जिस रोज रौशनी में देखेंगे शक्ल तेरी।
नफरत की ठोकरों से फेंकेंगे दूर तुझ को ॥

बदी : नादान ! कभी ऐसा न होगा। क्या तू नहीं जानती कि दुनिया की मिट्टी स्वार्थ और लालच के पानी से गूंधी गई है?

नेकी : झूठी ! तेरा हर शब्द द्वेष से भरा है, दुनिया का चमन बस मेरी कोशिश से हरा है।

बदी : बस बंद कर अपने झूठे दावे, देख हाल, मेरे आशिक हैं आये।

[मंच पर तग़रल शराब पीता हुआ दिखाई देता है : नर्तक गाता है।]

ऐ प्यारे महाराजा ! दुलारे महाराजा ! प्याले मय[2] के
पी लो जी !
जिओ जानी, पीओ जानी, प्याले मय के पी लो जी !
दोहरा ऐ प्यारे...
बहार आई है भर दे बादा-ए-गुलगूं[3] से पैमाना[4]।
रहे लाखों बरस साक़ी तेरा आबाद मयखाना ॥
घड़ी-घड़ी पल-पल छिन-छिन, कामिनी कमसिन[5] प्यारे
महाराजा !...

बदी : मेरे आशिकों का हाल देख चुकी ! अब अपने चाहने वालों की दुख और मुसीबत की जिन्दगी देख।

नेकी : बदी ! रही शर्त ! देखना मैं हारती हूँ या तू हारती है। (दोनों जाती हैं)

[पटाक्षेप]

१. अक्ल और तमीज़ २. शराब ३. बढ़िया शराब ४. प्याला, जाम
५. कम-उम्र

दृश्य दूसरा

[शमसा का आलीशान मकान। सब दरबारी हाथ बांधे, सर झुकाये खड़े हैं]

चोबदार १ : जलाल[1] साथी, कमाल साथी, उन्नति ज्यों छत्र सिर पर।

दूसरा : जमाना साथी, फलक[2] रक्षक, सूरज सेवक, सितारा चाकर॥

पहला : नसीब दरबान, मौत निगहबान, कदरदान हो भाग्यवर।

दूसरा : कलजम की दानशीलता कदम पर धन-दौलत निसार सर पर॥

पहला : प्रताप हर सू छा रहा है, दिलों की बड़ाई बढ़ा रहा है।

दूसरा : हुजूर तशरीफ ला रही हैं, खड़े हों सब सेवक सर झुका-कर॥

[शमसा आती है। सखियां नाचती-गाती हैं]

गाना

रहें हुक्म पे तख्त ओ ताज, मुल्क-ओ-राज, माल-ओ-मताल[3]।
बुलंद नाम हो, दिन ब दिन इज्जत बढ़े जाह-ओ-जलाल[4]॥
जमीन पै आज है जिस तरह छाया आसमान यूंही जहां पे छाया रहे तेरा इकबाल[5]॥
रहें हुक्म पे.........

[नर्तकियां ऐसे ही नाचते और गाते हुए अन्दर जाती हैं]

१. ताकत २, आकाश ३. धन-दौलत ४. शान और ताकत ५. प्रताप

शमसा : जाओ, उस ज़िद्दी कुत्ते को मेरे सामने लाओ ! ज़िद्द किस से ? मुझसे ? जो तूफानी सागर की तरह गुस्से में दीवानी हो जाती है। जो दम-के-दम में आंधी की तरह दैवी उत्पात बन जाती है। अगर यह राह पर न आया तो फिर इसका दुनिया में जीने का कोई हक नहीं है।

[नवाब क़तलू तौफ़ीक को पांवों में बेड़ी जकड़े ला कर सामने पेश करता है]

शमसा : क्यों तौफ़ीक, किस हाल में है ?

तौफ़ीक : किस हाल में है? शेर लोहे के जाल में है !

शमसा : विद्रोही !—

क्यों तबाही ला रहा है अपने मान-ओ-शान पर।
छोड़ दे गुमराही आ जा अब भी सीधी राह पर॥

तौफ़ीक : दुनिया में सच्ची और सीधी राह केवल नेकी है, जो कब्र के दरवाजे से निकाल पर प्रलय के मैदान से होती हुई स्वर्ग के दरबार में पहुंचाती है। बाकी हरेक राह ठोकरें खिलाती है, काँटों में फंसाती है और आखिरकार नरक के अंधकूप में गिराती है।—

परवा नहीं जो आज ज़माना ख़िलाफ़ है।
रस्ता वही चलूंगा जो ठीक और साफ है॥
दुख और सुख तो तुच्छ हैं मेरी निगाह में।
मैं जान भी जो दूंगा तो नेकी की राह में॥

शमसा : मैं नहीं समझती कि नेकी क्या चीज़ है जो तुझको और तेरे जैसे चंद बेवकूफों को अज़ीज़ है !

तौफ़ीक : नेकी क्या चीज है ? नेकी एक पवित्र ज्योति है ! नेकी खुदा के हाथ का बनाया हुआ किला है जिसमें बैठकर पाक इन्सान शैतान की फौज का मुकाबला करता है।

शमसा : पागल हो गया है ?

तौफ़ीक : हां, हां, मैं पागल हो गया हूं ! मगर खुदा का शुक्र है कि उसका विरोधी, लालच का बंदा, शैतान का गुलाम, निर्दय

खूनी और नमकहराम नहीं हूँ।

शमसा : ओ नमकहराम ! हमारे सामने यह गुस्ताखी-भरा कलाम !

तौफ़ीक़ : मैं उन लोगों में से नहीं हूं जो किसी की पीठ-पीछे बुराई करते हैं। मैं बहादुर हूं, और बहादुर हमेशा सामने आकर वार करते हैं।

साफ़ दिल इस तरह कहते हैं बराबर साफ़ साफ़।
जिस तरह आईना कह देता है मुंह पर साफ़ साफ़ ॥

क़तलू : अगर तू ज़िद छोड़ दे तो मैं ईमान से कहता हूं···

तौफ़ीक़ : चुप, बदमाश ! इस पवित्र चीज़ का नाम न ले जिसका एक कण भी तेरे अपवित्र तनमें नहीं है। तुम दोनों शैतान से भी ज्यादा ईमान के दुश्मन हो।

शमसा : बेशक हैं। और इसलिए हैं कि बहादुर और मर्द को नामर्द और सुर्ख़ को पीला बनाने वाला यही है।

तौफ़ीक़ : जिस तरह खुदा ने शरीर के लिए प्राणों का दीपक जलाया है, उसी तरह प्राणों के लिए धर्म का दीपक बनाया है।

शमसा : मगर मैं हूं तो ज़रूर इस दीपक की रोशनी बुझाऊंगी।

तौफ़ीक़ : अरी, तू तो क्या अगर तमाम दुनिया के शैतान मिलकर कोशिश करें, फिर भी यह खुदाई चिराग हमेशा जगमगाता रहेगा और संसार में रहम और न्याय की रोशनी फैलाता रहेगा।

शमसा : तौफ़ीक़, तू जानता है कि मैं कैसी औरत हूँ ?

तौफ़ीक़ : बदकारी की पुतली ! तुझे कौन औरत कहता है ? औरत वह है जिसमें रहम हो, शरम हो, सचाई हो, बावफ़ाई हो, पारसाई हो; जिसने फरिश्तों का स्वभाव और हूर का सतीत्व पाया हो ! तू कभी औरत नहीं हो सकती। जिस तरह तूने निर्दोष शहज़ादे का दग़ा से हक़ छीना है, उसी तरह औरत के नाम पर भी जबरदस्ती कब्ज़ा कर लिया है !

शमसा : तौफ़ीक़, सुन—

साँस से आग बरसाऊं वह अजगर हूं मैं ।
जिद्द में तूफान तो गुस्से में समन्दर हूं मैं ।
पीस डालूंगी, मिटा दूंगी, फना[1] कर दूंगी ।
याद रखना तेरी तक़दीर का चक्कर हूं मैं ।।

तौफ़ीक़ : दिल का जोश ऐसे डराने से कहीं घटता नहीं ।
मोम से पंजा-ए-फौलाद कहीं दबता नहीं ।।
मत समझ दिल से मेरे जहरे दग़ा निकलेगा ।
चीर कर देख, शराफत से भरा निकलेगा ।।
रोयें-रोयें की जबान पर यह वचन जारी है ।
जान प्यारी नहीं, दुनिया में वफा प्यारी है ।।

क़तलू : मजहबी दीवाने ! क्यों जानबूझकर दुनिया की खुशियों से बेज़ार[2] है ? तेरी एक 'हां' पर शाही मेहरबानियों का बादल इज्जत व दौलत और दया की बारिश बरसाने के लिए तैयार है ।

तौफ़ीक़ : मुझे ऐसी कोई मेहरबानी नही चाहिये, ओ लोभ के गुलाम ! याद रख यह कलाम—
चार दिन है शानो-शौकत का खुमार[3] ।
मौत की तुर्शी[4] नशा देगी उतार ।।
जब उठायेंगे जनाजा मिल के यार ।
हाथ मल-मल के कहेगा बार-बार ।।
किस लिए आये थे हम क्या कर चले ।
जो यहां पाया यहीं सब धर चले ।।

शमसा : बस-बस यह उपदेश पागलों के लिए रख छोड़ ! सहील को हमारे हवाले कर । ताज का तावेदार हो, नहीं तो भयानक परिणाम पाने के लिए तैयार हो ।

तौफ़ीक़ : क्या मासूम शहज़ादे को तुम कसाइयों के पंजे में कटने के लिए दे दूं ? दया और न्याय के गले पर छुरी फेर दूं ? तख्त-ओ-ताज के लुटेरों का सम्मान करूं ? शैतान को स्वर्ग का

१. नष्ट, २. विमुख, ३, मस्ती, ४. कटुता

स्वामी व उत्तराधिकारी मान लूं ? नहीं, वफ़ादार तौफ़ीक़ से ऐसा कभी नहीं होगा।

क़तलू : मगर तुम्हें ज़रूर करना पड़ेगा।

तौफ़ीक़ : क्यों ?

शमसा : हमारा हुक्म !

तौफ़ीक़ : तेरा हुक्म कोई खुदा का हुक्म नहीं है।

शमसा : मैं शाही हुक्म देती हूं।

तौफ़ीक़ : मैं तेरी शाही मानता ही कब हूं ?—
तीर तलवार, नेज़ा-ओ-खंजर बरसें।
जहर, खून, आग, मुसीबत के समन्दर बरसें।।
बिजलियाँ आकाश से औ पहाड़ से पत्थर बरसें।
सारी दुनिया की बलायें मेरे सर पर बरसें।।
खत्म हो जाय, हरेक दुःख-मुसीबत मुझ पर।
मगर धर्म से डिग जाऊं तो लानत मुझ पर।।

शमसा : ग़ौर कर, फिर ग़ौर कर, वरना मौत तैयार है।
तेरा सर है और इस जल्लाद की तलवार है।।

तौफ़ीक़ : मुसीबत के डर, दुख के हौल से।
बहादुर बदलते नहीं कौल से।।
खुदा ले कि तू ले, यह जान एक है।
मगर बात एक और जबान एक है।।

शमसा : मुझ पे लानत है जो तुझ को अब मैं जिन्दा छोड़ दूं।
काट ला सर ताकि उसको ठोकरों से फोड़ दूं।।

[सब जाते हैं।]

[पटाक्षेप]

दृश्य तीसरा

[राजमहल का अग्र भाग। खैरसल्ला आता है]

खैरसल्ला : स्वगत) वाह री क़िस्मत ! बरसों कटी, काटी, भागी, कतराई, मगर आखिर यारों के अडंगे में आई। महारानी शमसा ने नवाब क़तलू खाँ को बुलाया और अपने भाई वर्जस को उसके हाथों क़त्ल कराया तो मा-बदौलत ने भी उनका हाथ बटाया, जिसके सिले में एडीकांग का ओहदा पाया ! इस काम में थोड़ी-सी बेईमानी तो ज़रूर करनी पड़ी मगर तक़दीर खुल गई ! अमाँ, कहां का दीन और ईमानदारी ! ये तो लोगों को डराने के लिए यारों ने ढकोसला बना रखा है वरना ईमानदारी में क्या रखा है ! (सैफ़ू को पुकारता है) अरे सैफ़ू ! अरे सैफ़ू !

सैफ़ू : (आकर) जनाब. आप किसे पूछते हैं ?

खैरसल्ला : अबे, अपने मालिक को नहीं पहचानता ?

सैफ़ू : जनाब, वह इस वक़्त घर में नहीं हैं।

खैरसल्ला : अबे, क्या इतनी जल्दी भूल गया ? ज़रा ग़ौर से देख !

सैफ़ू : कौन, मियाँ खैरू ?

खैरसल्ला : चुप, बे-अदब ! खैरू किसी मोची के लड़के का नाम होगा !

सैफ़ू : फिर तुम कौन हो ?

खैरसल्ला : मिर्ज़ा खैरसल्ला बेग !

सैफ़ू : अमां, काहे को झूठ बोलते हो ?

खैरसल्ला : चुप, देख, आज से हमें जनाब और साहब कहकर पुकारना।

सैफू : किसलिए ?

खैरसल्ला : क्योंकि अब हमारा दर्जा बढ़ गया है। (गाता है)

देखो मेरा रुतबा आली, मैंहूँ एडीकाँग, बड़ी आनबान शान!
कैसा बना हाँ, वह ढीला अमामा, फेंका पाजामा, डाटा बूट शूज वास्कूट
यह कलंग है, चढ़ी इसको भंग है, मेरी अक्ल दंग है !
कोठी-बंगले में रहूं, कलब होटल में फिरूं,
अमन-चैन मैं करूं, ठाठ बाट देखो······

सैफू : अमाँ, काहे को झूठ बोलते हो, तुम्हारी सूरत पर तो वही पाजीपन बरसता है !

खैरसल्ला : देख, पहले मैं एक मामूली जमादार था, अब तग़रलबेग का एडीकाँग कहलाता हूँ।

सैफू : वाह मियाँ, वाह !

खैरसल्ला : पहले हम चटाई पर बैठकर चटनी-रोटी खाते थे, अब कुर्सी-टेबल पर मटन-चाप उड़ाते हैं !

सैफू : वाह, भई वाह !

खैरसल्ला : पहले हम गुदड़ी बाज़ार से लाकर पुरानी जूती पहना करते थे, अब विलायती बूट डाटते हैं।

सैफू : भला यह विलायती बूट आपको क्या भाव पड़ता है ?

खैरसल्ला : अबे चुप, तू सुनता जा। पहले मैं ढीला कुरता-पाजामा पहना करता था और अब पतलून-कोट डाटता हूं और कमीज़ पर टाई लगाता हूँ।

सैफू : अरे, वाह मियाँ ! मैं तो समझता था कि तुम मोची के मोची ही रहोगे। मगर किस्मत के धनी हो ! सिपाही से एकदम एडीकाँग बन गये !

खैरसल्ला : अरे, यह तो हमारी बदकिस्मती है कि हम एडीकांग बनकर रह गये वरना हमारे वालिद तो अजीब शान के आदमी थे। तू ने उनको देखा होगा ?

सैफू : क्यों नहीं ! कई बार। वह हमारे मुहल्ले में पापड़ बेचने के

लिए आया करते थे।

खैरसल्ला : अरे, चुप रह ! वह कोई और उल्लू होगा।

सैफू : उल्लू हो या गधा, मगर सूरत तो आपके बाप की थी।

खैरसल्ला : खैर, इस बात को छोड़, यह बता कि मेरे घर में क्या पका है ?

सैफू : पका क्या है, वही बाजरे की रोटी और उबाली हुई दाल।

खैरसल्ला : अरे, दाल को भाड़ में डाल। क्या अमीरों के घर में ऐसे खाने पकते हैं ? देखो, आज से हमारे घर में ये खाने पका करें— कोरमा, कतंजन, बिरयानी, पलाओ, मटन चाप, पटाटो चाप और कटलस कबाब !

सैफू : अजी मियां, कल वह अल्लम-गल्लम खा लेना, आज तो शुक्र करके यह चटनी-रोटी खा लो।

खैरसल्ला : तुम जैसों ने चटनी-रोटी पर शुक्र करके अल्ला-ताला की आदत बिगाड़ दी है। उसने देखा, जब ये बेवकूफ़ चटनी-रोटी पर मलहार गाते हैं तो इन्हें पलाओ खिलाने की क्या जरूरत ?

सैफू : भला खाने ऐसे न खाओगे तो तुम्हें यह पुराना मकान कैसे पसंद आएगा ?

खैरसल्ला : अबे, पुराना मकान क्या, मैं तो पुरानी जोरू भी बदल दूंगा।

सैफू : देखो मियां,ऐसा न करना, वह बेचारी तो तुम्हें बेटे की तरह चाहती है।

खैरसल्ला : क्या तुम्हें मालूम नहीं कि पुरानी जूती हर साल बदल देते हैं। और मैंने तो नई जोरू के लिए अखबार में इश्तहार भी दे दिया है।

सैफू : भला मियां, मैं तुमको कोई पटाखा-सी जोरू दिला दूं तो तग़रल बेग से सिफारिश करके मुझे भी खानबहादुर का खिताब दिला देना।

खैरसल्ला : अबे,खानबहादुरी का खिताब लेकर क्या करेगा। वह आज-कल टके सेर बिकता है। जो बिल्ली-चूहे की आवाज़ से

घबराते हैं, वही आजकल खानबहादुर कहलाते हैं।

सैफ़ू : अच्छा, यह नहीं तो शेरजंग का खिताब दिला दो।

खैरसल्ला : हाँ, यह दिला दूँगा, क्योंकि कल तूने दो चूहे मारे थे।

सैफ़ू : अच्छा सुनो ! मेरे ख्याल में जितनी औरतें हैं उन सब की सूची पेश करता हूँ। फलां मुहल्ले में मिट्ठू घास वाला रहता है, उसकी एक लड़की है।

खैरसल्ला : अरे मुझे क्या कोई घसियारा समझा है जो घसियारे की लड़की से शादी कराता है !

सैफ़ू : तो फिर तुम जैसे मदारी को घसियारे-भटियारे के सिवा कौन लड़की देगा ?

खैरसल्ला : अबे देगा क्यों नहीं ? जात, गुण, शराफत पहले ज़माने में देखा करते थे, अब तो केवल पैसे को देखते हैं। जहाँ चार पैसे देखते हैं, बड़े-बड़े अपनी लड़की देने को तैयार हो जाते हैं।

सैफ़ू : अच्छा, तो फलां मुहल्ले में अब्दुल करीम कसाई का साला रहता है, उसकी सात बेटियां हैं।

खैरसल्ला : खूब! तब तो सबने मिलकर बाप का दीवाला निकाल दिया होगा।

सैफ़ू : उनमें चार तो अंधी हैं, एक कानी है, एक गंजी है, मगर सबसे छोटी जो करीमन है, वह आपके योग्य है, लेकिन ज़रा लंगड़ाती है।

खैरसल्ला : अबे, तो क्या तूने मुझे लंगड़ा-लूला समझा है जो लंगड़ी जोरू दिलाता है !

सैफ़ू : खैर तो फलां मोहल्ले में मिर्ज़ा फज्जू रहते हैं। उनकी एक बहन है, बड़ी नेक ज़ात है और मजा तो यह कि एक गुलाब के फूल जैसा बच्चा भी साथ है।

खैरसल्ला : अबे, तो मुझे सैंकड हैंड माल दिलाता है ? शेर भी कहीं दूसरों का झूठा खाता है ?

सैफ़ू : तो फिर आपको कैसी जोरू चाहिये ?

खैरसल्ला : देखो, नेक हो, शरीफ़ हो, हसीन हो, जवान हो, चतुर हो, सुशील हो और बड़ी बात यह कि वफादार हो।

सैफू : ऐसी तो आपको फलां मुहल्ले में एक सौ बरस की कुँआरी लड़की मिलेगी।

खैरसल्ला : अबे, मुझे जोरू चाहिए कि अम्माँ!

सैफू : यह भी नहीं, वह भी नहीं! तो फिर आपको जोरू मिल चुकी!

खैरसल्ला : अरे, मिलेगी क्यों नहीं? यह तो हमारी मेहरबानी है, जो हम जोरू तलाश कर रहे हैं, वरना इस महंगे ज़माने में शौहर मिलते ही कहाँ हैं?

[शादी का एजेंट आता है]

एजेंट : जनाब, तसलीम!

खैरसल्ला : आदाब!

एजेंट : जनाब, आपका नाम?

खैरसल्ला : मिर्जा खैरसल्ला बेग।

सैफू : अमां, काहे को झूठ बोलते हो!

खैरसल्ला : (सैफू से अलग) अरे, चुप रह! दूसरे के सामने क्यों इज्जत उतारता है? (एजेंट से) मगर आप कौन साहब हैं?

एजेंट : हम इण्डियन मैरेज कम्पनी लिमिटेड के एजेंट हैं, फलां जगह हमारा हैड आफिस है।

खैरसल्ला : मैं समझा नहीं कि आप क्या कहते हैं!

एजेंट : हमारा यह काम है कि दुनिया की आबादी बढ़ावें। पति को पत्नी और पत्नी को पति दिलावें।

खैरसल्ला : तो फिर आप दलाल हैं!

एजेंट : दलाल की ऐसी-तैसी! हम एक शरीफ़ आदमी हैं।

खैरसल्ला : शराफत तो आपके पेशे से टपकती है!

सैफू : तब तो यार, हमारा भी एक काम बना दो।

एजेंट : वह क्या?

सैफू : पुरानी जोरू और थोड़ा-सा रुपया लेकर एक नई जोरू हमको दिला दो।

एजेंट : पुरानी जोरू को संदूक में बंद रखो। हम तो बिल्कुल नये माल का सौदा करते हैं।

खैरसल्ला : भई वाह ! इस तरक्की के जमाने में क्या-क्या नये धन्धे निकले हैं !

एजेंट : आपने शादी के लिए अखबार में इश्तहार दिया है ?

खैरसल्ला : जी हाँ, मुझे एक जोरू की सख्त जरूरत है।

एजेंट : फरमाइए, आपको कैसी जोरू चाहिए ?

खैरसल्ला : हसीन हो, जवान हो, पढ़ी-लिखी हो, चंचल हो, बल्कि फैशनेबल हो।

एजेंट : अस्थायी कि स्थायी ?

खैरसल्ला : स्थायी।

एजेंट : एक्स्ट्रीमिस्ट हो या माडरेट ?

खैरसल्ला : नहीं, नहीं! एक्स्ट्रीमिस्ट नहीं चाहिये। वह कमबख्त नाराज होगी तो हमें बम के गोले से उड़ा देगी।

एजेंट : उम्र क्या हो ?

खैरसल्ला : सोलह बरस की।

एजेंट : अगर सोलह बरस की न मिले ?

सैफू : तो आठ-आठ बरस की दो ले आना।

खैरसल्ला : (सैफू से) निकल कमबख्त ! बीच में गड़बड़ करता है !

एजेंट : और क्या खूबियां हों ?

खैरसल्ला : सुनिये ! न ऐसी बदसूरत हो कि देखते ही जी मतलाये, न ऐसी खूबसूरत हो कि सारा जमाना दर्शनों को आये। न ऐसी दुबली हो कि एक-एक पसली नज़र आये, न इतनी मोटी हो कि फाटक में मुश्किल से आये। न इतनी छोटी हो कि बीवी की जगह लड़की नज़र आये और न इतनी लम्बी हो कि चुंबन के लिए सीढ़ी लगाई जाय, न इतनी कंजूस हो कि बरसों तक बच्चा न दे, न इतनी उदार हो कि बच्चों से घर भर दे।

न इतनी स्वस्थ कि दिन में छह-छह बार खाये, न इतनी बीमार कि डाक्टर का बिल चुकाते-चुकाते दीवाला निकल जाय। न इतनी निर्लज्ज कि पास बैठाते लज्जा आए, न इतनी लजीली कि मियाँ के पास आते भी शरमाये। गरज़ कि थोड़ी-थोड़ी सब खूबियाँ उसमें हों।

एजेंट : ठीक, ठीक ! मैं समझ गया। देखिए, इस शहर में अभी ऐसी एक औरत भी नहीं। हाँ, यहाँ एक डाक्टर पड़ोस में रहते हैं, उनकी एक लड़की है और वह आपके योग्य है।

खैरसल्ला : अजी कोई हो, हमें तो जोरू से मतलब है।

एजेंट : तो बस, आपको हफ्ता-भर में मिल जायगी।

खैरसल्ला : देखिए, जरा अच्छा माल हो, तो आपका कमीशन भी अच्छा रहेगा।

एजेंट : आप बेफिक्र रहें।

खैरसल्ला : मगर कहीं धोखा न खा जाना क्योंकि आजकल साठ-साठ बरस की बुढ़ियाँ मुँह पर चूना मल लेती हैं और हाथ में पंखा लेकर टूटी बाइसिकल की तरह कहीं-कहीं थिरकती फिरती हैं। देखो, नई टम-टम समझ कर पुराने छकड़े को न उठा लाना !

एजेन्ट : अजी वाह ! हम कहीं धोखा खाने वाले हैं !

खैरसल्ला : मगर ज़रा जल्दी ! और काम भी सस्ते में हो।

एजेन्ट : यह कहने की क्या जरूरत है ? अब मैं आपको ग़ैर थोड़ा ही समझता हूं। अच्छा बन्दगी ! (जाता है।)

खैरसल्ला : (स्वगत) भई, वाह ! अब तो दो-चार रोज़ में एक फैशनेबल जोरू के पति कहलायेंगे और खुदा ने चाहा तो दो-चार महीनों में दस-बीस बच्चों के बाप बन जायेंगे। (गाता है)

बड़ी बांकी दुल्हनिया, मोहनिया, सजीली, अलबेली मिले मोरि नार।
बन जाऊं, कहलाऊं, दस-बीस बच्चों का बाप ! बड़ी बांकी...

वो कहें मुझे फादर, मैं कहूं माई डियर ! बड़ी बांकी'''
बनूं, बनूं मैं जेंटलमैन !
हां रे बाग-ओ बंगले सजा डालूं !
मैडम को साथ-साथ, बगल में डाल हाथ,
वाकिंग को ले जाऊं रे !
देखो, यार-गार कहें लुक हियर ! लुक हियर ! बड़ी बांकी
(खैरसल्ला जाता है)

[पटाक्षेप]

दृश्य चौथा

[ताहिरा का महल। ताहिरा गाती हुई आती है]

ताहिरा : जल-थल में तू है, हर पल में तू है, दाता ! विधाता !
बखाने मैं परभूनाथ, जग मात !
जग अनूप-रूप देख कीर्ति तेरी गावें ! हैं जल थल में···
न कर हिसाब मेरे पाप-अपराध बेहद का।
इलाही ! तुझ को दयालू-रहीम कहते हैं।।
कहें कहीं न शैतान देखकर हमें मोहताज।
ये उनके बन्दे हैं जिनको करीम कहते हैं।।
कष्ट हरें तुमरे चरण गुनी आवें हैं जल थल में···

सहील : अम्मी जान ! कल मुझ से तग़रल मिर्ज़ा कहते थे कि बगैर तीर-तलवार के राज्य का काम नहीं चल सकता।

ताहिरा : हां, सच है। मगर तीर-तलवार से प्रजा का सिर बादशाह के सामने झुक सकता है, दिल नहीं झुकता। दिल तब झुकता है, जब बादशाह नरमी और न्याय से प्यार करता है।

सहील : अम्मी जान ! मैं बड़े रहम और इन्साफ़ से राज्य करूंगा।

ताहिरा : तो बेटा, तुम्हारे राज्य का कभी पतन न होगा।

[सेवक आता है]

सेवक : हुजूर आली, नवाब क़तलू खां के सुपुत्र आपके दर्शनों के लिए आए हैं, क्या हुक्म है ?

ताहिरा : उन्हें ससम्मान लाओ। (सहील से) जाओ बेटा, कल का

पाठ याद करो।—
दुनिया के बाग़ में तुम खुशहाल रहो।
मेरे बच्चे सदा निहाल रहो।।

[तग़रल आता है]

तग़रल : सेवक कोर्निश अदा करता है।

ताहिरा : स्वागत ! तग़रल स्वागत !

तग़रल : मैं अपने सौभाग्य पर गर्व करता हूँ।

ताहिरा : कोई शाही सन्देश लाये हो ? क्या जंग जीती गई, उसकी सूचना देने आये हो ?

तग़रल : बेशक ! हमने दुश्मनों पर शानदार फतह पाई और साथ ही एक बहुत बुरी हार खाई !

ताहिरा : वह क्या ?

तग़रल : आह ! क्या कहूँ ? आशा का खून हो गया, प्रजा का पिता हमारा बादशाह शहीद हो गया !

ताहिरा : ओ खुदा ! ओ खुदा ! यह मैं क्या सुनती हूँ ! तग़रल, यह तुम क्या कहते हो ?

तग़रल : वही जो आपसे कहना नहीं चाहता था।

ताहिरा : तो वाक़ई सहील यतीम हो गया ! क्या उसका भाग्य सो गया ?

तग़रल : बानो, किस्मत और मौत से कौन लड़ सकता है ?

ताहिरा : ओ किस्मत ! ओ बेरहम मौत ! मासूम सहील ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था जो तुम दोनों ने मिलकर उसे तबाह किया।

तग़रल : लेकिन आप तसल्ली रखें। जब तक मलिका जीवित हैं, उनको कोई तकलीफ़ नहीं पहुंच सकती। वह स्वयं शहज़ादे की रक्षा और भविष्य के सुख का काफी इन्तज़ाम करेंगी।

ताहिरा : कौन इन्तज़ाम करेगी ? उसकी संगदिल बुआ ? जो अर्से से तख्त-ओ-ताज के लिए भाई की मौत का इन्तज़ार कर रही थी ? जो कल तक मासूम सहील से नफ़रत कर रही थी ?

तग़रल : अगर मलिका की नीयत लोभ और अन्याय की होती तो

जिस समय उनके सिंहासनारूढ़ होने की घोषणा की गई थी, प्रजा ज़रूर विरोध करती।

ताहिरा : हैं ! तो वह ताज भी पहन चुकी ? तख्त पर भी बैठ गई ?

तग़रल : जी हां, मुल्क की मर्जी से, न कि अपनी खुदगर्जी से।

ताहिरा : अफसोस ! खुदा और न्याय के रहते एक मासूम के हक़ पर डाका डाला गया है।

तग़रल : नहीं, ऐसा नहीं हुआ।

ताहिरा : ज़रूर, ऐसा ही हुआ।

तग़रल : मान लो ऐसा ही हुआ हो तो हुकूमत और ताक़त के आगे कौन सर उठा सकता है ?

ताहिरा : तो क्या तुम यह समझते हो कि अब दुनिया शरीफों और बहादुरों से खाली है ?

तग़रल : मेरे ख्याल में तो आज ऐसा एक आदमी भी नहीं है।

ताहिरा : नहीं, ज़रूर है।

तग़रल : कौन ?

ताहिरा : मुल्क का रफ़ीक़ (साथी-मित्र)। मेरा शौहर तौफ़ीक़ !

तग़रल : आप यह यक़ीन से कहती हैं ?

ताहिरा : यक़ीन और साथ ही गर्व से कहती हूं।

तग़रल : लेकिन इन्सान का गरूर कभी क़ायम नहीं रहता। यह देखती हैं ? (एक अंगूठी दिखाता है।)

ताहिरा : यह अंगूठी तो मेरे शौहर की है, मगर इससे तुम्हारा मतलब ?

तग़रल : मतलब यह कि आपके शौहर भी मलिका के तरफ़दार बन गये हैं। उन्हीं के हुक्म से शमसा की ताजपोशी का हाल सुनाने और सहील को अपने साथ ले जाने के लिए आया हूं, और अपनी सचाई के सबूत में यह गवाह साथ लाया हूं।

ताहिरा : ओ खुदा ! अगर तौफ़ीक़ जैसे फरिश्ते पर दौलत और लालच का जादू चल गया तो मालूम हुआ कि ईमान इस कपटी दुनिया पर लानत करके निकल गया !

तग़रल : कहिये, अब तो आपको यक़ीन हुआ कि आपके शौहर…

ताहिरा : चुप रहो ! तुम मेरे शौहर की तौहीन करते हो ! मैं ऐसे अल्फ़ाज उनकी शान में सुनना नहीं चाहती।

तग़रल : तो क्या आप सहील को देना नहीं चाहतीं ?

ताहिरा : अरे, तुम और तुम्हारा बुज़दिल तौफ़ीक़, तुम्हारी मलिका और मुल्क के शैतान मिलकर भी ज़ोर लगायें तो सहील क्या, उसका एक नाखून भी यहां से न ले जा सकेंगे।

तग़रल : देखो, सोते नाग को न जगाओ ! शेर को न छेड़ो ! पहाड़ से न टकराओ। अगर सहील और शमसा के बीच में आओगी तो पुरानी दीवार की तरह गिरा दी जाओगी।

तीर से, तलवार से, सख्ती से, ज़ुल्म-ओ- ज़ोर से।
यूं नहीं तो उसको ले जाऊंगा मैं इस तौर से ।।

ताहिरा : अगर बेइज्जत होकर जाना नहीं चाहते, तो जल्दी यहां से चले जाओ।

तग़रल : हां ?

ताहिरा : जब तक यह सूरज ग़ैरत की आग से गरम है।
चेहरे पे आँख, आँख में दुनिया की शरम है ।।
काँधे पे सर है, सर में वफ़ा का जनून है।
तन में रगें, रगों में शराफत का खून है ।।
सीने में दिल है; दिल में खुदा का ख्याल है।
दुख दे मेरे लाल को, किसकी मजाल है ।।

तग़रल : बहुत अच्छा ! अभी आपको मालूम हो जायगा—
यह विद्रोह दिखायेगा अब रोजे-बद तुम्हें ।
देखूंगा कौन देता है आकर मदद तुम्हें ।।

[तौफ़ीक़ आता है]

तौफ़ीक़ : हैं ! दग़ाबाज़ के बच्चे !

तग़रल : कौन तौफ़ीक और आज़ार !

तौफ़ीक़ : नींद की हालत में मेरी अंगूठी उतार कर एक नेक-ख्याल

औरत को धोखा देना चाहता है !
मोंक दूं तलवार कब्जे से दिले-नापाक में ।
तोड़ दूं सर ठोकरों से, मुंह मिला दूं खाक में ॥

तग़रल : तौफ़ीक़, ज़बान रोक वरना पछतायेगा। एक बार शेर के पंजे से निकल गया तो क्या दोबारा काबू में न आयेगा ?

तौफ़ीक़ : जा, चला जा यहाँ से, जान सलामत लेकर चला जा, वरना इसका जवाब ज़बान के बदले ठोकरों से दिया जायगा ।

तग़रल : इस किले की ईंट से ईंट न बजा दूं, और जिस कैद से भाग निकला है, फिर ज़ंजीरों में जकड़ कर उसी कैद में न फंसा दूं, तो मुझे क़तलूखां का बेटा तग़रल न कहना । (तग़रल जाता है)

तौफ़ीक़ : (जाते हुए तग़रल से) चुप, बादल के गरजने से शेर नहीं डरते, तेरी गीदड़-भभकियों से हम जैसे दलेर नहीं मरते ।

ताहिरा : प्यारे शौहर, मुझे मुआफ़ करना, आज मेरे मुंह से तुम्हारे शरीफ़ नाम का अपमान हुआ है ।

तौफ़ीक़ : प्रिये, यह तो क्या, अगर इस दग़ाबाज़ की बातें सुनकर इससे भी ज्यादा कहती तो मैं बहुत खुश होता ।

ताहिरा : मगर आपने शमसा की कैद से रिहाई कैसे पाई ?

तौफ़ीक़ : मेरे दोस्त जनरल क़हरमान ने दिलाई ।

ताहिरा : लेकिन अब वह दिन बहुत करीब है जब शमसा की फौज हमारे किले के चारों तरफ़ कीटाणुओं की तरह फैली होगी । अब हमें किले और सहील की बग़ैर हिफाज़त करनी चाहिये ।

तौफ़ीक़ : घबराओ नहीं, जनरल क़हरमान ने हमें काफी मदद देने का वायदा किया है । हमने विद्रोह का झण्डा बुलंद कर दिया है । बस मैं पहुंचा कि युद्ध छिड़ा ! अब मैं तुमसे रुखसत चाहता हूं ।

ताहिरा : शूरता का जोश हो इक इक रग में, इक इक बाल में ।

देखना लग़ज़िश[१] न आये पाये-इस्तक़लाल[२] में।

तौफीक़ : फर्क आने दूंगा मैं हरगिज न अपनी आन में।
मार कर आऊंगा या मर जाऊंगा मैदान में।।

(गाता है)

कारज़ार[३] में, हज़ार मारूं दुश्मन बिजली बनके,
तेग़ चमके, आग बरसे, वज्र गरजे, जो दमे-कारज़ार।
युद्ध मैं करूं, इस कमाल से सफाया करूँ दुश्मन को काबू में
डाल, दम भर में करूँ निढाल!
कहीं यह सर न हो, कहीं यह तन न हो, कारज़ार में...

[गाते-गाते चला जाता है]

[पटाक्षेप]

१. सिहरन, डिगना २. संकल्प और दृढ़ता का पांव ३. कर्मंठ

दृश्य पांचवां

[खैरसल्ला का महल । मैडम और सैफू मिलकर गाते हैं]

मैडम : नये फैशन से पोजीशन से...

सैफू : श्रो यस !

मैडम : श्राई एम ए ब्यूटीफुल मैडम ! जिस पार्टी में जाती हूं
सब कहते हैं वैलकम । उड़ाती फिरती हूं टम टम !

सैफू : श्राहा हा हा हा !

मैडम : मुंह पर लगाया पाउडर, बालों में सेंट डाला ।
साइकिल जो घर से ली तो रास्ता संभाला ।।
थ्येटर में रात काटी, होटल में दिन गुजारा ।
पूछा अगर मियां ने दिन किस जगह गुजारा ।।
वोह डांट दी 'हू श्रार यू, काले चमड़े वाला ?'
नये फैशन से पोजीशन से......
(गाते-गाते दोनों जाते हैं)

[अब खैरसल्ला गाता आता है]

खैरसल्ला : किस्मत का हूं मैं श्राली, मेरी जोरू भी है ब्यूटीफुल !
श्रब बना हूं जेन्टलमैन श्राली, वेरी वेल मिस्टर खैरसल्ला !
हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे !
झटपट लाश्रो कुर्सी टेबल, ता खुश होवे जोरू फैशनेबल !
कहलाऊं तो फिर श्रानरेबल, वेरी वैल मिस्टर खैरसल्ला !
हिप हिप हुर्रे......

सज-संवर कर, डटकर बनकर अब चलूं बन-ठन कर, मैं फैशन से···

देखो यारो मेरी आन-बान आहा हा हा हा, हो, हो हो ! वाह भई, अब तो सिंगल से डबल हो गए ! लोग कहते हैं कि डरबी की लाटरी और जोरू किस्मत से मिलती है। मगर हमको घर बैठे फैशनेबल जोरू मिल गई ! मगर इतनी बात जरूर है कि वह पुरानी जोरू आठ रुपये में घर का खर्च चलाती थी और यह आठसौ उठाती है ! फिर भी खर्च कम बताती है ! अजी, इसकी क्या परवाह है, हमारे और इनके रुपये कुछ दो हैं ? आज हम कमाते हैं, वह उड़ाती है कल वह कमायेगी,हम उड़ायेंगे। अरे सैफू, सैफू, ओ सैफू !

(सैफू को पुकारता है)

[सैफू आता है]

सैफू : आलराइट साहब !

खैरसल्ला : यह लो, मालिक ने ठाठ बदला तो नौकर ने भी पुरानी केंचली उतार दी !

सैफू : फरमाइए क्या हुक्म है ?

खैरसल्ला : मेम साहबा कहां हैं ?

सैफू : अपने ड्रेसरूम में !

खैरसल्ला : क्या बाल बनाती हैं ?

सैफू : नहीं, कल एक बंदर मार्कीट से खरीद लाई हैं। उसे छुरी-कांटे से खाना खाना सिखाती हैं।

खैरसल्ला : बेवकूफ़ ! बंदर को छुरी-कांटे से खाना कैसे आयेगा ?

सैफू : क्यों नहीं आयेगा ? आखिर आप कैसे सीख गए ?

खैरसल्ला : चुप, बेअदब ! क्या बकता है ! जा मेम साहबा को बुला ला।

सैफू : अच्छा, तो अपने नाम का कार्ड दो।

खैरसल्ला : क्यों ?

सैफू : मेम साहब का हुक्म है।

खैरसल्ला : अबे ! मेम साहब के बच्चे ! जाता है कि नहीं ! (सैफू को पीटता है)

सैफू : ओ मेम साहबा, दौड़ो ! मार डाला, मार डाला !

मेम : (आकर) व्हट इज दी मैटर ? तुम गरीब आदमी पर क्यों हाथ उठाते हो ?

खैरसल्ला : छोड़ो, मैं इसकी जान लूंगा।

मेम : आखिर इससे क्या कसूर हुआ ?

सैफू : सिर्फ इतनी बात पर बिगड़ गये : मैंने कहा कि मेम साहब से मिलने के लिए अपना कार्ड दो।

मेम : यह ठीक कहता है।

खैरसल्ला : तो क्या अपनी बीवी से मिलना हो तो कार्ड दिखाओ, नहीं तो बैरंग वापस चले जाओ ?

मेम : यह तो कायदे की बात है !

खैरसल्ला : मेरे घर में ऐसा कायदा नहीं चलेगा।

मेम : क्यों नहीं चलेगा ?

खैरसल्ला : तुम मुझे धमकाती हो ? मैं तुम्हारा पति हूं।

मेम : मगर घर में आने के बाद जोरू बनकर रहना होगा।

खैरसल्ला : नहीं तो क्या होगा ?

मेम : मैं कभी ऐसे घर में न रहूंगी जहां कायदा और फैशन की इज्ज़त नहीं।

खैरसल्ला : भई वाह ! पति छूटे तो छूटे, मगर कायदा और फैशन न छूटे ! यह भी आजकल का फैशन है ! अच्छा जाने दो !

मेम : नहीं, तुमने मेरा इन्सल्ट किया है। इसलिए मुझसे माफी माँगो।

खैरसल्ला : हैं, हैं, हैं ! मर्द होकर औरत से माफी माँगू ?

सैफू : अजी, माँग लीजिए। यह भी आजकल का फैशन है !

खैरसल्ला : अच्छा भई, माफ कर दो।

मेम : इस व्यवहार से मालूम हुआ कि आप पक्के जेन्टलमेन हैं।

व्वाय ! जाओ, हमारे लिए एक कप चाय लाओ ।

सैफू : बहुत अच्छा !

खैरसल्ला : और मेरे लिए ?

सैफू : ठहरिए साहब ! मैं पहले अपने मालिक का काम करूंगा, फिर तुम्हारा ।

खैरसल्ला : मैं तुम्हारा मालिक नहीं हूँ ?

सैफू : नहीं, मैं तो मेम साहब का नौकर हूं ।

खैरसल्ला : सुनती हो ?

मेम : सच कहता है, क्योंकि तनख्वाह मेरे हाथ से पाता है ।

खैरसल्ला : मगर रुपये तो मेरे होते हैं ।

मेम : और हुक्म तो मेरा चलता है !

खैरसल्ला : तुम चाहोगी तो हमको भी निकाल दोगी !

मेम : यह क्या वाहियात बात करते हो ? व्वाय, जाओ ! आया को कहो, साहव के लिए चाय लाये ।

सैफू : बहुत अच्छा, मेम साहब !

मेम : डियर ! तुम ज़रा-सी वात पर क्यों नाराज़ हो जाते हो ? देखो, मैं तुम्हारा कितना कहना मानती हूँ ! ज़रा यह चश्मे का बिल तो चुका दो !

खैरसल्ला : ऐ बीवी ! तुम्हें चश्मा लगाने की क्या ज़रूरत है, तुम को तो अंधेरे में भी बिल्ली की तरह नज़र आता है ! क्या आँखें खराब करोगी ?

मेम : आँखें खराब हो जायें, तो बला से ! चश्मा लगाने से ज़रा तड़क-भड़क तो मालूम होती है !

खैरसल्ला : अच्छा ! तड़क-भड़क मालूम होती है ! चश्मा लगाओ ! क्योंकि यह भी आजकल का फैशन है !

सैफू : (आकर) अरे ग़ज़ब हुआ, ग़ज़ब हुआ !

मेम : क्या हुआ ?

सैफू : आपके बंदर ने लैम्प गिरा दिया, सरकार का नया कोट-पतलून सारा जल गया !

मेम : तो शोर क्यों मचाता है ? कहीं सरकार तो नहीं जल गए !

सैफू : अजी, सरकार के कपड़े जलने का तो मुझे भी अफ़सोस नहीं, मगर अफ़सोस तो यह है कि उसके साथ आपके रेशमी मौजे भी जल गए ।

मेम : हैं हैं ! मौज़े भी जल गए ! अरे कम्बख्त ! बचाये क्यों नहीं ? अरे, तेरा सत्यानास हो जाय ।

खैरसल्ला : लो ! सरकार का कोट-पतलून जल गया तो टस-से-मस न हुई और छह आने के मोज़े जल गए तो छुछुंदर की तरह थिरकने लगी ! यह भी आजकल का फैशन है ! **(मेम साहब जाती है)**

[कप्तान आता है]

खैरसल्ला : क्यों साहब, आपने क्यों तकलीफ उठाई ?

कप्तान : नवाब क़तलू खाँ का हुक्म है कि तुम लैफ्टेंट शहरयार को साथ लेकर घोड़े खरीदने जाओ ।

खैरसल्ला : बहुत अच्छा, मगर आजकल ज़रा···

कप्तान : हाँ, हाँ, जानता हूं कि तुमने एक खूबसूरत औरत से शादी की है, इसलिए घर से बाहर निकलना नहीं चाहते । मगर तुम इसकी ज़रा भी परवाह न करो । तुम्हारे जाने के बाद मैं स्वयं तुम्हारे घर की देखभाल करूंगा ।

खैरसल्ला : सरकार, मेरी औरत बहुत बदसूरत है ।

कप्तान : तू झूठा है, पाजी है, खबीस है !

[मेम अन्दर से आती है]

मेम : बड़े बेअदब नौकर हैं ! गोली मार देने लायक हैं !

कप्तान : खैरसल्ला, यह कौन है ?

खैरसल्ला : **(स्वगत)** अरे कहां से आ गई ? **(कप्तान से)** हुज़ूर, यह मेरी बेटी है।

कप्तान : क्या कहा ? कौन है ?

खैरसल्ला : मेरी बीवी है। (मेम से) अरे, तुम यहाँ क्यों आई ?

मेम : यह कौन साहब हैं ?

खैरसल्ला : तुम्हें इससे क्या ? कोई हैं।

मम : मैं चाहती हूँ कि हमें इनसे इन्ट्रोड्यूस कराओ।

खैरसल्ला : (मेम से) तो मुझे कोई मिलाऊ खाँ समझा है !

मेम : ओ ! तुम एटीकेट विल्कुल नहीं जानते।

खैरसल्ला : अपनी जोरू को दूसरे से मिलाना, इसका नाम एटीकेट है!

मेम : अच्छा, तो मैं खुद इनसे मिलती हूँ। (कप्तान से) जनाब, मैं आपका नाम पूछ सकती हूँ ?

खैरसल्ला : नाम क्या, आप तो गले भी मिल सकती हैं !

कप्तान : हाँ मंजूर है जो जनाब कहते हैं।

मेम : मैं आपसे मिलकर बहुत खुश हुई !

कप्तान : मैं आपको देखकर बहुत आनन्दित हुआ।

खैरसल्ला : (स्वगत) और मैं तुम दोनों से बहुत बेज़ार हुआ ! (प्रकट) बेगम…!

कप्तान : बेगम ?

खैरसल्ला : अरे जाओ, हजूर के लिए कुछ शरबत वगैरा लाओ।

कप्तान : नहीं, शरवत से मुझे इनकी बातें ज्यादा मीठी लगती हैं।

खैरसल्ला : बातें मीठी लगती हैं तो आप खूब बातें करें—यह भी आजकल का फ़ैशन है !

कप्तान : बेगम ! तुम जैसी हसीन और चंचल औरत मैंने कभी नहीं देखी।

खैरसल्ला : जनाब, सिर्फ घोड़े ही घोड़े खरीदने हैं या गधे भी ?

कप्तान : सिर्फ घोड़े ही घोड़े।

मेम : क्या मैं उम्मीद कर सकती हूँ, आपको फिर कभी…

खैरसल्ला : (कप्तान के पास आकर) जनाब, मैं यह कहता था…

कप्तान : चुप रहो ! बाज़ू में खड़े रहो।

खैरसल्ला : (हटकर स्वगत) मेरी ही बीवी और मैं बाज़ू में खड़ा हो जाऊं ! यह भी आजकल का फैशन है !

कप्तान : (मेम से) मैं ग्रापके दर्शन को जरूर···

खैरसल्ला : हुजूर, मैं···

मेम : दो ग्रादमियों के बीच में बार-बार बोलना—कहां का कायदा है ?

खैरसल्ला : (मेम से) इनको जाने दो फिर मैं तुझे कायदा बताता हूँ।

कप्तान : ग्रब चूंकि समय बहुत हो गया है, मैं ग्रौर ज्यादा नहीं ठहर सकता हूं।

खैरसल्ला : जनाब, यह सलाह ग्रापको मैं भी दे सकता हूँ।

कप्तान : सुनो खैरसल्ला, दो घंटे के बाद कील-कांटे से लैस होकर छावनी में दोनों जरूर हाज़िर रहना।

खैरसल्ला : बहुत ग्रच्छा !

कप्तान : बेगम, खुदा हाफ़िज़ !

मेम : मेहरबानी !

[कप्तान जाता है]

खरसल्ला : देखो जी, मैं यह कहता हूं···

मम : चुप रहो, एकदम चुप रहो ! ग्रगर तम्हें हमारी हरकतें पसंद नहीं तो तुम्हारा वह रास्ता, हमारा यह रास्ता !

खैरसल्ला : खूब टका-सा जवाब दिया !

मेम : तुम क्या जानो, ग्राज दो रोज़ से मैं किस चिंता में हूँ !

खैरसल्ला : किसमें हो ?

मेम : क्या तुम्हारी ग्राँखें फूट गई हैं ? देखते नहीं कि मेरे प्यारे कुत्ते को जुकाम हो गया है !

खैरसल्ला : ग्रजी, इस कुत्ते को गोली मारो।

मम : खबरदार ! जो मेरे कुत्ते का नाम लिया ! मैं तुम्हारा मुंह नोच लूंगी।

खैरसल्ला : लो भई ! कुत्ते के लिए मियां का मुँह नोचा जाता है ! यह भी ग्राजकल का फैशन है !

[डाक्टर आता है]

डाक्टर : गुडमार्रनिग मैडम !

खैरसल्ला : अरे ओ गुड मार्रनिग के बच्चे ! पहले मियाँ को सलाम करना है या बीवी को ?

डाक्टर : क्या तुम इनके पति हो ?

खैरसल्ला : नहीं तो क्या इनका बाप हूं !

डाक्टर : माफ कीजिए, मैं आपको नौकर समझा था !

खैरसल्ला : ऐसे नौकर तो तेरे बाप के घर होंगे।

मेम : डाक्टर साहब, यह ज़रा अनपढ़ आदमी हैं, इनके कहने का आप कुछ ख्याल न करें।

खैरसल्ला : अरे लिखे-पढ़े की ऐसी-तैसी ! मुझे बुत्ता बताती है !

मेम : डियर, क्यों खफ़ा होते हो ?

खैरसल्ला : क्या समझती नहीं...

मेम : तुम्हारी सूरत पर सबको गुमान होता है...

खैरसल्ला : कि मैं तुम्हारा बेटा हूँ ?

मेम : (डाक्टर से) आप कुछ ख्याल न करें। कभी-कभी इनसे ऐसी बेहूदगी हो जाती है।

खैरसल्ला : वाह ! क्या मियां की तारीफ़ हो रही है ! यह भी आजकल का फैशन है !

मेम : डाक्टर साहब, आप मेरी तरफ देखें।

खैरसल्ला : अरी, यह जब से आया है, आंखें फाड़-फाड़कर तेरी ही तरफ़ देख रहा है। मगर इस कब्रिस्तान के ठेकेदार को क्यों बुलाया है ?

मेम : तुमसे नहीं कहा था कि मेरा कुत्ता बीमार है ?

खैरसल्ला : अरे, कुत्ते के लिए डाक्टर बुलाया जाता है ? क्या घर में डाक्टर नहीं था।

मेम : क्या तुम डाक्टर भी हो ?

खैरसल्ला : मैं तो खानदानी डाक्टर हूं। मरीज की नब्ज़ देखकर उसके बाप-दादा तक का मर्ज़ बता देता हूं।

डाक्टर : अच्छा, मियां खानदानी डाक्टर, यह तो बताओ कि पुराने ज़माने में सबसे बड़ा हकीम कौन गुज़रा है ?

खैरसल्ला : पुराने ज़माने में सबसे बड़ा हकीम अब्दुल रहमान !

डाक्टर : अब्दुल रहमान या हकीम लुकमान ?

खैरसल्ला : देसी लोग हकीम लुकमान कहते हैं और अंग्रेजी पढ़े-लिखे उसे डाक्टर अब्दुलरहमान कहते हैं।

डाक्टर : मैं समझ गया, डाक्टर-वाक्टर कुछ नहीं ! मगर एक बात और पूछता हूँ।

खैरसल्ला : क्या ?

डाक्टर : भला बताओ, इन्सान का दिल कहां रहता है ?

खैरसल्ला : अरे वाह ! तुम इतना भी नहीं जानते ? डाक्टर हो या दो पांव के गधे ?

मेम : हैं ! गाली-गुफ़्तार कैसा ?

खैरसल्ला : वल्लाह ! बेवकूफ़ हो तो ऐसा ! सुनो मियां, बिल्ली का दिल छीछड़ों में, गरीब का दिल पैसे में, जैन्टलमैनों का दिल अंग्रेजी ठाठ में, स्वदेशियों का दिल बाइकाट में !

डाक्टर : मैं यह नहीं पूछता हूं। आदमी का दिल सीने में कहाँ रहता है ?

खैरसल्ला : लीवर के पास, कलेजे के पीछे।

डा० डिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय

डाक्टर : कहाँ ?

खैरसल्ला : ठीक दायीं पसली के नीचे।

डाक्टर : ग़लत ! आदमी का दिल सीने के बायीं तरफ होता है।

खैरसल्ला : वह पुराने ज़माने में रहता था। एक तरफ बहुत दिन रहते-रहते घबरा गया ! इसलिए बायीं तरफ़ से दायीं तरफ को आ गया।

डाक्टर : अच्छा मेम साहबा, अब मुझे आप कुत्ता दिखाइए।

मेम : चलिए डाक्टर साहब, मैं अपना प्यारा कुत्ता आपको दिखाती हूँ।

डा० डिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक

खैरसल्ला : मैं बीमार हूं, तो डाक्टर नहीं बुलाया जाता, और कुत्ते के

लिए घर में डाक्टर को बुलाया जाता है !

मेम : डियर, नाराज़ न हो। मुझे तुमसे अपना कुत्ता प्यारा है।

खैरसल्ला : यह भी आजकल का फैशन है ! खुदा जाने, इस कुत्ते वाली औरत से कैसे निबाह होगा ! (गाता है)

यह औरत है, यह आफत है, बद-खसलत है, बेइज्जत है।
इसकी सूरत ग़ारत है, मुझ को नफरत नफरत है !
मिले जोरू जिसको ऐसी ! वह बहार देखे कैसी !
लानत भेजो यारो, ऐसी जोरू की ऐसी-तैसी !
ले मोटर साइकिल चंचल तन कर, फैशनेबल बनकर,
सड़कों पर कर कर छल-बल, करती है क्या क्या धांधल !
मिले जोरू···
कभी झट पट गाड़ी और थेटर पर जा दौड़ी।
नहीं होती दिल में थोड़ी, बिलकुल अड़यल घोड़ी ।।
लानत भेजो यारो, ऐसी जोरू की ऐसी-तैसी !

(गाते-गाते अन्दर जाता है)

[पटाक्षेप]

दृश्य छठा

[किला टावर । नेपथ्य से लोगों को आवाजें आती हैं]

ताहिरा : (स्वगत) ओ खुदा, ओ खुदा ! ये भयानक आवाज़ें कैसी आ रही हैं? शायद युद्ध छिड़ गया ! अफसोस! देश की नारियो ! मातम करो, आज तुम्हारी सैंकड़ों बहनें वेवा और बच्चे यतीम हो जायेंगे ! बच्चो ! रोओ-चीखो ! लोगो ! मातमी काले कपड़े पहनो, आज तुम्हारे हजारों भाई तुमसे हमेशा के लिए जुदा हो जायेंगे—

जबां पे फरियाद, लव पे नाले, जिगर में हसरत के दाग होंगे।
जो घर थे कल तक कि जगमगाते, वह आज सब बेचिराग होंगे ।।

[तौफ़ीक आता है]

तौफ़ीक़ : प्यारी बीवी !

ताहिरा : कौन ? तौफ़ीक़ ! कलंकी ! दूर खड़े रहो !

तौफ़ीक़ : ताहिरा, तुम मुझे गुस्से से देख रही हो !

ताहिरा : हां, मैं तुम्हें गुस्से और नफ़रत से देख रही हूं !

तौफ़ीक़ : लेकिन कारण ?

ताहिरा : तुम कायर हो ! मर्द बनकर दुनिया को धोखा दे रहे हो ! क्या युद्ध जीता गया—यह खबर देने आये हो ?

तौफ़ीक़ : अफसोस ! सिवाय हार के अब हमारे नसीबों में और क्या रखा है ? तमाम फौज बेज़बान भेड़ों की तरह वफादारी का कुर्बानी पर कट गई !

ताहिरा : तुम कैसे ज़िन्दा रहे ?—जिसे सबसे पहले मरना था ! क्या रणभूमि से हार खाकर मेरी गोद में छुपने के लिए आए हो ?

तौफ़ीक़ : नहीं,मरने से पहले तेरी आखिरी वफ़ादारी आज़माने आया हूं !

ताहिरा : क्या मालिक अपनी दासी को आज़माता है ? पति अपनी पत्नी की परीक्षा लेना चाहता है ? तो लो, सर हाजिर है, गर्दन उड़ा दो ! आज्ञाकारिता आज़मा चुके, अब वफ़ादारी भी आज़मा लो !

तौफ़ीक़ : हां, तुझे कत्ल करूंगा, पर हाथ से नहीं, केवल एक बात से।

ताहिरा : मेरे मालिक ! मेरे सरताज ! मैं आपकी बात अभी तक नहीं समझी।

तौफ़ीक़ : अच्छा समझो और सुनो ! जिस बेटे को आठ बरस तक पाला और कलेजे से लगाया, उसकी कुर्बानी का दिन आया है !

ताहिरा : यानी ? यानी ?

तौफ़ीक़ : सहील को वफ़ादार हशाम के साथ कहीं भगा दो, कहीं छुपा दो, और उसके स्थान पर ज़ालिम तग़रल की तलवार पर अपने जिगर के टुकड़े को भेंट चढ़ा दो !

ताहिरा : तुम बाप होकर यह क्या कह रहे हो ? मैं मां होकर यह काम कैसे कर सकती हूँ ? अफ़सोस ! मेरा बच्चा ! मेरा रशीद !

तौफ़ीक़ : अगर बच्चे की मुहब्बत मालिक से बेवफ़ाई सिखाती है, सांसारिक सुख के लिए परलोक बिगाड़ती है, तो उसे छोड़ो, हरगिज़ नज़दीक न आने दो।

ताहिरा : यह सब सच है, मगर मेरे मालिक, बचा लो ! सहील के साथ मेरे बच्चे को भी बचा लो, चाहे उसके बदले मेरी जान ले लो !

तौफ़ीक़ : नहीं, यह नहीं हो सकता। जब तक ज़ालिम तग़रल को यह

यकीन न हो जाय कि शत्रु मर गया, तब तक सहील नहीं बच सकता। बस जल्दी करो और मानो।

ताहिरा : मैं मानती हूं, मगर ममता नहीं मानती!

तौफ़ीक़ : ऐसी ममता को फूंक दो! आग लगा दो!—

मेरे हर रोयें पे जिसके लाख-लाख एहसान हैं।
ऐसे सौ बेटे भी उसके लाल पर कुर्बान हैं॥

ताहिरा : खैर, तुम्हारी और खुदा की यही मर्जी है तो मैं जी कड़ा करके अपने जिगर के टुकड़े को हलाल करने को तैयार हूं।

तौफ़ीक़ : शाबाश! ऐ वफ़ादार औरत, तू धन्य है! ऐ दुनिया की औरतो! पति की आज्ञा कैसे माननी चाहिये, यह सीखो! उठ, ऐ नेक बीवी उठ! अब मैं रणभूमि में खुशी और सुख से मरूंगा, और क़यामत के दिन गर्व और इज्जत से सर उठाऊंगा!

ताहिरा : दासी ताबेदार है। प्राण चरणों पर न्योछावर हैं।

तौफ़ीक़ : धन्य हो! सलाम! यह आखिरी मुलाकात है। (जाता है)

ताहिरा : (स्वगत) हाय! मेरे सीने में दहाड़ें मार-मार कर कौन रो रहा है? ऐ वफादारी दूर हो, निकल जा! ऐ बेरहमी अलग हो जा। बेटे की मुहब्बत मुझे खुदा और पति से बेईमान बनाना चाहती है? वफादारी की राह से फिराना चाहती है?…नहीं, नहीं, मैं बेटे के खून से वफादारी की किताब पर हस्ताक्षर करूँगी। ऐ नारी हृदय, हिम्मत पकड़! ऐ बेरहमी, तू इसके दरवाजे पर पहरा दे ताकि डर-भय घुसने न पाये। ऐ रात, तू इतनी गहरी हो जा कि मेरे हाथ का काम मेरी आंखें देखने न पायें।

[हशाम घबराया हुआ आता है]

हशाम : हुजूर, बच्चों की रक्षा कीजिए! किले का पश्चिमी दरवाजा भी टूट गया।

ताहिरा : हशाम, हशाम, अब वफादारी दिखाओ! सहील को लेकर

इस चोर दरवाजे से निकल जाओ। मैं इसके स्थान पर अपने जिगर के टुकड़े को भेंट चढ़ा दूंगी।

हशाम : मगर यह दांव कैसे चलेगा? शत्रु इसे पहचान न लेगा?

ताहिरा : नहीं, सहील और रशीद की उम्र में थोड़ा-सा ही अन्तर है, इसलिए कोई इन दोनों में भेद नहीं कर सकता। बस अब देर न लगाओ, जल्दी से सहील को लेकर चले जाओ।

सहील : (सहसा आकर) अम्मी जान! मुझे कहां भेजती हो?

ताहिरा : वहां, जहां शत्रु की पहुंच न हो।

सहील : नहीं, मैं कहीं नहीं जाऊंगा। क्या तुम्हारे दिल से मेरी मुहब्बत जाती रही?

ताहिरा : हाय! मैं इसे कैसे बताऊं? क्या दिल चीर कर दिखाऊं! (सहील से) सहील, भाग, भाग! इस कसाईखाने से निकल जा! मौत खूनी कुत्ते की तरह तेरी बू सूंघती हुई आ रही है!

[हशाम सहील को गोद में उठाकर ले जाता है]

ताहिरा : सहील, खुदा-हाफिज़! (बेहोश होकर गिर जाती है)

[रशीद आता है]

रशीद : अम्मी जान! अम्मी जान! या अल्लाह! अम्मी जान को क्या हो गया! अम्मी! प्यारी अम्मी!

ताहिरा : (सचेत होकर) कौन? रशीद! मेरा लाल! मेरा बेटा! मगर नहीं... कमबख्त, दूर हो! तू मेरा बेटा नहीं है!

रशीद : अम्मी, तुम क्या कह रही हो? मैं तुम्हारा बेटा हूं!

ताहिरा : हां, हां, तू मेरा बेटा है। मेरा रशीद है। आ, आ, आ मेरी गोद में आ! तू मेरे घर का उजाला है। आ मेरे बच्चे! मैंने तुझे बड़ी मेहनत से पाला है।...मगर बच्चा! किसका बच्चा! कैसा बच्चा? बच्चा शैतान बनकर मेरे ईमान को ठगने आया है? तुझे किसने बुलाया है?...मेरा कोई बच्चा नहीं। मैं किसी की माँ नहीं बनी! मैं माँ होती तो

क्या तुझे अपनी आंखों के सामने कटवाती !

रशीद : अम्मी, अम्मी ! तुम तो दीवानी हो गई !

ताहिरा : हाँ, हाँ मैं दीवानी हो गई हूं।

रशीद : यह तुम क्या कह रही हो ?

ताहिरा : अफसोस ! ऐ दुनिया के लोगो ! यह किस मज़हब का दस्तूर है ? किस धर्म का नियम है—दूसरे के बच्चे के लिए अपने बच्चे का खून बहाना ? रशीद, इधर आ।

[अन्दर से ज़हर की शीशी लाकर रशीद को सुंघाती है]

रशीद : यह क्या है ?

ताहिरा : बेहोशी की दवा !

रशीद : क्यों ?

ताहिरा : ताकि तुझे मरते समय कष्ट न हो !

रशीद : नहीं, ऐसा न कहो।

ताहिरा : अरे कमबख्त, तुझे सूंघना होगा, तुझे मरना होगा !

रशीद : आह ! रहम करो, रहम ! (बेहोश हो जाता है)

ताहिरा : सो गया ! बेहोश हो गया ! जा, जा, शांति की दुनिया में वहाँ जाकर हूरों से दिल बहला। वहां तेरे पूर्वजों की पवित्र आत्माएं हैं, तू उनसे मेरी मुसीबत बताना।

रशीद : (बेहोशी के आलम में) ऐ मेहरबान माँ, मेरी तरफ़ नफ़रत से नज़र न डाल ! अगर मेरी मजबूरी जानती हो, तो बहुत नहीं, केवल दो आँसू ही रहम के बहाओ !

ताहिरा : (स्वगत) हाय ! यह मैंने क्या किया ? बेटा ! बेटा ! रशीद! क्या इतनी जल्दी अपनी माँ से रूठ गए ? हमेशा के लिए सो गए ! बोलो, बोलो ! केवल एक बार बोलो !

उठो, आओ, मेरे प्यारे, ज़रा लग जाओ सीने से।
यूँ माँ से न रूठो, गर हो गए बेज़ार जीने से।।

[पटाखा फटता है और धमाके के साथ ही दीवार में एक दरवाज़ा-सा हो जाता है]

या खुदा ! यह भयानक धमाका ! एकाएक दीवार में

दरवाज़ा कैसा हो गया !

[तग़रल फौज के साथ आता है]

तग़रल : फतह, फ़तह, कामयाबी ! यही है चाह का पुंज, सफलता का खज़ाना !

ताहिरा : धरती के बोझ ! तू कौन है ?

तग़रल : कौन हूं ? तग़रल ! बहादुर सिपाही ! विजयी, जगत की इज्ज़त !

ताहिरा : नहीं, जहान का अपमान ! नेकी और ईमान का दुश्मन !

तग़रल : अगर सहील को न दिया तो उससे ज़्यादा मैं तेरा दुश्मन बन जाऊंगा। तमाम दुनिया को उलट दूंगा।

ताहिरा : अरे, तू क्या, अगर तमाम दुनिया के शैतान मिलकर आयें तो भी सहील तो क्या, उसका एक नाखून भी यहाँ से न ले जाने पायें !

तग़रल : बदज़ात ! यह बात ! सफदर, इधर आओ, इसे बाँधकर कोड़े लगाओ।

ताहिरा : अरे, कोड़े क्या, तू मौत के शिकंजे में खिचवा दे, सर तन से उड़ा दे !—

जला दे, या मिटा दे, सर कटा दे।
नहीं मुमकिन, ज़बाँ उसका पता दे ।।

तग़रल : मौत मुझ से ज्यादा बेरहम नहीं। सफ़दर, बढ़ो ! क्या तू मेरा हुक्म नहीं सुनता ?

सफ़दर : हुज़ूर, मुझे शराफ़त आपका हुक्म सुनने से मना करती है !

तग़रल : बोदे, नामर्द ! बुज़दिली दिखाता है !

सफदर : माफ कीजिए, बुज़दिल वह है जो मर्द होकर एक औरत पर हाथ उठाता है।

तग़रल : ज़लील, दग़ाबाज़ ! नमकहराम !

सफदर : ठहरिये, मैं नमकहराम नहीं हूं। मैंने आज तक हमेशा आपके पसीने पर खून बहाया है। लेकिन मजबूर हूँ कि खुदा ने यह हाथ औरत के लिए नहीं, बल्कि मर्द के लिए बनाया है।

तग़रल : तो क्या तू मेरा हुक्म बजा न लायेगा ?

सफदर : जो शरीफ़ और बहादुर सिपाही है, वह मर जाएगा, मगर मरती हुई औरत पर कभी हाथ न उठायेगा।

ताहिरा : या खुदा ! क्या इन कसाइयों के झुण्ड में भी कोई नेकी का फरिश्ता मौजूद है ? ऐ कमबख्त, देख, इसे कहते हैं शराफ़त और शूरवीरता।

तग़रल : तू झूठी है ! अगर नौकर वफ़ादार हो तो कभी ऐसी अवज्ञा नहीं कर सकता !

सफदर : साहब, अगर मालिक शरीफ हो तो कभी ऐसा ज़लील हुक्म नहीं दे सकता !

तग़रल : चुप, बदज़ात ! ले जाओ, मार दो तलवार, उड़ा दो सर !

सफ़दर : हाँ, मुझे ले चलो ! यह संसार असार है। हैज़ा, प्लेग, खाँसी, बुखार में सिसक-सिसक कर मरने से वफादारी और नेकी की राह में मरना खुदा की मेहरबानी है।

ताहिरा : (तग़रल से) अरे ज़ालिम ! इस आइने को न तोड़ जो तुझे तेरी असली सूरत दिखाता है।

सफदर : बानो, आप मेरे लिए दुखी न हों क्योंकि बुरे पेड़ से सदा बुरा फल और बुरे मालिक की नौकरी से हमेशा बुरा नतीजा मिलता है।

तग़रल : देख, इस तरह मिलता है। **(सफदर को पिस्तौल से मार देता है)**

सफदर : आह ! ओ खुदा ! **(मर जाता है)**

[तौफ़ीक़ ज़ख़्मी हालत में हथकड़ी पहने आता है]

तग़रल : कौन ? मेरा शिकार !

ताहिरा : मेरा गरीब पति !

तौफ़ीक : मुसीबत के तूफान, तकलीफ़ों की आंधियां, आफतों के रेले, केवल जीते-जी के हैं झमेले ! ज़मीन पर आसमान चक्की के पाट की तरह जारी है। बचपन और जवानी को पीस चुका,

अब बुढ़ापे की बारी है—

बीच दुनिया है यह परलोक की तलबगारी में।

आखिर साँस भी निकले तो वफ़ादारी में।।

तग़रल : ज़लील ! बाग़ी ! गद्दारी की प्रतिमा ! यह दुखी हालत, फिर भी न गई वफ़ादारी !

तौफ़ीक : वफादारी सच्चा धर्म है, पाक ईमान है ! वफ़ादारी पर बाल-बच्चे-बीवी सब कुछ कुर्बान है।

तग़रल : बूढ़े खूसट ! ज़बान बंद कर ! जिन्दगी और सहील दोनों में से जो प्यारी हो, अपने लिए पसंद कर !

तौफ़ीक : खूनी कुत्ते ! हम प्राण देंगे, पर प्यारे सहील को कभी न देंगे।

तग़रल : क्या तू मौत से नहीं डरता ?

तौफ़ीक : सिपाही मौत से रोज़ खेला करते हैं।

तग़रल : तो ले मौत ! मौत से खेल ! **(पिस्तौल से तौफ़ीक को मार देता है)**

तौफ़ीक : **(मरते हुए)** ओ खुदा ! हक अदा !

ताहिरा : अरे कमबख्त, ज़ालिम ! यह तूने क्या किया ! ओ खुदा, तू अपनी खुदाई को छोड़कर कहाँ चला गया ?

ग़फ़्लत की नींद में क्या अब तू सो रहा है।

क्या देखता नहीं है, क्या जुल्म हो रहा है।।

तग़रल : चुप, बदकार ! अब खुदा को नहीं, मौत को पुकार ! अगर सहीलको न दिया तो तुझे भी तेरे खून में नहलाऊंगा, तमाम दुनिया को उलटाऊंगा। सारे घर में आग लगाऊंगा। जहाँ से मिलेगा, सहील को ढूंढ़ लाऊंगा और उसके खून से अपनी तलवार की प्यास बुझाऊंगा।

ताहिरा : या खुदा—

ताज सर से गिर पड़ा, अब गोद भी खाली करूं।

अपने हाथों से मैं अपने घर ही बदहाली करूं।।

तग़रल : बोल, वह मौत का ग्रास, मेरे खंजर का शिकार, मेरे तीर

का संधान, मेरे नेज़े का निशान कहाँ है ?

ताहिरा : जा खूनी कुत्ते ! वह तेरी खुराक पड़ी है। खा ले, मार डाल ! सर तन से उतार डाल ! ऐ सच्चे परमात्मा ! क्या तू सो गया ? क्या तू सो गया ? क्या तेरा न्याय खत्म हो गया !—

क्रोध की आग से अपनी, तन मन जला दे इसका।
क़हर-ओ-ग़ज़ब से अपने, सब ज़ोर ढा दे इसका॥

[तग़रल रशीद को उठाकर लाता है और उसे खंजर से मार डालता है]

तग़रल : यही है ! मेरे शौर्य-वृक्ष का फल यही है।

ताहिरा : ओ खुदा ! ओ खुदा ! यह खूनी दृश्य किन आँखों से देखूं ! दुनिया की सारी मुसीबतें हमारे लिए ही हैं—

यहीं होती है, यहीं घटती है जो हर बला है।
मेरा घर है यह कि ज़ालिम करबला है॥

(बेहोश होकर गिर जाती है)

[पटाक्षेप]

दूसरा अंक

पहला दृश्य

[घना जंगल]

[कई सिपाहियों का मिलकर गाना]

कब तक भटकेंगे ऐ यारो, मैदान, नदी-ओ-नाले !
छाने झरने, झाड़ी झील, काटे चक्कर सौ-सौ मील !
लौटो घर को, हम किस बला के पड़ गये पाले !
तन पर तो जरी का झूल, मुंह पर जमी है नौ मन धूल !
मिल गई भाई अपनी भूल ! पड़ गये पाँव में अब छाले !
कब तक भटकेंगे···

पहला : मिल जा, भाई सहील, मिल जा ! तू ने हमको हैरान कर दिया !—

दर-बदर फिरते हैं हम पैरो में छाले पड़ गए !
धूप में जल-जल के सबके चेहरे काले पड़ गए !!

दूसरा :

हाँ, हाँ बताओ सोचकर, किस ओर हम बढ़ें।
बाँधें किधर की सीध, किधर को कदम बढ़ें ।।

पहला : यह रास्ता तो बड़ा कठिन है।

दूसरा : अब इधर बढ़ें !

पहला : तो इस रास्ते में एक गुफा है ।

दूसरा : और यूं झुकें।
पहला : तो दूर तक पहाड़ हैं।
दूसरा : और इस तरफ ?
पहला : तो जान लो, बेड़ा पार है !
तीसरा : जब सब तरफ़ खतरा है, तो फिर हम किधर चलें ?
चौथा : मेरी तो यह सलाह है कि बस अब घर चलें।
पहला :

लो यह तो लौट चलने को तैयार हो गया !
क्या जिन्दगी से अपनी बेज़ार हो गया ?
शमसा की सख्तियों की तुम्हें क्या खबर नहीं ?
पीछे हटे क़दम तो समझ लो कि सर नहीं।

चौथा : अरे भाई ! सहील को न पायें तो कहाँ जायें ! मुफ्त में ही इस जंगल में किसी भेड़िये या शेर का शिकार हो जायें !
पहला : तू तो डरपोक मालूम होता है।
चौथा : और तुम क्या रुस्तम के सगे हो ?
पहला : मैं बेशक खानदानी बहादुर हूं।
चौथा : शायद फिरदौसी ने अपने 'शाहनामे' में तुम्हारे ही बाप-दादा का ज़िक्र किया है।
तीसरा : अरे, तुम सहील को ढूंढने आये हो, या गप्पें हांकने !
दूसरा : अब चलो, ज़ोर लगाओ।
सब : कब तक भटकेंगे यार ? (सब जाते हैं)

[पटाक्षेप]

दूसरा दृश्य

[बाग]

(सखियाँ गाती हैं)

समीर बहार आई, होने निसार आई।
करती हैं झील शोर, प्यारी निगार आई।
छाई हर फूल पे है लाली, बुलबुल झूले डाली-डाली।
फूलों की झलक से जिया प्रसन्न, करो हिलमिल संग।
फूलों की पहने साड़ी, चलत पवन हर गुलपे।
तुमपे वारी ! सखियां सारी !
जियरा हरवा, गरे में डारें, सुन्दर परवा गुलशन तुमपे
वारें॥

चौथी : वाह ! वाह !

तीसरी : सुभान अल्ला !

दूसरी : माशाअल्ला—

जामे-बहार पीकर पेड़ ये झूमते हैं।
इक-दूसरे को मिलकर मस्ती से चूमते हैं॥
उदारता ये अपनी चमन में दिखा रहे हैं।
प्रातः पवन के झोंके खुशबू लुटा रहे हैं॥

पहली : झूम रही है पत्ती-पत्ती, इस गुलशन की डाली में।
कलियां खिलकर फूल रही हैं, हर जानिब हरियाली में॥
कोयल ढोल बजाती है, और बुलबुल तान लगाती है।
दिल को मोद ताक धनाधन क्या क्या नाच नचाती है॥

तसनीम : जिस तरफ़ देखो चमन में मेरे बहार आई है।
दृश्य-मग्न है दिल, आंखें तमाशायी हैं॥
मोती बिखरे हैं, ये क़तरे नहीं हैं शबनम के।
आतिशे-गुल का धुआँ है, कि घटा छाई है?

तीसरी : गुलज़ार-ओ सरो-क़द, गुँचा-दहन तुम भी तो हो।
सर से लेकर पांव तक प्यारी, चमन तुम भी तो हो॥

चौथी : प्यारी, बाग के साथ कुछ अपनी भी तो तारीफ़ कीजिए।

तसनीम : मुझ में क्या देखा है, जो प्यारी, चमन कहती हो तुम।
छेड़खानी को मेरी ऐसे वचन कहती हो तुम!

दूसरी : अजी सरकार, यह चमन भी वह बिन शूल का फूल है, जिस पर बुलबुल के प्राण न्योछावर हैं।

पहली : हां, हां! इस गुल को किसी बुलबुल का इन्तज़ार है। जहां फूल होता है, वहां बुलबुल आता है।

चौथी : जहां चूहा होता है, वहाँ बिल्ली कूदती हुई जाती है।

दूसरी : मगर कोई बुलबुल आये तो उसे क्रोध से न डराना।

चौथी : बल्कि चुमकार के पास बिठाना।

तीसरी : फिर उसे शादी के पिंजरे में फंसाना।

पहली : वो फंस जाय तो हर रोज नखरों की छुरी चलाना।

तसनीम : देखो भई, अब हम सब्र खो देंगे। ज्यादा सताओगी तो, खुदा की कसम, हम रो देंगे।

दूसरी : प्यारी, तुम्हें अपनी क़द्र नहीं—
परी हो, मुश्तरी हो, हूर हो, महवे-तमाशा हो।
उठाकर आईना देखो, तो हो मालूम, तुम क्या हो॥

तसनीम : निगोड़ियो, क्या तुम सब ने मिलकर मुझे छेड़ने की कसम खा ली है!

पहली : प्यारी, शादी का जिक्र करना क्या कोई गाली है?

(सखियों का गाना)

अलबेला छबीला ऐसा ला देंगे जो हो रंगीला!
नई आन का, नई बान का, दिल ओ जान का, अलबेला छबीला!

अरी मोटर चलाने वाली, सैर करादे, ऐसी शान का,
अलबेला छबीला।...

तसनीम : बड़ी मोटर चलाने वाली ! अरी, चल, चल, चल !
बड़ी बातें बनाने वाली ! अरी चल चल चल !

सखियां : अजी वाह ! वाह ! वाह !

तसनीम : नये-नये फैशन तो साजन !

सखियाँ : बड़ी फैशन दिखाने वाली ! अरी चल चल चल !
साइकल पर बिठाके सैर करादे, वादी शान का !
अलबेला छबीला।...

[सब जाती हैं। शहरयार और फैजू आते हैं।]

फैजू : जी बंदापरवर ! घर से घोड़े खरीदने निकले और यहां धंस पड़े ! यह बाग किसी का ज़नानखाना है। यहां मर्दों का आना मना है। अगर बेदुम के चूहों को पुलिस का बागड़-बिल्ला देख पायेगा तो सीधा बड़े घर पहुंचायेगा।

शहरयार : अबे, तेरी तबीयत तो मुर्गी की तरह भय के अण्डे दिया करती है ! राह के थके-माँदे हैं, जरा सो जायेंगे, किसी का बाग़ अपने घर न उठा ले जायेंगे। व्यर्थ ही सर क्यों फिराता है।

फैजू : अगर मेरी बातों से आपका सर फिरता है, तो मुर्गा अपनी कुकड़ूं कूं को बंद करता है।

[सखियां अंदर से 'भागो, भागो ! शेर आया' का शोर करती हैं। धमाका होता है।]

शहरयार : (स्वगत) मूज़ी ठण्डा हो गया ! हाय, गुलाब-सा चेहरा भय से पीला हो गया !

[तसनीम बेहोश होकर शहरयार की गोद में गिरती है।]

फैजू : हत्तेरे की ! यह क्या ?

शहरयार : क्यों बे, तू यहां क्यों आया ?

फैजू : आपका नाटक देखने !

शहरयार : चल निकल यहां से, इस वक्त यहां एकांत की ज़रूरत है !

फैंजू : सच है बाबा ! कबाब में हड्डी की क्या ज़रूरत है !

शहरयार : ऐ चित्रकार की तूलिका, कवि की कल्पना, कुदरत की कारीगरी !

फैंजू : जनाब, आपके हाथ थक गए होंगे, लाइये मैं ले लूं।

शहरयार : कमबख्त ! तू फिर आता है ! यहां से फौरन चला जा !

फैंजू : जी, ठीक है हजूर !

शहरयार : **(तसनीम से)** जाग, जाग ! ऐ विश्व-सुन्दरी ! जाग और कुदरत का तमाशा देख !

तसनीम : **(होश में आकर)** अरी नरगिस, सूसन, छुईमुई ! सब किधर हो !

शहरयार : घबराइए नहीं। वह सब यहीं हैं, शेर के डर से इधर-उधर हो गई हैं।

तसनीम : साहब, क्या शेर से मेरी जान आपने बचाई ?

शहरयार : इन्सान की क्या मजाल है ! बचाने वाला वह सर्वशक्तिमान है।

तसनीम : मुझे बचाने में आपको कोई जख्म तो नहीं आया !

शहरयार : यूं तो कोई जख्म नहीं आया, हां दिल के अन्दर जो चरका लगा है, उसकी खबर नहीं।

फैंजू : **(स्वगत)** इश्क़ की इन्दर सभा का पहला अंक शुरू हो गया !

तसनीम : आप कौन साहब हैं ?

शहरयार : बानो, मैं एक परदेसी सिपाही हूं।

तसनीम : यहां किस गरज़ के लिए तशरीफ़ लाये हैं ?

फैंजू : **(स्वगत)** एक बीबी के लिए आए हैं।

तसनीम : मैं समझती हूं कि आप श···श···

फैंजू : हां, हां, शादी के तलबगार हैं, माशाअल्ला, आप बड़ी समझदार हैं !

[सखियां आती हैं।]

पहली : (तसनीम को देखकर आपस में) यह तो यहां कुछ और ही हो रहा है !

दूसरी : यह सेर के भाई सवा सेर कहाँ से आन कूदे ?

तीसरी : (तसनीम से) प्यारी, यह कौन साहब हैं ?

तसनीम : कौन ? कहां ?

दूसरी : वह जो बहुत खुश नजर आते हैं—हमे या तुम्हें, खुदा जाने किसे देखकर मुस्कराते हैं !

तसनीम : कहां है ? किधर है ? यहां तो कोई भी नहीं है !

पहली : यूं देखो, यूं !

तसनीम : यह !

चौथी : हां, बोलो न !

तसनीम : यह वह हैं जिन्होंने मेरी जान बचाई !

तीसरी : फिर तो आपको इनका शुक्रिया अदा करना चाहिये।

फैंजू : वेचारी शुक्रिया ही तो अदा कर रही हैं !

दूसरी : तो क्या हमारी बातों को कृतघ्न समझते हैं ! अजी, शुक्रिया अदा करना होगा ! और सिले में कोई बड़ा भारी इनाम भी देना होगा !

पहली : हां हां, प्यारी ! क्या इनाम दिया ? हमें भी बताओ।

चौथी : अजी वाह ! बस समझ जाओ !

तसनीम : जाओ जाओ ! मुझे न सताओ ! मुफ़्त की फब्तियां न उड़ाओ।

तीसरी : अच्छा, अच्छा, न शरमाओ ! अब बहुत देर हुई, चलो घर को आओ।

तसनीम हां, हां चलो ! (शहरयार से) वंदगी ! (जाती है)

शहरयार : तसनीम !—

सूंघने भी न पाया था कि वह गुल उड़ गया।
रह गया उल्लू का पट्ठा और बुलबुल उड़ गया !

फैंजू : हत्तेरे की ! यह तो फिर आ गई !

तसनीम : (आकर) जनाब, मुझे माफ कीजिए ! मैं जल्दी में आपका शुक्रिया अदा करना भूल गई !

शहरयार : लेकिन खुदा के लिए कहीं मुझे दिल से न भूल जाना।

तसनीम : आपकी कृपा क्या भूल जाने योग्य है !

पहली सखी : (आकर) अजी वाह ! तुम फिर यहीं हो ! चलो, आओ, जल्दी कदम बढ़ाओ। (जाती हैं)

शहरयार : **मेरी उम्मीदों की दुनिया में अंधेरा हो गया।**

फैज़ू : **भाई, अब तुम घर चलो, याँ तो सवेरा हो गया।।**

शहरयार : चल, हट इधर से, बक बक न कर !

तसनीम : (पुनः आकर) कहिये ? आपने बुलाया ?

फैज़ू : (स्वगत) यह औरत कोई गले-पड़ू मालूम होती है।

शहरयार : (तसनीम से) हां, मैं यह पूछता हूँ कि चाँद रात को और सूरज सुबह को नजर आयेगा। मगर यह नूरानी चेहरा फिर कब दिखाई देगा ?

पहली : (पुन: आकर) ऐ वाह ! तुम फिर यहां आ गई !

चौथी : अजी, मियां, तुम्हारा घर-दर है कि नहीं ?

फैज़ू : (स्वगत) घर ! अब तो इनकी क़ब्र यहीं बनेगी !

तीसरी : क्या यहां चुम्बुक पत्थर है जो बार-बार तुझे खींच लाता है !

दूसरी : बस, बस, ज्यादा न मचलो, अब घर चलो !

तसनीम : अरे, हाय !

पहली : क्या हुआ ?

तसनीम : पांव में कांटा चुभ गया !

फैज़ू : पांव में कांटा चुभ गया या दिल में बसौला उतर गया !

शहरयार : इजाज़त हो तो मैं यह कांटा निकाल दूं।

पहली : बेशक ! यह कांटा आप ही से निकलेगा।

तसनीम : अरी चुप ! क्या दीवानी हो गई है !

पहली : बस, बस, अब चोंचले छोड़ो और सीधी तरह घर की तरफ मुंह मोड़ो—

बंदी यह सब दिल की घातें खूब है पाई हुई।
उसको समझाती हो, जो है समझी-समझाई हुई ॥

(सखियों का मिलकर गाना)

हाय रे गोरी चलो, न ठहरो अलबेली, अरबेली !
देखो,बातों में जोबन लूटे न कोई, नबेली-अरबेली !!
सखि री, मैं हारी, मैं हारी, मोहे न सताओ, अब जाओ।
कौन रंगीले-रसीले से प्यारी, नेहा लगाय लियो !
हाँ, अब न बोलूंगी तुमसे सखि री, राज न छिपाओ।
गई सब जान, सखियां करके सब घात ! मन की बात !
काहे छिपाये छिपत हैं मोहिनी अखियाँ ! हाय रे गोरी...

(सब जाती हैं)

[पटाक्षेप]

तीसरा दृश्य

[शमसा का महल। शमसा और क़तलू बातें करते आते हैं]

शमसा : क़तलू, मैं अनुमान नहीं लगा सकती कि चालाक ताहिराने किस तरह मूढ़ तग़रल की आंखों में धूल झोंक कर सहील को बचा लिया। जब मैं इस तरह ख्याल दौड़ाती हूं तो अपनी आज़ादी और उमीदों को खतरे में पाती हूं।

क़तलू : लेकिन आप अब तसल्ली रखें, सहील अब ज्यादा दिन ज़िन्दा नहीं रह सकता। उसकी गिरफ्तारी के लिए काफी बंदोबस्त कर दिया है। उसकी तलाश में एक फौज का दस्ता चारों तरफ भेज दिया है।

शमसा : बहुत खूब !

[क़हरमान आता है]

शमसा : जनरल क़हरमान, मैं उम्मीद करती हूं कि जैसी बहादुरी से आप अपने मुल्क के लिए लड़ रहे थे, वैसे ही आप हमारे मुल्क के लिए भी करेंगे और अपने मालिक की वफ़ादारी का सबूत देंगे।

क़हरमान : मलका-ए-आलम ! इस झूठी और दग़ाबाज दुनिया में वफ़ादार होने का मैं किस तरह वायदा कर सकता हूं, जहां भाई भाई का, बेटा बाप का दुश्मन हो रहा है। दोस्त दोस्त से, बहन भाई से द्वेष कर रही है। लेकिन मैं कौन हूं और क्या हूं और अपने उपकारक के लिए क्या कर सकता हूं, यह आपको

आइंदा मालूम होगा।

शमसा : मुझे तुम पर हर तरह का भरोसा है।

क़हरमान : मुझे भी अपनी कामयाबी की उम्मीद है।

शमसा : आज शाम के खाने के बाद तुम और क़तलू दोनों मिलकर मेरे पास आना। मुझे युद्ध के बारे में कुछ खास बातें करनी हैं।

क़हरमान : जो हुक्म ! (जाता है)

क़तलू : सुल्ताना ! अब तो आपको आज़ादी और हकूमत दोनों चीज़ें हासिल हो गईं, अब अपना वायदा पूरा कीजिए।

शमसा : कौनसा वायदा ?

क़तलू : मुझसे शादी का !

शमसा : क्या शादी ! शादी क्या है ?

क़तलू : शादी एक खुशी की ज़िन्दगी है !

शमसा : तो क्या यह चाहते हो कि जिस ग़म से मैंने अभी-अभी आज़ादी हासिल की है, फिर मैं उसी में डूब जाऊं ! अपनी आज़ाद तबीयत को फिर शादी की क़ैद में फँसाऊँ !

क़तलू : चाहे कुछ भी हो, तुम्हें अपने वायदे के मुताबिक...

शमसा : मगर मैंने शादी का वायदा किया ही कब था ?

क़तलू : शमसा, शमसा, देखो तुम और तुम्हारी ज़िन्दगी दोनों मेरे हाथ में हैं। जो शरबत का प्याला मेरे होंठों तक आ गया है, क्या तुम उसे मेरे हाथ से छीनकर फेंक देना चाहती हो? ऐसा कभी न होगा। मैंने कांच की गोलियां नहीं खेली हैं। मैं ज़हर के उतार और साँप के मंत्र से खूब वाकिफ़ हूं।

शमसा : (हटकर स्वगत) अररररर ! यह तो काम बिगड़ चला ! (प्रकट) अजी वाह ! बस आपको देख लिया। इतनी-सी बात पर ही बिगड़ गए ! हँसी-हँसी में ही अकड़ गए ! मैं तो तुम्हे आजमाती थी, ज़रा हंसी से आपको बनाती थी !

क़तलू : मैं तुम्हारे बहाने में आने वाला नहीं हूं। याद रखो, अभी तो तुम अपने मतलब के लिए चुमकार के, पुचकार के फेर रही

हो ! मगर अपना काम हो जाते ही तोते की तरह आंखें फेर लोगी ! लेकिन मेरा भी नाम तब है कि तुमसे उसका बदला जरूर लेकर छोड़ूंगा ! और तुमको इस दुनिया में हरगिज़ चैन न लेने दूंगा ।

शमसा : हैं, हैं, क्यों घबराते हो ! आपे से बाहर हुए जाते हो ! जरा सहील को गिरफ्तार हो जाने दो, यह काँटा निकल जाने दो । फिर तुम मेरे और शमसा तुम्हारी !

क़तलू : खैर, यह भी देखा जायगा !

शमसा : चलो अब सहील की गिरफ्तारी का कोई सही इन्तज़ाम करें ।

[दोनों चले जाते हैं । क़हरमान प्रकट होता है]

क़हरमान : (उन्हें जाते देखकर) खूनी ! ज़ालिम ! कमीने कुत्तो ! क्या मज़े से हंसते हुए जा रहे हो ! क्या तुम इसी तरह हमेशा हंसते-हंसाते रहोगे ? इसी तरह खुशियां मनाते रहोगे ? नहीं, तुम्हारी खुशी ग़म में, तुम्हारी शादी मातम में बदल जायगी । तुमने जो अपने रहने के लिए दुनिया को स्वर्ग बना रखा है, मैं हमेशा के लिए नरक बनादूंगा । तुमने मेरे दोस्त तौफ़ीक़ पर, उसकी बीवी और बच्चे पर जो सितम ढाये हैं, मुझे अच्छी तरह याद हैं । ऐ भ्रम में लटके हुओ, तुम यह समझते हो कि जनरल क़हरमान केवल ओहदे और तनख्वाह के लिए तीर-तलवार से काम लेगा ! ऐ अक्ल के अंधो ! यह नहीं जानते कि वह तुमसे ज़रूर भयानक बदला लेगा !—

तुम सुख की नाव हो तो मैं तूफाने-बला हूं ।
तुम ऐश की दुनिया हो तो मैं उसमें वबा हूं ॥

तुम लोभ के स्वर्ग हो तो मैं दोज़ख की हवा हूं।
तुम खिरमने-इशरत[1] हो तो मैं बर्क़े क़ज़ा[2] हूं॥
है देखना तुम पाते हो या विजय व बड़ाई मैं।
लिखा है यह क़िस्मत में, उधर तुम हो, इधर मैं॥

(क़हरमान जाता है)

[पटाक्षेप]

१. सुख का बाग़ २. मौत बनकर गिरने वाली बिजली

चौथा दृश्य

[तसनीम का महल]

[माशाअल्ला व खैरसल्ला बात-चीत करते हुए आते हैं।]

माशाअल्ला : ठहरिये, पहले मैं जाऊँगा।

खैरसल्ला : नहीं, पहले मैं जाऊँगा।

माशाअल्ला : देख, पहले मैं आया।

खैरसल्ला : नहीं, पहले मैं आया।

माशाअल्ला : अबे मुर्गी, चोंच संभाल !

खैरसल्ला : अबे जा, अण्डे बेच और बच्चे पाल !

माशाअल्ला : क्या तू लड़ने पर आमादा है ?

खैरसल्ला : बेशक ! अगर तेरा यही इरादा है।

माशाअल्ला : यह दम ! ठोक खम !

खैरसल्ला : बस दोस्त, बस मालूम हो गया, हम दोनों जेन्टलमैन हैं। दो जेन्टलमैनों का आपस में लड़ना कोई इन्साफ़ है !

माशाअल्ला : बिल्कुल फैशन के खिलाफ़ है। मगर मिस्टर खैरसल्ला, आज तुम यहां किसलिए आये हो ?

खैरसल्ला : देखो, मियाँ माशाअल्ला, आज तसनीम की सालगिरह है। इसलिए मैं अपने स्वामी तग़रल बेग की तरफ से यह मोतियों का हार देने और मुबारकबाद कहने आया हूं। मगर यहां तुम्हारा क्या काम है ?

माशाअल्ला : सुनो ! मैं भी अपने स्वामी शहरयार की तरफ से आया हूं और फूलों का हार उपहार में लाया हूं।

खैरसल्ला : अरे जा, जा ! मुँह बनवा के आ ! तसनीम तेरे फूलों के हार पर नज़र भी न उठायेगी !

माशाअल्ला : होश कर, तेरे मोतियों के हार को ठोकरों से उठायेगी !

खैरसल्ला : अबे कहां सच्चे मोतियों का हार और कहां यह फूलों का हार !

माशाअल्ला : औरत उसी चीज़ को ज्यादा पसंद करती है जिसमें सच्ची मुहब्बत की बू आती है।

खैरसल्ला : तू बदहवास है !

माशाअल्ला : देख, आने तो दे, तारीफ के दस्तरख्वान पर वह नमक-मिरच लगाऊँ कि तबीयत बहाल हो जाय !

खैरसल्ला : और मैं वह मसाला लगाऊं, वह चटखारे दिखाऊं कि तेरा पका-पकाया क़ोरमा फीकी दाल हो जाय !

माशाअल्ला : अबे जानता नहीं कि मैं एक शायर का बेटा हूं !

खैरसल्ला : तो मैं मुद्दत तक फ़िरदौसी की कब्र पर लेटा हूं।

माशाअल्ला : अच्छा, तू शायर है तो मेरे मिसरे पर मिसरा लगा।

खैरसल्ला : कहूंगा, फौरन !

माशाअल्ला : अच्छा सुन—**बुलबुल की अंखड़ियों में रगे-गुल की फाँस है !**

खैरसल्ला : **बुलबुल की अंखड़ियों में रगे-गुल की फाँस है !**
शायरों के भेजे में थोड़ा-सा गोबर, थोड़ा-सा भूसा, थोड़ी-सी घाँस है !

माशाअल्ला : अबे मिसरा तो बढ़ गया !

खैरसल्ला : पहले मिसरे से दूसरा मिसरा बड़कर होना चाहिए।

माशाअल्ला : नहीं, यह नहीं, मिसरा तो लम्बा हो गया।

खैरसल्ला : तो क्या हुआ ? शायरी हमारे घर से ही निकली है। हम चाहें उसको बढ़ा दें, चाहे घटा दें !

माशाअल्ला : नहीं, ठीक मिसरा लगा, मुनासबत के साथ।

खैरसल्ला : यह बात है ! अच्छा फिर सुना।

माशाअल्ला : **बुलबुल की अंखड़ियों में रगे-गुल की फाँस है।**

खैरसल्ला : **मिसरा तो कुछ नहीं है, फक़्त ठूँस-ठांस है ।।**

माशाअल्ला : यह भी अर्थपूर्ण नहीं हुआ। अच्छा, अब दूसरे मिसरे पर मिसरा लगाओ।

खैरसल्ला : वह भी सुना।

माशाअल्ला : कल शब को मुझे ख़्वाब में उल्लू नज़र आया।

खैरसल्ला : कल शब को मुझे ख़्वाब में उल्लू नज़र आया।
आँखें जो खुलीं, सामने तो. तू नज़र आया।।

माशाअल्ला : जा जा भाई ! जा ! तुझे खुदा जाने शायर किस उल्लू के पट्ठे ने बनाया है !

खैरसल्ला : क्यों बच्चा, अब क़ाफ़िया तंग हो गया !

माशाअल्ला : भला, अब तीसरे मिसरे पर मिसरा लगा।

खैरसल्ला : अच्छा सुना !

माशाअल्ला : रात को अंडा पकाया, वह भी कच्चा रह गया !

खैरसल्ला : रात को अण्डा पकाया, वह भी कच्चा रह गया।
मर गये शायर फ़क़त उल्लू का पट्ठा रह गया।।

माशाअल्ला : क्यों बे, शेअर कहने से घबराया तो गालियां देने पर उतर आया !

खैरसल्ला : अच्छा तो ले, मैं चला।

माशाअल्ला : इधर आ, कहाँ जाता है ? रास्ता नहीं नज़र आता है ?

खैरसल्ला : नहीं, मैं तो उधर ही जाऊंगा।

माशाअल्ला : मैं एक चांटा लगाऊंगा।

खैरसल्ला : तो क्या मैं दब जाऊँगा !

[तसनीम व उसकी सखियां आती हैं]

पहली : हैं, हैं ! यह कैसी लड़ाई ! मुफ़्त की हाथापाई !

खैरसल्ला : देखो, देखो ! नान-कबाब बेचने वाला ! मर जाये इसकी ख़ाला !

तसनीम : मगर इनसे यह तो पूछो कि यहां आये किसलिए हैं !

खैरसल्ला : मैं अपने स्वामी तग़रल बेग की तरफ से आपकी सालगिरा

की तक़रीब[1] में यह मोतियों का हार नज़राना लाया हूं। यह खिलग्रत[2] कबूलियत से सरफ़राज़[3] होगा तो यह ग्रमर ग्राक़ा[4] के लिए बाइसे-एज़ाज़[5] होगा !

माशाग्रल्ला : यह उर्दू बोलता है या हिमालय की चोटी से पत्थर रोलता है !

तसनीम : ग्रौर माशाग्रल्ला, तुम कैसे ग्राये हो ?

माशाग्रल्ला : मैं ग्रपने ग्राक़ा शहरयार की तरफ़ से ग्राया हूँ ग्रौर यह फूलों का हार नज़राना लाया हूँ।

तसनीम : ग्राग़ा तग़रल बेग की तरफ़ से यह मोतियों का हार ग्रौर शहरयार की तरफ़ से फूलों का हार जिसकी तैयारी में एक भी जान का नुक़सान न हुग्रा होगा। ग्रौर इस हार की तैयारी में सैंकड़ों जानें नष्ट हुई होंगी। यह केवल ग्रमीरों के महलों में चमकता है ग्रौर यह ग्रमीरों के महल, गरीबों की झोंपड़ियों बल्कि हर जगह महकता है। इसको छोटा-बड़ा, ग्रमीर-पीर-पैगम्बर सब ग्रपने पास रखते हैं। उसमें बड़प्पन ग्रौर ग्रहंकार की बू है ग्रौर इसमें सच्ची उल्फ़त व मुहब्बत की खुशबू है। इसलिए ऐ पीर-पैगम्बर की प्रिय चीज़, मैं तुझे मंज़ूर करती हूं। तू दूर जा—ऐ दुनिया के झूठे चमकते हुए फ़रेबी, मैं तुझे नफ़रत से दूर करती हूं।

खैरसल्ला : हैं, हैं ! हज़ूर, यह क्या करती हैं ?

तसनीम : बस जाग्रो, ग्रपने ग्राक़ा से कह दो कि ग्राइंदा कोई उपहार भेजने की हर्गिज तक़लीफ़ न उठायें।

माशाग्रल्ला : चल निकल ग्रौर डुगडुगी बजाता हुग्रा चला जा।

खैरसल्ला : ग्रच्छा बच्चा ! यह तेरा ही फ़तूर है ! तो क्या तू कभी हमारे मुहल्ले की तरफ़ न ग्रायेगा !

माशाग्रल्ला : ग्रबे जा, नहीं तो मार खायेगा।

खैरसल्ला : नामर्द कहीं का ! पीठ के पीछे मारता है, मुंह पर मारता तो

१. जन्मदिन-उत्सव २. उपहार ३. सम्मानित ४. मालिक ५. इज्जत का विषय

बता देता ! (चला जाता है)

माशाअल्ला : अच्छा, अब मुझे भी इजाज़त दीजिए।

तसनीम : मगर तुम अपने आक़ा से क्या कहोगे ?

माशाअल्ला : खुशी की बात सुनाऊंगा और आपकी तारीफ़ के ढेर लगाऊंगा।

तसनीम : मुझे तारीफ़ की जरूरत नहीं। मैं तो सिर्फ़ उनकी इनायत का शुक्रिया अदा करती हूं।

माशाअल्ला : मगर शायरी में बग़ैर झूठ के मज़ा नहीं आता।

तसनीम : जो सादगी में असर है, वह झूठ में ज़रा नहीं आता।

माशाअल्ला : अच्छा, बंदा आदाब बजा लाता है। (जाता है)

पहली सखी : बीबी सलाम !

दूसरी : प्यारी सलाम !

तीसरी : बुलबुल को गुल मिला है यह कह दो पुकार के।
दिन आये बाग़े-दहर में फ़सले-बहार के॥

(सहेलियों का गाना)

बनो बनो सखी, दुल्हनिया, प्यारे के गरवा में डारो गोरी बहियां।
रहो गुइयां, वाकी छतियां, ऐसो पायो तूने गोरी मियां॥
बनो बनो सखी दुल्हनिया......

तसनीम : सजाया है गले में हार, देखिए क्या हो।
सुबह को चर्खे-सितमगार[१], देखिए क्या हो।
आशा औ आकांक्षा की लहर से दिल धड़कता है !
कि नियति के पर्दे से इज़हार देखिए क्या हो ?

सखियां : वाह जी, वाह क्या खूब मिला प्यारा-प्यारा दुलारा !
बनो बनो सखी......

(सब जाती हैं)

[पटाक्षेप]

पांचवाँ दृश्य

[जंगल। क़हरमान और उसके सिपही खड़ें हैं]

क़हरमान : क़रीब है, करीब है, दुष्ट क़तलू ग्रौर तग़रल तथा ज़ालिम शमसा का भयानक ग्रंत करीब है !

पहला सिपाही : जनरल क़हरमान, इन्हीं वहशियों के जुल्मों से हम वतन से बेवतन होकर जंगलियों की तरह पहाड़ों ग्रौर जंगलों में ग्रपनी ज़िन्दगी के दिन पूरे कर रहे हैं ग्रौर उसी रोज़ की प्रतीक्षामें हैं जबकि प्रतिशोध का खंजर दुश्मनों की ग्रांखों के सामने चमकता होगा ग्रौर वे कटकर इन पैरों के ग्रागे पड़े सिसकते होंगे।

दूसरा : खुदा का शुक्र है कि मासूम सहील ग्रौर वफ़ादार हशाम पहाड़ की खोह में छुपा हुग्रा ग्रौर बदनसीब ताहिरा जंगल में भटकती हुई हमें मिल गई।

क़हरमान : हां, बदनसीब ताहिरा को ग्रब कौन कह सकता है कि वह ज़िन्दा है ! घर लुट गया, सुहाग उजड़ गया। कोख के लाल को खो बैठी ! दिन-रात पागलों की तरह जंगलों ग्रौर पहाड़ों मे फिरती है। मगर हाँ, कभी ज़रा होश ग्रा जाता है, वरना वही दीवानेपन का दौरा शुरू हो जाता है।

तीसरा : देखिए, देखिए ! वही सामने से ग्रा रही है।

[ताहिरा गाती हुई आती है]

ताहिरा : किसी की आस में मैंने यह जान गंवाई है।
हूं तंग जीने से मौला, तेरी दुहाई है॥
हां रे मोरे सैय्याँ, घायलवा मनवा, ग़म की सताई मैं
तोरा करत हूं मान रे !
सुध-बुध बिसरी रे गैय्यां, चैन न पड़त, मोहे कल आवे
क्योंकर !
हां रे मोरी कोख उजड़ी गैय्याँ, हाँ रे मोरे सैय्यां……
रातें गईं, हर्ष और सुख के दिन गए।
दो लाल अंधेरे के उजाले थे, छिन गए॥

क़हरमान : खुदाया ! इसकी मुसीबत का खात्मा कर।

ताहिरा : (चांद की ओर देखकर) ऐ खूबसूरत चांद ! तू ही अपना एक टुकड़ा दे दे ! मैं उसी को रशीद समझकर प्यार करूं—
आसमान पर चांदनी है और ज़मीन पर चाँदनी।
हो रही है तेरे दम से आज घर-घर चाँदनी॥
आ, तू आ जा, ताकि रखलूं अपने सीने में तुझे।
मेरे भी वीराने में हो जाय दम-भर चाँदनी॥

क़हरमान : बानो, यह क्या हाल है ?

ताहिरा : देखो, देखो, शमसा मेरे बच्चे को मार रही है। अरे तग़रल, तू छुरी क्यों तेज़ कर रहा है ? अब मेरी गोद में कोई बच्चा नहीं है—
दे बैठी हूं सब कुछ मैं जो था आकाश के नीचे।
दबी है जिन्दगी-भर की कमाई खाक के नीचे॥

चौथा : हाय ! बेचारी को जनून हो गया !

ताहिरा : अरे, किसी औलाद वाले से पूछ, वह कहेगा कि तू मजनूं हो गया।

चौथा : बानो, मैं भी औलाद वाला हूं।

ताहिरा : हां सच है मगर—
तू है हरी-भरी शाख और ताहिरा इक सूखी डाली है।
भरी है गोद तेरी और मेरी गोद खाली है॥

चौथा : बानो, गम के वृक्ष को आँसुओं से सींच-सींचकर हरा रखना, क्या फायदा देगा ?

ताहिरा : हां, मुझे रोने दो, खूब जी भरकर रोने दो। मैं अपनी आँखों से खून का दरिया बहाऊंगी। उसमें तैरूंगी, आखिर उसी में डूबकर मर जाऊंगी।

[हशाम सहील को लेकर आता है।]

सहील : प्यारी अम्मी !

ताहिरा : लड़के, तू कौन है ?

हशाम : क्या आप मासूम सहील को भूल गईं !

ताहिरा : भूल गई! मैं कभी भूली नहीं। कोई मां अपने बच्चे को भूलती है? तुम कैसे कहते हो ? मेरा बच्चा मुझको भूल गया !

पहला : बानो, यह कौन है ?

ताहिरा : लड़के, तू कौन है ?

सहील : अम्मी, मैं आपका सहील हूं !

ताहिरा : कौन ? सहील ?सहील ! बादशाह की आखिरी निशानी ! मेरा प्यारा ! मेरे प्यारों का प्यारा !

क़हरमान : बानो ! आपकी यही हालत रही, तो आप इस गरीब के लिए कब कुछ कर सकती हैं ?

ताहिरा : आह ! मेरे बच्चे ! मैं तेरे लिए कुछ न कर सकी !

क़हरमान : अगर आपको ग़म फुर्सत दे तो आप इस गरीब के लिए सबकुछ कर सकती हैं !

ताहिरा : हां,मैं अब सबकुछ करूंगी। जहां इसकी रक्षा में दो जानें पहले दे चुकी हूं वहां अगर ज़रूरत हुई तो यह तीसरी जान भी कुर्बान करूंगी। इसकी रक्षा हर आन पर करूंगी।

क़हरमान : नेकी की फरिश्ता !

पहला : वफ़ादारी की रूह !

दूसरा : नारी की आबरू !

(सब जाते हैं)

छठा दृश्य

[महल]

[तग़रल के सामने खैरसल्ला खड़ा है, तग़रल उसकी गर्दन पकड़े है]

खैरसल्ला : हुज़ूर, कुछ मेरी खता !

तग़रल : बोल, मेरे हार का क्या हुआ ?

खैरसल्ला : मगर मेरी गर्दन तो छोड़िए जनाबे वाला !

तग़रल : अबे बोलता है कि नहीं ?

खैरसल्ला : बोलता हूँ, मगर मेरी तो हड्डियाँ तमाम बोल गईं !

तग़रल : मगर फिर भी न बोला, तू बेहया नं बोला !

खैरसल्ला : मेरी तो चीं बोल गई !

तग़रल : क्यों बेहूदा बकता है ? जल्दी बोल, तसनीम ने मेरे हार के साथ क्या सलूक किया ?

खैरसल्ला : आपके हार को देखा और जांचा ! बहुत तारीफ़ की। फिर मोतियों को गिन-गिन कर गालियां दीं।

तग़रल : और ?

खैरसल्ला : देर तक बड़बड़ाती रही। आखिर पुरानी जूती की तरह मेरे मुंह पर मारकर फेंक दिया।

तग़रल : मेरी मुहब्बत का यह अंजाम !

खैरसल्ला : मेरी मेहनत का यह इनाम !

तग़रल : मेरे हार का यह अपमान !

खैरसल्ला : एक एडीकांग की यह इन्सलट !

तग़रल : ग़ज़ब !

खैरसल्ला : सितम !

तग़रल : मेरे हार को स्वीकार क्यों नहीं किया ?

खैरसल्ला : हजूर,यह मैं क्या जानूं ! यह तो उसी से जाकर पूछिए !

तग़रल : बोल, तूने तसर्नीम से क्या कहा था ?

खैरसल्ला : मैंने कहा कि हमारे आक़ा ने यह हार-उपहार आपकी खिदमत में भेजा है, इसे क़बूल कीजिए !

तग़रल : उसने क्या कहा ?

खैरसल्ला : उसने कहा, जहां फरिश्तों का गुज़र नहीं, वहां भूतों को कौन पूछता है ?

तग़रल : यह कहा !

खैरसल्ला : और यह कहा कि अपने मालिक से जाकर कह दे, ऐसे दीवाने कुत्ते मेरी गली में ठोकरें खाते फिरते हैं।

तग़रल : नमकहराम ! टुक्कड़खोर ! उसने ऐसी बे-भाव की सुनाई और तुझे शरम न आई !

खैरसल्ला : वाह ! गालियां वह आपको सुनाये और शरम मुझको आये !

तग़रल : तो क्या तू मेरा एडीकांग नहीं ?

खैरसल्ला : एडीकांग हूं, बल्कि शैतान की टांग हूं।

तग़रल : तो फिर तूने क्यों मेरी तरफ से कुछ नहीं कहा ?

खैरसल्ला : मैंने उसे बहुत धमकाया।

तग़रल : क्या-क्या कहा ?

खैरसल्ला : कि मेरे मालिक तग़रल बेग़ बड़े ही नामाकूल हैं, बड़े ही पाजी हैं। जब गुस्से में आते है तो पागल कुत्ते की तरह काट खाते हैं।

तग़रल : अबे शैतान ! यह तूने मेरी तारीफ़ की ?

खैरसल्ला : तारीफ़ नहीं तो फिर इसे क्या कहते हैं ?

तग़रल : हाय ! ऐसी नफ़रत ! हज़ार लानत !

खैरसल्ला : हाय ! ऐसा प्यार ! हज़ार फटकार !

तग़रल : ऐ खुदा ! मैं क्या करूं !

खैरसल्ला : हरजाने का दावा।

तग़रल : किस पर ?

खैरसल्ला : अपने प्रतिद्वन्द्वी पर ! अपनी प्रेमिका के आशिक पर !

तग़रल : तो क्या तसनीम का दिल किसी और का शैदा हो गया है !

खैरसल्ला : जी हां, जो हंडिया आप मुद्दत से पका रहे थे, उसका खानेवाला एक और पैदा हो गया है।

तग़रल : कौन ?

खैरसल्ला : शहरयार !

तग़रल : शहरयार !

खैरसल्ला : जी सरकार !

तग़रल : मगर शहरयार को उसकी तरफ़ देखने की जुर्रत कैसे हुई ?

खैरसल्ला : तो देखने के लिए क्या लाइसेंस की ज़रूरत है ?

तग़रल : अबे बदज़ात ! तेरा सिर तो नहीं फिर गया ?

खैरसल्ला : बेशक ! आसार तो ऐसे ही हैं।

तग़रल : मेरे फूल की तरफ उसे हाथ बढ़ाने का क्या हक़ है ?

खैरसल्ला : बिल्कुल नहीं, कानून साफ मना करता है।

तग़रल : क्या तसनीम मेरे हाथ से निकल जायगी ?

खैरसल्ला : नहीं, हरगिज़ नहीं।

तग़रल : मैं जो चाहूं, कर सकता हूं।

खैरसल्ला : बेशक हुज़ूर !

तग़रल : बस निकल जा यहां से। मैं अब तनहाई चाहता हूं।

खैरसल्ला : मगर एडीकांग को हमेशा अपने साथ रखना चाहिये।

तग़रल : एडीकांग का बच्चा ! निकल जा यहां से वरना खा जाऊंगा कच्चा। बदकार, बदमाश ! शहरयार, मैं तुम से जरूर बदला लूंगा।

खैरसल्ला : नहीं, ऐसा न करना।

तग़रल : अबे तू नहीं गया ! बदमाश ! क्यों खड़ा है ?

खैरसल्ला : आपको दिलासा देने के लिए।

तग़रल : मुझे तेरे दिलासे की जरूरत नहीं।

खैरसल्ला : हजूर, आपको दिलासे की सख्त जरूरत है।

तग़रल : बस चला जा, फौरन चला जा, वरना तेरे अंजर-पंजर सब ढीले कर दूंगा।

खैरसल्ला : अच्छा तसलीम ! (जाने को होता है।)

तग़रल : शहरयार ! शहरयार ! मैं तेरा खून कर दूंगा।

खैरसल्ला : मगर पुलिस को खबर न होने पाये !

तग़रल : अरे, तू फिर आ धमका ! तू नहीं जायगा खाना-खराब !

खैरसल्ला : अच्छा आदाब !

तग़रल : बदकार ! बदमाश ! मैं तुमसे भयानक बदला लूंगा।

खैरसल्ला : तोबा ! तोबा ! भयानक बदला जनाबे वाला !

तग़रल : यह गुस्ताखी ! बदमाश, फितने !

(दोनों जाते हैं)

[पटाक्षेप]

सातवां दृश्य

[तसनीम का महल]

[तसनीम अन्दर से गाते हुए आती है]

कलेजवा में मारी कटारी रे सिपहिया, जुल्मी बांके सिपहिया !
कि कारे मोरे दिया
सांवरी सूरत मतवारे नैना, मधुर-मधुर बोल जैसे मैना !
पियरवा कलेजवा मोरे छबीला !
जियरवा मैं वारूं, बहियां गर डारूं ! कलेजवा में...

[शहरयार आता है]

शहरयार : प्यारी तसनीम ! सच है कि इश्क के दीवाने की आंखें नहीं होतीं।

तसनीम : यह आप क्या फरमाते हैं ?

शहरयार : अगर आंखें होती तो मालदार के आगे गरीब शहरयार हरगिज़ कामयाबी न पाता !

तसनीम : प्यारे शहरयार ! आपकी समझ घोखा खाती है। देखो, इश्क़ की बांसुरी क्या राग सुनाती है !—

चले इश्क के आरे जिगर पर दो धारे !
चैन आशिक़ को दमभर क्योंकर हो। चले...
तबीयत खेली, मुसीबत झेली, बला सर ले ली।
पहन गले सूली, चली पूजन इश्क को ॥

(दोहरा)

प्रेमप्याला जब तुम दीनो, मत हमरी बौराई।
हृदय बान नैन के लागे, सुध बुध बिसराई॥
प्यारी प्यारी बतियां करत, छतियां मिलत रतियां कटत।
प्यारे वारी! प्यारे! चले इश्क के आरे…

[सखी आती है]

सखी : जनाबे आली! आपको कोई शख्स दरवाजे पर पूछ रहा है।
शहरयार : ज़रा देखूं तो यह कौन है!
तसनीम : मगर जल्दी आना, देर न लगाना।
शहरयार : मैं अभी आया। (जाता है।)
तसनीम : आह! आह! क्या शाने-परवरदिगार है! तसनीम के दूसरे स्वर्ग का नाम शहरयार है! (गाती है)

हां रे कोई बांको सिपय्या लुभाय गयो रे!
मोरे जिया हिया मैं समाय गयो रे! हांरे…
तन मन बाला जोबन प्यारी छविन वारूं सजन
सय्यां दिवानी बनाय के, रिझाय के, सुहाय गयो रे! हांरे…

दोहरा

और कुछ सूझत नाहीं, ऐसी झलक दिखाय।
आन बसे नैनन में मोरे, राखों पलक छिपाय॥
अब तो है ध्यान यही, उनपर क़ुर्बान गई, तन मन धन वारा!
अब तो है……

[तग़रल आता है]

तग़रल : बस आखिरी सवाल और आखिरी फैसला!
तसनीम : (हैरान होकर स्वगत) हैं! यह मूज़ी सांप क्या ज़हर उगलने आया है?
तग़रल : तसनीम! इधर आओ और जो मैं पूछता हूं, उसका जवाब दो!
तसनीम : जनावे आली, आपने किसलिए तकलीफ़ फरमाई?
तग़रल : यह पहना हारे-लानत बेवफ़ा, अय्यार! किसका है?

यह फांसी किसने भेजी है, गले में हार किसका है ?

तसनीम : फांसी नहीं, यह फांस है दुश्मन के जिगर में।
श्रौर घेरा है जंजीरे वफा का मेरी नजर में॥

तग़रल : वेवकूफ !
कांटा कहां श्रौर एक बुते-लालासेरू कहां !
नाचीज शहरयार कहां श्रौर तू कहां !
जहरीला वह दरख्त है, भाग उसकी छांवसे।
इस हार को उतार के मल डाल पांव से॥

तसनीम : गैर मुमकिन है, गले से दूर मेरे हार हो।
चाहे जो कष्ट हो या जिन्दगी की हार हो॥

तग़रल : तो नहीं !

तसनीम : हरगिज नहीं।

तग़रल : यही जिद यही, वतीरा, श्रगर ऐ सितमगार होगा !
तो फिर न बाकी गला रहेगा, श्रौर न बाकी हार होगा !

तसनीम : चोली श्रब तो बन्ध गई है उसके दामन से मेरी।
हार यह हरगिज ना उतरेगा गर्दन से मेरी॥

तग़रल : हाथ सर पर रख के रोयगी नसीबों के लिए।
एक दौलतमंद से नफ़रत, गरीबों के लिए !

तसनीम : शहरयार एक ताजा गंध है मेरे गुलजार की।
जान से ज्यादा मुहब्बत है मुझे इस हार की॥

तग़रल : तसनीम, मेरे श्रागे इस क़दर बड़ाई वदकार की !
देख यह इज्जत है उसकी श्रौर उसके हार की॥

(झटका मार कर हार तोड़ देता है)

तसनीम : श्राह ! श्रो जल्लाद, जालिम श्रत्याचारी ! यह क्या किया ?

तग़रल : जो हुश्रा, श्रच्छा हुश्रा ! जो कुछ किया, श्रच्छा किया !
वह भी यहां होता तो यूँही बदहाली देखता।
श्रासमान फर्शे-जमीं को इससे खाली देखता॥

तसनीम : बस, इससे ज्यादा मैं श्रपने प्यारे के बारे में सुनना नहीं चाहती !

तग़रल : क्या प्यारा !वह ज़लील, श्रावारा ! नाकारा!शहरयार, श्रौर

तेरा प्यारा !

तसनीम : हां, हां मेरा प्यारा !

तग़रल : तसनीम, होश संभाल ! देख, तू धोखा खा रही है।

तसनीम : छोड़ो, मुझे जाने दो ! मैं तुम्हारे लायक नहीं हूँ।

तग़रल : फिर किसके लायक है ?

तसनीम : जो तुम्हारी नज़रों में नालायक है।

तग़रल : देखो, तुम दोनों पछताओगे।

तसनीम : जैसा करोगे, वैसा पाओगे।

तग़रल : घमंडी, विरोधी, मुर्दार, मुझसा बाइज्जत, उच्च, संभ्रांत, मालदार आशिक़ और शादी से इन्कार !

[शहरयार आता है।]

तग़रल : (उसे देखकर) लुटेरे, डाकू, मक्कार ! आक़ा का शिकार, मालिक पर वार ! शरम नहीं आई बदकार !

शहरयार : जनाव इस क्रोध का कारण आप बता सकते हैं ?

तग़रल : अच्छी तरह बता दिया जाएगा, बेईमान, नमक हराम !

शहरयार : बस हजूर, शहरयार नौकर है, न कि गुलाम !

तग़रल : खुदा की शान ! कहां ज़मीन और कहां आसमान ! कहां फूल, कहां बबूल ! कहां मीठा शहद, कहां कड़वा नीम ! तू और तसनीम !

शहरयार : तो आप इसलिए नाराज़ हैं कि मैं तसनीम से मुहब्बत करता हूँ !

तग़रल : मगर तुझे इससे मुहब्बत करने का हक क्या है ?

शहरयार : क्यों, मैं आदमी नहीं हूं ? मेरे सीने में दिल नहीं है ?

तग़रल : दूर हो, दूर हो। शहरयार ! मेरे रास्ते से दूर हो !

शहरयार : आप मुझे धमकी देते हैं ?

तग़रल : मुझ में धमकी देने की ताकत है।

शहरयार : आप में कोई ताक़त नहीं, यह हिमाक़त है।

तग़रल : एक आज्ञाकारी मातहत की तरह बात कर।

शहरयार : तो आप भी एक अफ्सर की तरह कलाम करें।

तग़रल : देख, पछतायेगा।

शहरयार : पत्थर का जवाब पत्थर से दिया जायेगा।

तग़रल : गुस्ताखी का जवाब खंजर आबदार है।

शहरयार : तो मेरे पास भी उसी लोहे की तलवार है।

तग़रल : तो क्या तू मुझ से ताक़त में ज्यादा है !

शहरयार : इसका जवाब बाज़ू देंगे।

तग़रल : तो क्या तू मुझसे ज्यादा खूबसूरत है ?

शहरयार : इसका जवाब आईना देगा।

तग़रल : तो क्या तू मुझ से मुकाबला करके जीत जायेगा ?

शहरयार : इसका जवाब किस्मत देगी।

तग़रल : देख, मैं तुझसे ज्यादा तसनीम का हक़दार हूँ।

शहरयार : किस तरह ?

तग़रल : इस तरह कि तू एक मामूली अफ्सर है और मैं सेनापति हूँ।

शहरयार : तो क्या इश्क़ व मुहब्बत पर सेनापतित्व की मुहर लगी हुई है ?

तग़रल : चुप बदलगाम !

शहरयार : क्यों ?

तग़रल : क्योंकि तू मेरा मातहत है।

शहरयार : अगर अफसरी और मातहती पर ही बात है, तो बंदा ऐसी नौकरी से बेज़ार है।

तग़रल : शहरयार, होश संभाल !

शहरयार : अपनी नौकरी भाड़ में डाल।

तग़रल : यह है ! पकड़ लो, जकड़ लो !

[तग़रल के सिपाही शहरयार को पकड़ ले जाते हैं]

शहरयार : धोखा ! धोखा ! या खुदा !

तग़रल : बस खबरदार !

(सब जाते हैं)

[पटाक्षेप]

आठवाँ दृश्य

[मुमताज़ का महल]

मुमताज़ : (स्वगत) व्हट इज़ दिस नानसेंस ? यह मरदवे तो हमें कुछ ख्याल में ही नहीं लाते ! कहते हैं कि हम औरतों को पाँवों की जूती के बराबर समझते हैं ! घर में झाड़ू हम देवें, वर्तन हम साफ करें, रोटी हम पकावें, बच्चे हम पालें, गरज़ कि तमाम घर का काम तो हम करें और ज़रा कहीं बाहर सैर को या तफ़रीह करने को जावें तो—क्यों गई ? खिड़की में से क्यों झाँकी ? इसे क्यों देखा ? उससे क्यों आंख मिलाई ? मगर शुक्र है कि पहले जैसी वेवकूफ़ नहीं हूं। कुछ अंग्रेजी पढ़ने-लिखने से कुछ मिसेज़ खैरसल्ला की संगति में रहने से आठों गाँठ पक गई हूं। अब मियां की एक नहीं मानती ! अगर कुछ कहते हैं तो एक-एक की दस-दस सुनाती हूं। घरदारी का काम नहीं करती हूं।

(गाना गाती है)

घरदारी संसारी नारी क्या जानो !
कैसोहै पायो बहानोरवा ऐसोरह के टोकें मोहे नेहड़वा!
वासे जरे मोरा जिगरवा !
घुड़की झिड़की नितनित जरजर मोरा जियरा !
काट काट मोहे कैद घरवारो रोकत मोरा
जिगरवा है सुभाव, घरदारी संसारी...

[गाते-गाते अन्दर जाती है। माशाअल्ला ढूंढता हुआ आता है]

माशाअल्ला : हैं! किधर गई? ज़मीन खा गई या हवा में उड़ गई? मकान के दालान में, घर के आंगन में, कोठे के छज्जे के नीचे, अनाज के मटके में, मुर्गी के दड़बे में, पानी के घड़े में—सब जगह छान मारा! मगर आश्चर्य! ताज्जुब! पूरे साढ़े पांच फुट की इन्सान गायब! अफ़सोस! मेरी बीबी ने मुझे परेशान कर दिया है! मैंने भी क्या बेव-कूफी की कि इसको अंग्रेजी पढ़ाई। तो बात-बात में अब मेरी बोलती बन्द करती है, बल्कि उस्तानी बनकर मुझे सबक पढ़ाती है! बगैर पूछे-गूछे जहां चाहती है चली जाती है, जिसको चाहती है, घर में बुलाती है! या खुदा! अब तू ही है मेरी इज्ज़त बचाने वाला!

[खैरसल्ला आता है]

खैरसल्ला : क्यों जनाबे वाला!

माशाअल्ला : कौन खैरसल्ला! खूब रोओ!

खैरसल्ला : अरे! पर क्यों रोऊँ! कौन मर गया?

माशाअल्ला : मेरी मुसीबत पर, मेरी हालत पर!

खैरसल्ला : क्यों! क्यों? खैर तो है?

माशाअल्ला : खैर कैसी! जिस घर में औरत ऐसी हो वहां खैर कैसी?

[मुमताज आती है]

मुमताज़ : क्या कहा? क्यों साहब, यह क्या कह रहे हैं?

खैरसल्ला : (स्वगत) आई बेचारे की कमबख्ती! (प्रकट) कुछ नहीं, ज़रा आपकी तारीफ़ कर रहे थे!

माशाअल्ला : तू झूठा है! इसमें खूबी ही कौन-सी है, जो मैं तारीफ़ करूं!

खैरसल्ला : तो इसमें बुराई कौन-सी है?

माशाअल्ला : एक बुराई नहीं लाख!

मुमताज़ : झूठे के मुंह में राख !
खैरसल्ला : वाह भाई ! यह तो मेरी जोरू की भी नानी है !
माशाअल्ला : औरत इसलिए पैदा हुई है कि आज़ाद फिरा करे ?
मुमताज़ : नहीं तो क्या करे ?
माशाअल्ला : घर संभाले और बच्चे पाले !
खैरसल्ला : तो क्या औरत कोई मुर्गी है जो बच्चों को लेकर दड़बे में बैठी रहे ?
मुमताज़ : हाँ, देखो साहब ! क्या खुदा ने औरतों को ऐसे ज़लील काम के लिए पैदा किया है ?
माशाअल्ला : फिर किसलिए पैदा किया है ?
मुमताज़ : औरत को इसलिए पैदा किया है कि अच्छा-से-अच्छा खाये और बढ़िया-से-बढ़िया पहने। सैर-तमाशे में जाये, थ्येटर देखे, पार्टी दे, लेक्चर दे, डांस करे !
खैरसल्ला : प्रोग्राम बिल्कुल सही है।
माशाअल्ला : मरद की बात न मानना—यह औरत को शोभा नहीं देता !
खैरसल्ला : हरगिज़ नहीं।
मुमताज़ : औरत को दिन-भर कैद रखना क्या शोभा देता है ?
खैरसल्ला : कभी नहीं।
मुमताज़ : अगर जरूरत पड़े और औरत घर के बाहर जाय, तो क्या नुकसान है ?
खैरसल्ला : कुछ भी नहीं।
माशाअल्ला : मरदों को राज़ी करना औरतों का फर्ज है।
खैरसल्ला : बराबर।
मुमताज़ : औरतों को खुश रखना मरदों का काम है।
खैरसल्ला : यह भी बराबर !
माशाअल्ला : लाहौल विल्ला क़ुव्वत ! यह भी बराबर और वह भी बराबर !
खैरसल्ला : और क्या !

माशाअल्ला : अच्छा, तुझे मेरी राय से सहमति है ?
खैरसल्ला : सहमति है !
मुमताज़ : और मेरी राय से ?
खैरसल्ला : सहमति है ।
माशाअल्ला : ठीक !
खैरसल्ला : मरद का दर्जा......
मुमताज़ : मगर इस तरक़्क़ी के ज़माने में औरत का दर्जा बड़ा है या मरद का ?
खैरसल्ला : औरत का !
माशाअल्ला : अजीब ढुलमुल है ! थाली के बैंगन की तरह इधर भी लुढ़कता है, उधर भी !
खैरसल्ला : अरे यार, नाराज़ क्यों होता है ? मैं तो बराबर का फैसला कर रहा हूं ।
माशाअल्ला : नहीं, कभी नहीं। आग और पानी बराबर नहीं हो सकते ! चाहे शैतान हो, चाहे गधा !
खैरसल्ला : अगर तुम आदमी होते तो मेरे फैसले की तारीफ़ करते ।
मुमताज़ : मियाँ, दुनिया में तुम्हारा हिस्सा है तो हमारा भी है । तुम आज़ादी बरतोगे तो हम आज़ादी बरतेंगे ! तुम बाहर मौज उड़ाओगे तो हम भी मरदों से ऐश उड़ायेंगी । क्या खुदा ने तुमको इन्सान बनाया है और हमको जानवर !

(तीनों मिलकर गाते हैं)

मुमताज़ : हम भी मोटर पै सैकल पै सैर करन नित जायें !
खैरसल्ला : अजी बेशक ! जहाँ मन भाये, वहाँ जायें ।
माशाअल्ला : बतियाँ क्यों न बनें भाये फैशन को झसका ।
मुमताज़ : बतियां सारी ठीक हैं उनकी, यही चाहत है मनवा ।
फाड़ फेंकूं मैं देसी साड़ी, पहनूं अंग्रेजी पोशाक भारी !
घर बैठूं तो चैन न पड़े !
टैनिस खेलो, थेटर देखो, हम भी मोटर पै...(जाती है)
खैरसल्ला : क्यों, देखा औरतों को अंग्रेजी पढ़ाने का नतीजा ! मैं न

कहता था कि औरतों को अंग्रेजी न पढ़ाओ। उस वक्त न माना, अब भुगतो सज़ा ! तोबा ! तोबा ! औरत है या चीनी बला !

माशाअल्ला : अरे तेरी औरत के ही तो ये सारे वतीरे हैं। जब से वह फैशनेबल बला मेरे घर में आने-जाने लगी है, तब से मेरी औरत का सत्यानास हो गया है !

खैरसल्ला : अरे, क्यों मेरी बीवी पर इल्ज़ाम लगाता है ! तोबा कर, नहीं तो बख्शा न जायगा।

माशाअल्ला : बस यही जी में आता है कि अपने भेजे में पिस्तौल मार-कर मर जाऊं।

खैरसल्ला : इसमें उसके बाप का क्या जायगा ? वह कोई और मुसटंडा कर लेगी।

माशाअल्ला : जा, जा, दिल्लगी न कर। मैं आगे ही औरत का सताया हूं। ज़रूर उसने कोई यार रखा हुआ है।

खैरसल्ला : मगर यार तू किसे कहता है ?

माशाअल्ला : अरे, मेरे यार ! खैराती, शेख शबराती, खुदाबख्श कसाई, घसीटा हलवाई, सलादर नानबाई, पीरूभटियारा, कल्लू घसियारा—यार, इन सबने मेरे घर को भण्डाराखाना बना रखा है।

खैरसल्ला : अरे, यह सिर्फ धोखा है, क्यों जी जलाता है।

माशाअल्ला : नहीं, नहीं, वह जरूर आता है और मेरी औरत उसे कहीं छुपा देती है।

खैरसल्ला : अरे, तुझे ज़रूर किसी ने बहकाया है।

माशाअल्ला : ऐसा कुछ नहीं। उस उठाईगीरे पर, इस औरत पर, इस घर पर लानत करता हूं। तू मेरा दोस्त है कि नहीं ?

खैरसल्ला : दोस्त क्यों नहीं हूं !

माशाअल्ला : और सच्चा दोस्त !

खैरसल्ला : सच्चे दिल से !

माशाअल्ला : तू मेरा साथ देगा ?

खैरसल्ला : जरूर !

माशाअल्ला : कहाँ तक ?

खैरसल्ला : इस जहाँ में कब्र तक, उस जहान् में नरक तक !

माशाअल्ला : दे हाथ !

खैरसल्ला : यह ले। (पांव आगे करता है)

माशाअल्ला : हैं ! हाथ के बदले पांव ?

खैरसल्ला : यानी बंदा अपने क़दम पर क़ायम रहेगा।

माशाअल्ला : तो सुन ! अब यह औरत मेरे किसी काम की नहीं रही।

खैरसल्ला : औरत काम की नहीं रही, या तुम औरत के काम के नहीं रहे ?

माशाअल्ला : मैं अब इसका मुंह देखने का भी रवादार नहीं हूं।

खैरसल्ला : मगर वह भी तुम्हारा मुंह देखना नहीं चाहती।

माशाअल्ला : बस, अब मैंने यह ठान ली है कि पिस्तौल से अपनी दुखी ज़िन्दगी का खात्मा कर दूंगा।

खैरसल्ला : अरे यार, कहीं सचमुच ऐसा न करना।

माशाअल्ला : मुझे मजबूरन ऐसा करना पड़ेगा। और तुझे भी मेरे साथ मरना पड़ेगा।

खैरसल्ला : हैं ! हैं !

माशाअल्ला : हैं-वैं कुछ नहीं, चल तैयार हो जा !

खैरसल्ला : तैयार हो जा ! वह किसलिए ?

माशाअल्ला : मेरे साथ मरने के लिए।

खैरसल्ला : अरे मरने ! मैं क्यों मरने लगा ?

माशाअल्ला : क्यों, तूने अभी नहीं कहा था कि मैं कब्र तक साथ दूंगा !

खैरसल्ला : मैं क़ब्र तक साथ देने को तैयार हूं।

माशाअल्ला : वह किस तरह !

खैरसल्ला : इस तरह कि तू मर जा मैं तुझे नहलाऊंगा, कफ़न मंगाऊंगा, उसे सिलाऊंगा, फिर तुझे कफ़नाऊंगा। जनाज़े में रखकर कब्रिस्तान तक ले जाऊंगा। चाहे अभी मर के देख ले।

माशाअल्ला : तो साथ के यही माने हैं !

खैरसल्ला : नहीं तो और क्या बिन बुलाये ख़ुदागंज को जाऊं !

माशाअल्ला : देख, यह दुनिया एक नरक है और वहां स्वर्ग मिलेगा।

खैरसल्ला : भाई तू ही स्वर्ग में चला जा ! गुनहगार को इस नरक में ही पड़ा रहने दे। मगर तू खाहमख्वाह क्यों जाने को तैयार है ?

माशाअल्ला : इसलिए कि मेरी बीवी बदकार है।

खैरसल्ला : बदकाम करते हुए आंखों से देखा ?

माशाअल्ला : मगर कानों से तो सुना !

खैरसल्ला : भले आदमी, कोई कह दे कि तू मुर्गी के अण्डे से पैदा हुआ है तो इसको मान लेगा ! इसलिए ऐसा कर कि मैं भेस बदलकर तेरी औरत के पास जाता हूँ और तेरे मरने की खबर सुनाता हूं। अगर वह सुनकर रोये तो नेक है और बेपरवाही करे और हँसे तो समझ लेना बदकार है। फिर तुझे अख्तियार है।

माशाअल्ला : ठीक है, मंजूर है। जरूर जाओ और जल्द आकर खबर सुनाओ। अब मैं जाता हूं। (जाता है।)

खैरसल्ला : (स्वगत) तौबा ! तौबा ! कैसा भूत सवार है ! कमबख्त अपने साथ मुझे भी मारने को तैयार है ! यह तो इन औरतों का फतूर है, मेरा बस चले तो सब दाढ़ी-मूछों वाले मरदों को साथ लेकर खुदा से फरियाद करूँ और इन औरतों का पैदा होना हीं बंद करा दूं ! (जाता है)

[पटाक्षेप]

नवाँ दृश्य

[कोर्ट मार्शल (सैनिक अदालत)]

तग़रल : हुक्म सुनाओ !

सरिश्तेदार : हज़रत महारानी शमसा के फौजी कानून की मंजूरी से और नवाब क़तलूखाँ की इच्छानुसार बारहवें रेजमेंट के लेफ्टेंट शहरयार वल्द शेर अफ़गान मुल्ज़िम पर ये अभियोग लगाये गए हैं—(१) उच्च अफ्सरों की इजाज़त के बिना छावनी से गैरहाजिर रहना (२) बगैर इस्तीफ़ा दिए नौकरी छोड़ देना, (३) अपने अफ्सर तग़रल बेग पर घातक हमला करना—ये तमाम अभियोग फौजी अदालत के सदस्यों—जनरल शाह नवाज़, कर्नल जफ़र मिर्ज़ा, मेजर दिलावरखां, डिप्टी जहूरबेग के आगे पेश किये गए। मुल्ज़िम ने अपनी सफाई के बतौर जो सबूत पेश किये वे इस्तग़ासा की तरफ से रद्द कर दिए गए। अतः अदालत ने हुक्म दिया है कि तारीख २५ मुहर्रम सन् १२०६ हिजरी, दिन वीरवार को ठीक बारह बजे दिन के काहिरा कैम्प में गोली मार कर मुल्ज़िम शहरयार की ज़िन्दगी को खत्म कर दिया जाएगा। दस्तखत इज्ज़त पाशा कोर्ट मार्शल, चौवीस महर्रम सन् १२०६ हिजरी, स्थान क़ाहिरा कैम्प !

एक अफ़्सर : शहरयार, चन्द मिनट के बाद मौत आकर तुमसे हाथ मिलाएगी। क्या तुम एक दिलेर सिपाही की तरह उसके स्वागत के लिये तैयार हो ?

शहरयार : बेशक, तैयार हूं।

अफ़सर : कोई ख्वाहिश है ?

शहरयार : कोई नहीं।

अफ्सर : कुछ कहना चाहते हो ?

शहरयार : कुछ नहीं।

अफ्सर : कुछ भी ?

शहरयार : क्या कहूं, जो अदालत का मज़ाक उड़ाएँ, इन्साफ़ का गला काटें, दौलत और ख़िताब के लालच में झूठी गवाहियां देकर एक बेगुनाह को मौत की सज़ा दिलवाएं, उनसे क्या कहूँ !

दूसरा अफसर : तुम्हारे साथ जो कुछ भी हुआ, वह इन्साफ़ से हुआ।

शहरयार : झूठे हो, तुम सब झूठे हो !

तग़रल : यह बेहूदा बकवास तेरे सीने को गोलियों का निशाना बनने से नहीं रोक सकती।

शहरयार : ख़ामोश ! नामर्द बुज़दिल ! मैं तुझसे बात करना भी अपनी बेइज्ज़ती समझता हूं। अगर तुझे अपनी पराजय का बदला लेना था तो तलवार पकड़कर मैदान में आता, मुझे अपने मुकाबले के लिए बुलाता, दो-दो हाथ आज़माता और एक शरीफ़ सिपाही की तरह मारता या मर जाता—

सामने आकर लड़े जो मर्द उसका नाम है।
आड़ लेकर वार करना बुज़दिलों का काम है॥

तग़रल : अहमक ! अब तेरे पास केवल चन्द साँसें बाकी रह गयी हैं, उन्हें इस बेहूदा बकवास में ज़ाया करने के बदले मौत के मातम में सर्फ कर।

शहरयार : मौत पर मातम करना या रोना औरतों या तेरे जैसे नामर्दों का काम है। मौत क्या है, एक मुकाम को छोड़कर दूसरे मुकाम पर जाने का नाम है—

ख़िज्र हो या कोई ईसा हो मगर मरना है।
सबको इस मंज़िले हस्ती से सफ़र करना है॥

साहिबे ताज गये, मुफ्लिसो मुहताज गये॥
हम भी जाते हैं अगर कल न गये, आज गये॥

तग़रल : तो क्या तुझे अपने मरने का ग़म नहीं ?

शहरयार : कोई नहीं, ज़रा नहीं ! मगर हां, अफसोस है तो सिर्फ यह कि जंग के मैदान में किसी शरीफ़ बहादुर की तलवार से मरने के बदले तेरे जैसे नामर्द दुश्मन की दग़ाबाज़ी से जिन्दगी गंवाता हूं और इस दग़ाबाज़ दुनिया में गरीब तसनीम को अकेली छोड़ जाता हूं।

तग़रल : ओह तसनीम ! जिन्दगी में भी तसनीम और मौत के वक़्त भी तसनीम ! ओ बदनसीब !—

तसनीम नज़र आएगी अब मेरी बगल में।
तू कब्र में होगा, वह मेरे रंग महल में।।

शहरयार : कभी नहीं, हरगिज़ नहीं। फरिश्ते बेराह हो जायें, सितारे सियाह हो जाएँ, चाँद-सूरज मिलकर टकरा जायें और तबाह हो जाएँ, मगर तेरी उमीदों की दुनिया हमेशा अंधेरी रहेगी। तसनीम मेरी है और मेरी रहेगी।

[तसनीम आकर शहरयार से लिपट जाती है]

तसनीम : हां, तेरी, तेरी और हमेशा तेरी रहूँगी।

तग़रल : कमबख़्त ! नामुराद ! क्या तू इस बदनसीब की लाश पर मातम करने आई है ?

तसनीम : नहीं, मैं यह कहने आई हूं कि मौत हर वक़्त हमला करने को तैयार है और उसका वह हाथ जिसने बड़े-बड़ों को मिटा दिया, अभी तक वैसा ही क़हर ढाने वाला है—

अगर जानते हो कि तुम इक बशर हो।
अगर अपनी ताक़त की तुमको ख़बर हो॥
तो हस्ती मिटाओ न इस बेख़ता की।
करो रहम रहम इक सिफ़त है ख़ुदा की॥

शहरयार : वह रहम जो शैतान के आगे हाथ फैलाकर, गिड़गिड़ाकर

हासिल किया जाय, मुझे नहीं चाहिए।

तसनीम : नहीं, प्यारे ठहरो! मुझे बोलने दो, किस्मत आज़माने दो।

सरिश्तेदार : नहीं, जिसके लिए अदालत से सज़ाए मौत का हुक्म हो चुका है, उसके लिए हम कुछ नहीं कर सकते!

तसनीम : अगर फौजी अदालत से मोत का हुक्म हो चुका है तो मैं तुम्हारी इन्सानियत की अदालत में अपील करती हूं।

शहरयार : तसनीम! अपने मुंह के मोतियों को इन कुत्तों के आगे न डाल! तू कैसी सौदाई है! क्या तू मेरे शत्रु के सामने, मरते वक़्त, मुझे शर्मिंदा करने आई है? बस कर। मुझे मरने दे।

तसनीम : दो मिनट! सिर्फ दो मिनट मुझे और बोलने दो।

शहरयार : नहीं, नहीं, तसनीम नहीं!

तसनीम : मेरे प्यारे, तुम क्या कहते हो?

शहरयार : यही कि मैं बदनसीब हूं! दुनिया जवाहरात से भरी हुई है। अक़्ल की रोशनी में मेरे बाद तुम अपने लिए कोई अमूल्य हीरा पसंद कर लेना। खुदा हाफ़िज! जा, जी और खुश रह!

तसनीम : प्यारे, तुम मेरी मुहब्बत को बाज़ारी औरतों की मुहब्बत की तरह जानते हो? मुझे बेवफ़ा समझते हो?

सरिश्तेदार : वक़्त पूरा हुआ!

तग़रल : हट जाओ!

तसनीम : नहीं, हरगिज़ नहीं, जब तक मैं लाश बनकर अपने प्यारे के क़दमों पर गिरकर जान न दे दूं, मुझे कोई नहीं उठा सकता।

तग़रल : देख, मैं फिर कहता हूं कि इस कमबख़्त के लिए अपनी जान न दे।

तसनीम : और मैं भी यही कहती हूं कि चंद-रोज़ा ज़िन्दगी के लिए ईमान न दे!—

चार दिन है शान-ओ-शौकत चार दिन का जब्र है।
फिर खुदा है और तू है, फिर अंधेरी क़ब्र है॥

तग़रल : बेवकूफ़! क्या इस आसन्न-मृत्यु के साथ तू भी अपनी जिन्दगी से हाथ धोयेगी ?

तसनीम : छिन गई आँखें तो फिर इस जिन्दगी का क्या करूं।
जिन्दगी का सुख गया तो जिन्दगी का क्या करूं॥
औरतों का फ़र्ज है और दीन है, ईमान है।
ऐसे मरने पर मेरी सौ जिन्दगी कुर्बान हैं॥

तग़रल : नहीं हटती, तो उसके साथ इस मुरदार को भी जहन्नम पहुंचा दो !

तसनीम : ओ फरिश्तो ! मेरे फरिश्ते को बचाओ !

[जनरल क़हरमान अन्दर से फायर करता है। गोलियां लगने से जल्लाद मर जाते हैं। जनरल क़हरमान के साथ उसके सिपाही आते हैं। खलबली मच जाती है और तग़रल भाग जाता है]

[पटाक्षेप]

तीसरा अंक

पहला दृश्य

[जंगल का भीतरी भाग]

सहील : देखो, हम कैसे प्राकृतिक सौन्दर्य-स्थान पर रहते हैं ! बुलबुलों की कुलेल, कोयल की कूक, सारे दरख़्त सजल, हरी-भरी हरियाली ! फल-फूल अपनी बहार दिखाते हैं, दिल को कैसा आनन्द पहुंचाते हैं !

हशाम : बेशक ! खुदा कलाकार हैं, अजीब बहार है ।

सहील : जहान भर का सामाने-राहत यहीं है ।
यह जंगल नहीं है, बहिश्त बरीं[1] है ।।

(गाता है)

इस जंगल में जो कोई सैर को आवे । आनन्द पावे,
मन बहिलावे ।
जमा है रंग-बिरंगी कुदरत पर हूं निसार, लालाज़ार[2]
हर तरफ छाई है बहार !
दिल इसमें मगन है ! चमन स्वर्ग-सदन है, माह[3] ख़तन
प्यारी फबन, मन ललचावे !
इस जंगल में……………

१. महान स्वर्ग २. रंग-बिरंगी प्रकृति ३. रूपहली चाँदनी

[शमसा के सिपाही आते हैं]

पहला : यही है, पकड़ लो ! (सहील को पकड़ते हैं)

सहील : नहीं, नहीं, मैं नहीं जाऊंगा।

हशाम : छोड़ दो, बदकारो, इसे छोड़ दो।

सिपाही : बदमाश ! बंद कर तकरार। (सहील को पकड़ ले जाते हैं। हशाम ज़ख़्मी हो जाता है)

हशाम : खूनी लुटेरे ! चोर ! दौड़ो ! दौड़ो !

ताहिरा : हशाम, तुम ख़ून में तर हो !

हशाम : मेरी फ़िक्र छोड़ो, मुझे मरने दो। जाओ, सहील को दुश्मनों के पंजे से छुड़ाओ !

ताहिरा : क्या सहील गिरफ्तार हो गया ?

हशाम : अफ़सोस ! किस्मत ! मजबूरी !

ताहिरा : नहीं, नहीं, वह कभी खत्म नहीं होगा। जब तक मैं जिन्दा हूं, उसे कोई नहीं मार सकता।

शहरयार : जल्दी चलो और अपने प्यारे बच्चे को दुश्मन से बचाओ।

साथी : अब क्या करना चाहिए ?

शहरयार : हिम्मत और मदद ! (सब जाते हैं।)

[पटाक्षेप]

दूसरा दृश्य

[शमसा का महल]

शमसा : क़तलू, क्या खबर लाये हो ?

क़तलू : मैं ऐसी खबर लाया हूं जिसको सुनकर उछल पड़ोगी !

शमसा : वाक़ई, कोई ऐसी बात है !

क़तलू : बड़ी खुशी की बात है ।

शमसा : जल्दी कहो, नहीं तो मुझे पागलपन की बीमारी हो जायगी ।

क़तलू : तो सुनो, सहील हमारे हाथों में गिरफ्तार हो गया !

शमसा : यह मैं क्या सुनती हूं !

क़तलू : जो मैं कहता हूँ !

शमसा : बस तो जल्दी करो ।

आस्तीन उलटो, छुरी लो, आज दर्दे-सिर गया ।
आगे फिर जल्दी कहो मुझ से कि मूज़ी मर गया ।।

क़तलू : नहीं, नहीं ! इस तरह मारना अच्छा न होगा !

शमसा : क्यों ? इसमें क्या हानि है ?

क़तलू : एक खास भेद है ।

शमसा : आखिर क्या है, मैं भी तो सुनूं ।

क़तलू : अगर यूं खुले तौर पर सहील को क़त्ल कर देंगे तो रिआया ज़रूर खिलाफ़ हो जायगी, यह डर है कि बग़ावत पर सर उठायेगी !

शमसा : फिर क्या उपाय है जिससे यह मूज़ी खत्म हो और मुझे चैन हो ।

क़तलू : जिस मकान में सहील को कैद किया है, कल रात को बारह बजे सुरंग के बारूद से उसे उड़ा देंगे और यह कह देंगे कि अचानक यह मकान गिर गया !

शमसा : बहुत खूब राय है ! अच्छा जाओ, सुरंग का इन्तज़ाम करो।

क़तलू : मैं अभी जाता हूँ। मगर वह शादी का वायदा ?

शमसा : घबराओ नहीं, वह मुझे याद है। ज़रा सहील का खात्मा हो लेने दो, फिर शौक़ से शादी करना।

क़तलू : बहुत अच्छा ! (जाता है)

शमसा : (स्वगत) ओ बेवकूफ़ इन्सान ! शादी किससे ? मुझसे ? जिसने सल्तनत और हकूमत के लिए अपने भाई वर्जस को तेरे ही हाथों क़त्ल कराके ठिकाने लगा दिया ! उससे तू शादी करने आया है ! जरा सहील का खात्मा हो जाने दे, फिर तेरा भी खात्मा कर दिया जायगा।

मैं क्या बला हूं, अभी जानता नहीं मुझ को।
ग़ज़ब की आग हूं, पहचानता नहीं मुझ को ।।
मेरी कटार किसी दिन है, और गला तेरा।
मैं वह बला हूं कि पी जाऊंगी लहू तेरा ।।

[पटाक्षेप]

तीसरा दृश्य

[मुमताज़ का मकान । कमरे में अलमारी है]

मुमताज़ : (स्वगत) मालूम नहीं मिसेज़ खैरसल्ला अभी तक क्यों नहीं आई ! मैंने उनके लिए पार्टी की है और उन्होंने थेटर चलने का वायदा किया है ।

मेम : (आकर) मुमताज, मुझे माफ़ करना ! वैसे टाइम कुछ ऐसा ज्यादा नहीं हुआ है !

मुमताज : आहा ! आप आ गईं । कोई बात नहीं, टाइम कुछ ज्यादा नहीं हुआ है ।

मेम : मगर इस वजह से एक बढ़िया बात हाथ आ गई ।

मुमताज : फरमाइए, वह क्या बात है ?

मेम : मैं जैसे ही आपके गार्डन के अन्दर आई तो एक दरख्त के नीचे क्या देखती हूं कि मेरे मियाँ खैरसल्ला बहरूपिया बने फिर रहे हैं और आपके पति उनकी मदद कर रहे हैं !

मुमताज़ : यह तो बहुत मजे की बात है !

मेम : और वे संभवत : यहीं आवेंगे ।

मुमताज़ : यह कैसे मालूम हुआ ?

मेम : उनकी बातों से मालूम हुआ ।

मुमताज़ : अगर यहाँ कुछ रंग जमायेंगे तो हम भी उन्हें खूब बनायेंगे ।

मेम : देखो तो सही, कैसा चुटकियों में उड़ायेंगे । देखिए, वे आ रहे हैं !

मुमताज़ : अच्छा, तो वहाँ कब चलोगी ?

मेम : मैं बिल्कुल तैयार हूँ।

खैरसल्ला : (भेस बदले हुए, आकर, स्वगत) अब मुझे मुरदे की खबर पहुँचानी चाहिए। (प्रकट) हाय ! हाय ! बड़ा ग़ज़ब हो गया, बेचारा मर गया !

मुमताज़ : क्यों साहब, आप क्या फरमाते हैं ?

खैरसल्ला : माशाअल्ला आपके कौन थे ?

मुमताज़ : मेरे पति थे !

खैरसल्ला : मुझे कहते हुए रोना आता है !

मुमताज़ : मुझे तुम्हारे रोने पर हंसी आती है !

खैरसल्ला : मगर हंसने के बाद आप ज़रूर रोयेंगी।

मुमताज़ : उम्मीद तो नहीं, मगर आप कहें तो सही !

खैरसल्ला : वह बेचारा मर गया !

मुमताज़ : बस, इसलिए आप रोते हैं !

खैरसल्ला : (स्वगत) लो, यहाँ तो कुछ असर ही नहीं हुआ !

मुमताज़ : क्यों मिसेज़, आपकी इस मामले में क्या राय है ?

मेम : अजी जाने दो, अगर शौहर मर जाय तो मैं समझूंगी, घर का कुत्ता मर गया।

खैरसल्ला : (स्वगत) देखो कुतिया मुझे कुत्ता बताती है !

मुमताज़ : फिर भी इस खबर से मेरे नाजुक दिल को बहुत सदमा पहुंचा है !

खैरसल्ला : यह तो आपकी बातों से मालूम होता है ! मगर अब क्या करोगी ?

मुमताज़ : करूंगी क्या ! कोई और मुसटंडा मरद कर लूंगी।

खैरसल्ला : (स्वगत) यह तो मुझे पहले ही यक़ीन था।

मुमताज़ : क्यों साहब, आपका इस मामले में क्या ख्याल है ?

खैरसल्ला : जो आपका और इनका ख्याल है।

मुमताज़ : मैं मियां के मरने की खुशी में जलसा कराऊंगी। पार्टी दूंगी, डांस करूंगी !

खैरसल्ला : (स्वगत)भई वाह ! अच्छा मियां का सोग करती है !

मेम : अगर मेरा शौहर भी जहन्नुम रसीद हो जाय, मैं भी कोई और मरद करलूं, खूब मज़े उड़ाऊं !

खैरसल्ला : (स्वगत) देखो, सलाह भी मुझ से ही पूछती है ! (प्रकट) भला रंडवा मरद करोगी या कंवारा ?

मेम : कंवारा हो. मगर बेवकूफ़ और मालदार हो !

खैरसल्ला : तो बेवकूफ तो एक मैं ही मौजूद हूँ !

मेम : एक और भी है !

खैरसल्ला : वह कौन ?

मेम : मेरा शौहर खैरसल्ला !

खैरसल्ला : मगर मैंने सुना है कि वह बड़ा होशियार है।

मेम : अजी, वह तो बिल्कुल गधा है। एक दिन मैं डाक्टर मुहब्बत खाँ से गाल और किस खेल खेल रही थी···

खैरसल्ला : यह खेल कैसा होता है ?

मेम : इसका नाम है किसिंग।

खैरसल्ला : फिर क्या हुआ ?

मेम : इतने में मियां आ गए। मैंने झूठ ही दांत के दर्द का बहाना करके टाल दिया।

खैरसल्ला : (स्वगत) बहुत तेज़ी की ! अगर मुझे मालूम होता तो गला ही दबा देता। (प्रकट) अच्छा, ग़ैर मर्द को तुमने चुम्बन दिया !

मेम : इससे क्या हुआ ! जब मैं कंवारी थी, एक चुम्बन की दो गिन्नी लेती थी। अब चूंकि मेरा व्याह हो गया है, इसलिए अब एक चुम्बन की एक गिन्नी लेती हूँ।

खैरसल्ला : भई वाह ! औरत क्या है, गोया चुम्बनों की मार्कीट है, जितने का चुम्बन चाहो, ले लो !

मेम : कहिये, आपको कहां का चुम्बन चाहिए ?

खैरसल्ला : मेरे पास तो हाफ़ गिन्नी है।

मेम : तो हाफ गिन्नी में हाथ का चुम्बन दूंगी, चलो जल्दी निकालो।

खैरसल्ला : मगर इस वक्त मुझे नहीं चाहिये।

मेम : क्यों नहीं चाहिये ? आपको ज़रूर चुम्बन लेना पड़ेगा।

खैरसल्ला : नहीं। कुछ ज़बरदस्ती है ?

मेम : बेशक ! पहले भाव क्यों पूछा ! तुम यूं न मानोगे ! **(हाथ से गिन्नी छीन लेती है)** अब हाथ का चुम्बन लेना है तो लो वरना यूं ही चल दो।

खैरसल्ला : अच्छा साहब, हाथ ही का चुम्बन दे दो ! **(मेम का हाथ चूमता है)**

मेम : क्यों साहब, चुम्बन कैसा मीठा है ?

खैरसल्ला : चुम्बन तो मीठा था, पर गिन्नी लेने से कड़वा हो गया !

मेम : अच्छा साहब, फिर कभी चुम्बन का शौक़ हो तो ज़रूर आइएगा। **(दोनों चली जाती हैं)**

खैरसल्ला : **(स्वगत)** भई वाह ! लोग दुआएं मांगते हैं कि खुदा करे, हमें कमाऊ बेटा नसीब हो ! मगर हम को बगैर दुआ मांगे कमाऊ जोरू मिल गई ! अगर चुम्बनों की एक जनरल ट्रेडिंग एजेंसी खोल दूं तो यारों का पलाओ और मटन-चाप कहीं नहीं गया !

माशाअल्ला : **(आकर)** मरने की खबर लेकर आये हो, या खुद ही मर रहे हो ?

खैरसल्ला : वाह ! खूब मज़ा रहा !

माशाअल्ला : मैं क्या पूछता हूं ?

खैरसल्ला : अरे यार ! **(हंस-हंसकर हंसता जाता है)**

माशाअल्ला : क्या बक रहा है ?

खैरसल्ला : बंदा बक नहीं रहा है, सच कह रहा है।

माशाअल्ला : अरे, तूने और उसने क्या-क्या कहा ?

खैरसल्ला : उसने कहा, मेरा चुम्बन ले !

माशाअल्ला : हैं ! उस बेशरम ने यह कहा !

खैरसल्ला : हां, तो मुझे चुम्बन लेना ही पड़ा।

माशाअल्ला : क्या कहा ? ज़लील, बदमाश ! तू ने उसका चुम्बन लिया !

खैरसल्ला : उसने जब्रन दिया तो मैंने ले लिया।
माशाअल्ला : मगर तुझे चुम्बन लेने का क्या हक़ था !
खैरसल्ला : हक़ क्यों नहीं था? आधी गिन्नी जो दी थी !
माशाअल्ला : मगर तूने उसका चुम्बन लिया किस तरह !
खैरसल्ला : देख, इस तरह (**माशाअल्ला का मुँह चूम लेता है**)।
माशाअल्ला : गैरत कर, डूब मर! तुझे मेरी बीबी का चुम्बन लेते हुए शरम न आई?
खैरसल्ला : अरे, तेरी बहन और मेरी बीवी !
माशाअल्ला : अरे, पहले चुम्बन लिया और अब पूरी औरत हज़म करना चाहता है !
खैरसल्ला : अरे, तेरी नहीं, मैंने अपनी बीवी का चुम्बन लिया !
माशाअल्ला : मैंने तो यह समझा कि तूने मेरी ही बीवी पर हाथ साफ किया है। खैर, इस बात को दफ़ा कर। बोल मेरे मरने की खबर सुनकर उस पर क्या असर हुआ?
खैरसल्ला : उसने कहा कि एक कुत्ता मर गया ! और खूब हंसी और खुश हुई।
माशाअल्ला : बेवफ़ा कुतिया ! तुझे ग़म के बदले खुशी और रोने की बजाय हंसी !
खैरसल्ला : जनाब, उसने कहा कि हर वीरवार को घी के चिराग जलाऊंगी। रत जगा मनाऊंगी और उसकी कब्र पर ढोलक बजाऊंगी।
माशाअल्ला : इस जिन्दगी पर लानत ! बस झगड़ा ही मिटाये देता हूँ, मरने के लिए तैयार हूँ।
खैरसल्ला : लो, इस तरफ का दरवाज़ा बंद है और उधर से वही आती है। ज़रा अब छुप जाना चाहिये।
मेम : (आकर, दूर से देखकर) अच्छा जी, आप अभी यहीं मौजूद हैं ! देखा जायगा।

खैरसल्ला अलमारी में छिपजाता है।

मुमताज़ : चलो, चलो ! अब थेटर का वक्त हो गया।

मेम : थेटर से ज्यादा तो यहीं तमाशा हो रहा है !

मुमताज़ : वह क्या ?

मेम : कबाट के पीछे मेरे मियां छिपे हैं। ज़रा तुम मरद बनकर मुझसे इश्क-ओ-मुहब्बत की बातें करना।

मुमताज़ : हां, हां, ठीक है (**मरद के भेस में निकट आकर**)मेरी जान ! किस ख्याल में हो ?

मेम : इस खिताब से तो आप मुमताज़ को ही पुकारा करें।

खैरसल्ला : (स्वगत) और यह कौन बदमाश है ? कहीं वह तो नहीं जिसका जिक्र माशाअल्ला ने किया था !

मुमताज़ : तो क्या आपको मेरी मुहब्बत से इनकार है ?

मेम : देखिए, मैं एक औरत हूं। आपको मुझसे ऐसा कलाम नहीं करना चाहिए।

खैरसल्ला : (स्वगत) बेशक ! सच कहती है !

मुमताज़ : तुमको हमारी मुहब्बत का यकीन नहीं है ?

मेम : आप तो मुमताज़ से मुहब्बत करते हो !

मुमताज़ : तो क्या हुआ ! मुझे तुम से भी मुहब्बत का इक़रार करना चाहिये।

खैरसल्ला : (स्वगत) हरगिज़ नहीं।

मुमताज़ : क्यों, जवाब नहीं देतीं ?

खैरसल्ला : (स्वगत)मैं जो जवाब दे रहा हूं।

मेम : भला कसम खाओ !

खैरसल्ला : (स्वगत) अर-र-र ! यह तो फ़िसल चली ! या सर्वशक्तिमान् खुदा मेरी बीवी को बचाना !

मुमताज़ : अपने दिल की कसम, तुम्हारी मुहब्बत की कसम !

मेम : तब तो…

खैरसल्ला : (स्वगत) ओह ! काम बिगड़ गया ! आखिर गई न अपनी जात पर !

मुमताज़ : और मैं इस मुहब्बत पर पुष्टि की मोहर लगाता हूं (चूम लेता है)

खैरसल्ला : (स्वगत) तू ने चुम्बन दे दिया! अरे गिन्नी तो ले ली होती!

[माशाअल्ला आ जाता है]

खैरसल्ला : तू यहां आ गया!

माशाअल्ला : मैं समझा! यहीं है वह ज़ाला[1] जिसने मेरा घर घाला! (मुमताज़ से) क्यों जी, यहां क्यों आए हो?

मुमताज़ : हमारी खुशी।

माशाअल्ला : खुशी का बच्चा! दूर हो, नहीं तो खा जाऊंगा कच्चा!

मुमताज़ : बस दिल ने चाहा और हम चले आये!

माशाअल्ला : अबे, तुझे इस घर में आने का क्या हक़ है?

मुमताज़ : हक क्यों नहीं, मेरी माशूका का घर है।

माशाअल्ला : कौन माशूक़ा?

मुमताज़ : मस्ते नाज़, सरापा[2] नाज़, मेरी प्यारी मुमताज़!

माशाअल्ला : तेरी प्यारी कैसी? क्या तूने उससे शादी की है?

मुमताज़ : लो, मुफ्त में एक हसीन औरत हाथ आए तो शादी करने की क्या ज़रूरत है?

माशाअल्ला : तुझे नहीं मालूम, वह मेरी बीवी है।

मुमताज़ : तुम्हारी हो या तुम्हारे बाप की हो मगर आजकल तो हमारी है।

माशाअल्ला : बेशरम! मैं तुझे अभी खत्म करता हूं। पाजी, देख तू मेरे हाथ से क्योंकर बचता है!

खैरसल्ला : (स्वगत) चलो रूस और जापान की जंग छिड़ गई!

मेम : (पिस्तौलें देती हुई) यह लीजिए, और आप यह लीजिए। अच्छा, दोनों साहब अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो जायें!

१. बदमाश. २. सर से पांव तक

माशाअल्ला : मैं यह जगह लेता हूं।

मेम : (मुमताज़ से) आप इस जगह खड़े हो जायें।

खैरसल्ला : (स्वगत) अरे, यहां कहां खड़ा होता है! वह पिस्तौल चलायेगा तो मेरा खात्मा हो जाएगा।

मेम : अच्छा देखो जब मैं एक! दो! तीन! कहूं तो अपने-अपने पिस्तौल से एक-दूसरे पर फ़ायर करना। रेडी! वन! टू! ठहरो, यह जगह ठीक नहीं है, तुम यहां से निशाना बांधो!

(छिपे हुए खैरसल्ला के पास खड़ा करती है)

खैरसल्ला : (स्वगत) ओ, यह कमबख्त यहां फिर आ गया!

मेम : रेडी! वन, टू, थ···! यह जगह भी अच्छी नहीं। तुम यहां आओ।

(माशाअल्ला को खैरसल्ला के सामने खड़ा करती हैं)

खैरसल्ला : (स्वगत) बेटा खैरसल्ला, अब जान की खैर नहीं! **(अपना भेस उतार देता है)**

मेम : रेडी! वन···टू···थरी!

माशाअल्ला : (खैरसल्ला को देखकर) हैं! कौन खैरसल्ला!

खैरसल्ला : (निकलकर) अरे मार, मार! इसने तेरी ही नहीं, मेरी जोरू भी हजम की हुई है!

माशाअल्ला : क्यों बे लंगाड़े! तूने कितने शरीफ़ों के घर बिगाड़े?

खैरसल्ला : देखो, बदमाश मूंछों पर ताव देता है! इसकी मूंछें उखाड़े लेता हूँ! **(मुमताज की नक़ली मूंछें उखाड़ता है)**

माशाअल्ला : हैं! कौन मुमताज़!

मुमताज़ : क्यों मियां! कैसा बनाया!

मेम : (खैरसल्ला से) क्यों मियां! गिन्नी कैसे वसूल की!

(सब मिलकर गाते हैं)

कैसा डाल जाल, चली हमने चाल!
पिया लो बोलो। हारी-हारी बोलो जी!
तूने मुझको ठगा, मुझे झांसा दिया!
कहो कैसे दिवाने बने! कैसे सयाने बने!

बने बेशक बने ! फंसे बिल्कुल फंसे !
बलि जैयाँ, ग्रो सैयाँ ! ये बैयाँ डारू ं गले बार-बार !
कर कर दिलेरियाँ, प्यारे मेरे शाह, हम बेगमां !
हाँ कैसा डाल जाल…

माशाग्रल्ला : यह क्या, मुमताज़, प्यारी ! देखो, तुम्हें ऐसा नहीं करना है। बस चुप रहो !

मुमताज़ : देखो, अगर हमारी हरकतें आपको पसंद नहीं तो हमारा यह रास्ता और तुम्हारा वह रास्ता ! (दोनों जाती हैं)

(माशाग्रल्ला और खैरसल्ला मिलकर गाते हैं)

हुआ बाइकाट ! मिलायें पाट ! गई जोरू रे, तेरी मेरी जोरू रे !
माँगे ड्राँस के बूट, फंसी डाली लूट, लावे न सूट, जोरू जावे रूठ।

गई घर से बला, पाप सर से टला !
अब यह टोपी पाजामा, मिला है ग्रमामा,
सजा कर करें ठाट-बाट !
हुआ बाइकाट…

(जाते हैं)

[पटाक्षेप]

चौथा दृश्य

[महल का एक भाग]

(क़हरमान अपने साथियों के साथ बात कर रहा है)

क़हरमान : अफ़सोस ! क्या सहील और बदनसीबी साथ-साथ पैदा हुए हैं, जो अभी तक वह उसका पीछा नहीं छोड़ती है ? मैंने विश्वासपात्र शख्स से सुना है कि वह फिर शमसा के सिपाहियों द्वारा गिरफ्तार हो गया है !

पहला : वाक़ई, यह दर्दनाक और भयानक खबर है !

क़हरमान : बदकार क़तलू की सलाह से शमसा ने उसे संगीन मकान में कैद किया है और आज ही रात के बारह बजे बारूद से मकान को उड़ा देने का निश्चय ठहराया है।

दूसरा : खुदा ग़ारत करे शैतान को !

पहला : जिसमें रहता हो, उस मकान को, जिसमें बसता हो, उस जहान् को !

क़हरमान : मेरे बहादुरो ! इस मामले में खूब सोच-विचार करो !

पहला : अफ़सोस ! हम लोग ज़ालिम शमसा और नापाक क़तलू के लिए बीसियों इन्तज़ाम कर सकते हैं, मगर ताहिरा और मज़लूम सहील के लिए कुछ नहीं कर सके ! जिस तरह आपने ऐन मौक़े पर पहुंचकर शहरयार की जान बचाई थी, उसी तरीके से इन दोनों की भी जान बचाई जाय !

क़हरमान : ज़रूर ऐसा ही होगा। हम बारह बजे से पहले जाकर हमला कर देंगे और उन्हें मूज़ी के पंजे से छुड़ायेंगे।

तीसरा : मुझे आपकी यशस्वी ज़ात से पूरी उम्मीद है।

क़हरमान : कसम है इस तलवार की जिसे चूमकर मर जाना हर सिपाही की आखिरी आरज़ू है, वफ़ादारी और ईमान के लिए सारी ज़िन्दगी मिटा दूंगा। अगर मेरे पास हज़ार जानें हों तो ताहिरा और सहील पर नसार कर दूंगा।

चौथा : और हम भी अपने ईमान को दृढ़ और दिल को कड़ा करके आपका साथ देंगे।

पहला : अगर हम सहील को बचाने की कोशिश न करें और शत्रु से भय खायें तो ऐसी कायरता की ज़िन्दगी से मौत बेहतर है।

दूसरा : मैं भी इसका समर्थन करता हूं। मासूम सहील को बचाने के लिए मैं तो मैं, मेरी लाश भी उठकर दुश्मनों पर हमला करेगी।

तीसरा : हमारी यकदिली और सचाई, वह संगीन मकान तो क्या, अगर भारी-से-भारी पहाड़ भी होंगे, उड़ा देंगी।

क़हरमान : ऐ मेरे शरीफ दलेरो, मैं कसम खाता हूँ कि जब तक इस सर में स्वाभिमान का जनून है और जब तक इन रगों में शरीफ़ माँ-बाप का खून है, जिस्म में जान और हाथ में तलवार है, और उसमें धार है, जनरल क़हरमान सहील की जान जरूर बचायेगा—

तैयार हर तरह से दिलेर-ओ-जवान हूं।
ईमान की हूं तेग़, वफ़ा की ज़बान हूँ॥
हिम्मत का हाथ हूँ, तो दलेरी की जान हूं।
टूटूंगा क़हर बनके, अगर क़हरमान हूं॥

(सब जाते हैं)

[पटाक्षेप]

पाँचवाँ दृश्य

[संगीन महल (कमरा) जहां सहील कैद है। ताहिरा और शहरयार दीवार के बाहर खड़े है]

ताहिरा : ऐ बेरहम संगीन मकान ! ऐ खूनी दीवारो, क्या तुमको बनाते वक्त मज़दूरों ने अच्छी तरह पानी नहीं पिलाया था जो एक मासूम बच्चे के खून से अपनी प्यास बुझाना चाहते हो ! चारदीवारी में उसे क़ैद किया है ! वह तो उसके लिए बड़ी बेआराम जगह है । तुम सब मेरी दर्दभरी आहों से नरम हो जाओ, मेरे बच्चे पर रहम खाओ !

शहरयार : बानो, सब्र कीजिये । शुक्र है कि इस तरफ की दीवार में एक ईंट सरकी हुई है। मैं जाकर कोई वज़नी हथौड़ा लाता हूं और अन्दर जाने का रास्ता बनाता हूं !

ताहिरा : अगर तू जल्दी न आया तो मैं अपने सर की टक्करों से इस दीवार में रास्ता बनाऊंगी और अपने बच्चे को छुड़ाऊंगी।

[अचानक शमसा आती है]

शमसा : कौन ताहिरा ?

ताहिरा : अफ़सोस ! शमसा ?

शमसा : मेरी दुश्मन ! मेरे दुश्मनों की दोस्त !

ताहिरा : रहम ! रहम ! शमसा रहम !

शमसा : मैं नहीं समझी, बेवकूफ़ ! तेरे यहाँ आने का मतलब क्या है ?

ताहिरा : शमसा, मेरा बच्चा मुझे दे दे ! देख, अपने भतीजे का खून

न कर। खुदा से डर !

शमसा : क्या तू चाहती है कि उस सांप के बच्चे को छोड़ दूं और वह जिन्दा रहकर मुझे डसे !

ताहिरा : नहीं, नहीं, तुझे रहम करना चाहिये। वह मेरा नहीं, तेरा भतीजा है।

शमसा : हां, हां, मेरा भतीजा है। इसीलिए उसका यह नतीजा है।

ताहिरा : यह काम काबिले-नफ़रत है।

शमसा : तू बेवकूफ़ औरत है !

ताहिरा : हाँ, औरत के लिहाज़ से मैं और तू एक हैं, मगर तेरे ख्याल बद और मेरे नेक हैं। तू ज़ुल्म को तत्पर, मैं रहम की चाहत पर—

तेरी जुदा पसंद है, मेरी जुदा पसंद।
तुझको ख़ुदी पसंद है, मुझको खुदा पसंद।।

शमसा : अच्छा, अगर अपनी सलामती चाहती है तो यहां से चली जा !

ताहिरा : नहीं, नहीं, मुझे अपने दरवाज़े से खाली न फेर ! देख, वह औरत जिसने अपने खाविन्द और बच्चे को अपनी आँखों के सामने कटते देखा और उफ़ तक न की, वह आज अपने मालिक के बच्चे के लिए गिड़गिड़ाती है।

शमसा : तू झख मारती है।

ताहिरा : ओ शमसा, शमसा ! मेरा बच्चा मुझे दे दे।

शमसा : दूंगी, मगर ज़िन्दा नहीं, मुरदा।

ताहिरा : अरी ज़ालिम, ले मैं अपना दामन तेरे आगे फैलाती हूं। सहील की ज़िन्दगी की भीख मांगती हूं।

शमसा : मैं तुझे भीख में ठोकर देती हूं ! **(ठोकर लगाकर चली जाती है)**

ताहिरा : हाय !

शहरयार : (आकर) चलिए, अब जल्दी कीजिए !

तग़रल : कौन ? शहरयार और ताहिरा !

[तग़रल और शहरयार लड़ते हैं। शहरयार तग़रल को परास्त कर देता है। तग़रल के सिपाही का शहरयार से द्वन्द्व होता है। तग़रल मकान के अन्दर भाग जाता है। तभी क़हरमान आकर फायर करके सिपाही को मार डालता है। धड़धड़ा कर मकान गिरता है और तग़रल नीचे दबकर मर जाता है]

शमसा : (आकर) फतह ! फतह ! खुशी ! खुशी !

क़हरमान : (सामने आकर) नहीं, पराजय ! हार !

शमसा : तू कौन ?

क़हरमान : मैं !

शमसा : कौन ? दग़ाबाज़ क़हरमान !

क़हरमान : उधर देख !

शमसा : कौन ? ताहिरा और सहील फरार !

क़हरमान : बस, खबरदार !

[सब जाते हैं और ऊपर से पर्दा आहिस्ता-आहिस्ता गिरता है]

चौथा अंक

पहला दृश्य

[मैदान]

(सहील और उसके साथी फौजी परेड करते हुए खड़े हैं)

सहील : क्यों दोस्तो, अगर दुश्मनों ने सर उठाया, लड़ने-मरने का मौक़ा आया तो तुम क्या करोगे ?

पहला : हम क्या करेंगे ! अगर वह पहाड़ होगा तो हम उस पर पिल पड़ेंगे।

दूसरा : अगर वह दरिया होगा तो हम उसमें कूद पड़ेंगे।

तीसरा : अगर वह आग हुई तो उसमें जल मरेंगे।

चौथा : काफ़िर के दो हों हाथ जो मैं दूं जनेव का।
मुंह फेर दूं इक आन में थप्पड़ से देव का।।
मैदाने-जंग उसी का है, जिसका मैं साथ दूं।
रुस्तम भी बोल जाय अगर एक हाथ दूं।।
देखे जो आंख उठाके तो सूरत बिगाड़ दूं।
दुश्मन पहाड़ हो तो मैं जड़ से उखाड़ दूं।।

सब : फिर आपका क्या हुक्म है ?

सहील : हमें तुम अपनी क़वायद दिखाओ। (सब मिलकर गाते हैं)
लश्कर चला है बनकर यह इस तरह दिवाना।
घनघोर जैसे गरदों पे हो बादलों का आना।।
मन में जर्मन, यूनानी, रशियन, पुरफ़न जापानी।
दुश्मन ते ग़, ईरानी, सबसे यह पलटन है असफ़हानी।।
लश्कर···(सब जाते हैं)

[पटाक्षेप]

दूसरा दृश्य

[मैदाने-जंग]

शमशा : (स्वगत) अफसोस ! दुश्मन आँधी की तरह मंडरा रहा है ! हार-जीत में आशा-निराशा के बादल मेरे सर पर छा रहे हैं। मेरी अक्ल बांझ हुई जाती है। कोई तदबीर समझ में नहीं आती है। क़तलू ने भी कोई क़ासिद नहीं भेजा जिससे जंग का नतीजा मालूम होता। (किसी को आता देखकर) हाँ, वह कोई आ रहा है।

क़ासिद : (आकर) मलका-ए-आलम का दर्जा बुलंद ! कर्नल दलेर जंग के सौ बहादुरों ने दुश्मनों को घास की तरह काट डाला !

शमसा : आ हा ! खुशी ! खुशी !

क़ासिद : हजूर, रसाल बेग के दस्ते ने भी बहुत सख्त नुकसान पहुंचाया !

शमसा : मुबारक ! मुबारक क़ासिद, तू बहुत अच्छी खबर लाया ! आज से मैंने तुझे कर्नल बनाया !

क़ासिद : अगरचे शुजाअत खां के रिसाले ने भी पानी की तरह दुश्मनों का खून बहाया……

शमसा : मगर ! हाँ, हां आगे बोल।

क़ासिद : हजूर, अफ़सोस !

शमसा : हैं ! हैं ! अफ़सोस कैसा ?

क़ासिद : नामुराद शहरयार ने इस जोर से हमला किया कि हमारी जीती बाजी पलट गई और आधी से ज्यादा फौज कट गई !

शमसा : कमीने ! नमकहराम !

क़ासिद : मगर हज़ूर, मेरा कसूर ?

शमसा : निकल जा यहां से बेशऊर !

क़ासिद : हज़ूर, हज़ूर ! नामर्द सिपाही भागे जाते हैं और शूरवीर 'फतह ! फतह !' पुकारते पीछे चले आते हैं।

शमसा : ओ कामयाबी ! फतह ! फतह !

क़ासिद : मगर हमारी नहीं, दुश्मनों की !

शमसा : दुश्मन की फतह ! खामोश ! मर्दूद, बेहया !

क़ासिद : मगर हज़ूर, मेरी खता !

शमसा : निकल यहां से, दुष्ट ! पाजी ! अफसोस ! खुदाया, एक भी अच्छी खबर नहीं आती ! अगर वाक़ई मेरी हार हुई तो फिर मेरी ज़िन्दगी का दुनिया से खात्मा है !

क़ासिद : हज़ूर, दुश्मन का झण्डा किले पर गड़ गया।

चौथा : हज़ूर, हमारा लश्कर आपस में लड़ गया !

पांचवां : पनाह लीजिए, हज़ूर !······

छठा : हज़ूर, वह गोलों की बारिश हुई कि नवाब क़तलू खां की फौज बिखर गई और वह नितान्त अकेले रह गए।

शमसा : निकलो, यहां से, दुष्ट कहीं के ! मौत के राग गाने के सिवा और राग आता नहीं !

[क़तलू आता है]

कहो, तुम क्या खबर लाये हो ? खुदा के लिए कोई अशुभ बात मुंह से न निकालना।

क़तलू : शमसा, अब यहां दम न लो, दुश्मन सूली और हथकड़ी लिए हुए पीछे आ रहे हैं।

शमसा : अच्छा भागो !

क़हरमान : (आकर) खबरदार, जाने न पायें !

क़तलू : वे आ पहुंचे सब, भागिये, भागिये ! (दोनों भागते हैं)

क़हरमान : वह भागे जा रहे हैं, फौरन गिरफ्तार कर लो।

ताहिरा : (निकट आकर) ज़ालिम शमसा, तू अब तक इंसानी कुर्बा-

नियों का अपना क़ानून और हकूमत बनाये हुए थी। अब इन्साफ़ की अदालत में अपनी किस्मत का फैसला सुनने आ रही है।

[शमसा और क़तलू गिरफ्तार हुए लाये जाते हैं]

शमसा और क़तलू ! जहां एक हाकिम का कानून और इन्साफ़ जारी होता है, वहां कोई व्यक्ति जुर्म नहीं करता। मगर तुमने खुदा जैसे हाकिम और चांद, सूरज, सितारों और फरिश्तों जैसे सच्चे कानून और पाक इन्साफ़ के होते हुए कैसे-कैसे गुनाह किये हैं ! और अपने बचाव का कोई सबूत तुम्हारे पास नहीं है !

शमसा : यह तू किससे कह रही है ?

ताहिरा : तुझ से—जिसने चंद रोज़ा ज़िन्दगी के लिए कैसे-कैसे जुल्म-ओ-सितम किये ! अब वह तेरा छल-कपट कहां है ? देख, तू इस वक्त किस हाल में है ! वह तेरा सितारा डूबा है ! अब तू मुआफी भी किस मुंह से मांग सकती है !

शमसा : माफ़ी ! तुमसे ? जो मेरे दस्तरखान से गुजरे हुए टुकड़े जमा करके अपना पेट पालते थे !—उनसे माफ़ी मागूंगी ! आसमान ज़मीन के आगे सर झुकायेगा ? दिन के बाद रात, रात के बाद दिन, ज़िन्दगी के बाद मौत और चरम उन्नति पर जाकर गिरना कुदरत का कानून है। अगर मैं इसका अफ़सोस करूं तो पागल हूं और जो तू खुश होती है, तो तू बेवकूफ़ है।

ताहिरा : यह तेरा ख्याले-खाम है। किसी की मुसीबत देखकर खुश होना बदों का काम है। लेकिन मैं जिस वक़्त तेरे पास आई थी और सहील की ज़िन्दगी के लिए भीख मांगने को गोद फैलाई थी······

शमसा : तो क्या तू चाहती है कि मैं भी तेरे आगे ज़िन्दगी के लिए गिड़गिड़ाऊं ?

ताहिरा : नहीं, मेरा यह विचार नहीं। मैं केवल तुझे याद दिलाती हूं, कि उस वक़्त तूने भीख में मुझे ठोकर दी थी, लेकिन मैं

तुझे बगैर नफ़रत, वग़ैर माँगे तेरी ज़िन्दगी बख्शती हूँ !

शमसा : मैं तेरी माफ़ी को तेरे चेहरे पर, नफ़रत से फेंकती हूँ।

क़हरमान : खुदा की कसम, ऐसी काफिर औरत पर कभी रहम नहीं करना चाहिये ।

ताहिरा : नहीं, इसकी मौत से हमें कोई लाभ न होगा। अगर यह ज़िन्दा रहेगी और आइंदा तौबा करके नेक बनेगी तो हमें इन्सान को बदी से बचाने का पुण्य मिलेगा।

क़हरमान : क़तलू, जवाब दे, मौत चाहता है या ज़िन्दगी ? क्यों लाश की तरह सरद और कब्र की तरह ज़र्द खड़ा है ।

शमसा : खबरदार,बहादुर क़तलू! दुश्मन को जवाव देते वक़्त बुज़दिली न दिखाना। इज्ज़त में पैदा हुआ है, इज़्ज़त ही में मरना।

क़तलू : मगर हम दोनों इस क़ाबिल नहीं रहे कि खुदा और इन्सान को गर्व से जवाब दें।

शमसा : नामर्द ! बोदे ! तेरी बातों से बुज़दिली की बू आ रही है !

क़तलू : मगर तुझे मालूम है कि इसका नतीजा क्या होगा ?

शमसा : केवल मौत !

क़तलू : मगर हम दोनों मौत के लिए तैयार नहीं हैं।

शमसा : क्यों ?

क़तलू : मौत से ज़िन्दगी प्यारी है ।

शमसा : गुलामों की तरह जीने से आक़ाओं की तरह मरना बेहतर है ।

क़तलू : ओ नाशुक्रगुज़ार औरत !

शमसा : चुप, बुज़दिल ! पस्त-हिम्मत !

क़तलू : खुदा के लिए जी और जीने दे ।

शमसा : हाँ, तुझे जीने दूंगी, मगर यूँ !

शमसा एकदम पहले क़तलू को फिर अपने आपको पिस्तौल से हलाक करती है)

क़तलू : अफ़सोस ! यह है बदकार औरत की मुहब्बत का नतीजा !

शमसा : आग ! जहन्नुम ! **(दोनों दम तोड़ देते हैं)**

[पटाक्षेप]

तीसरा दृश्य

[डाक-बंगला]

शहवाज़ : (स्वगत, पागलों की तरह) मेरा नाम शहबाज़ खां डण्डे वाज़ और मेरे डण्डे का नाम पाजीनवाज़ ! कोई शख्स खिसियाया तो मैंने एक डण्डा जमाया। आज कई आदमियों के कहने से मैं एक औरत पर आशिक़ हो गया हूँ। मगर वह मेरे फँदे में आती ही नहीं, अपने को शौहर वाली बताती है ! खैर, देखा जाएगा। अब मैं उसकी तलाश में जाता हूँ, कुछ पता लगाता हूँ। (जाता है)

खैरसल्ला : (आकर स्वगत) शमसा और क़तलू का जो अन्त हुआ, उसके कहने की अब ज़रूरत नहीं। बंदे ने उनके अंजाम के साथ अपना परिणाम भी अच्छा न जाना और दिल में यही ठाना कि नई फैशनेबल जोरू को किसी दूसरे शहर में ले जाऊँ। वह ज़रा फैशन से नाचेगी और हम ज़रा फैशन से ढोल वजायेंगे। मगर वह सुनते ही साये की तरह चलती बनी और हम डण्डे बजाते रह गए ! एडीकांग के साथ औरत भी गई ! सरकारी आदमियों की निगाह बचाता हुआ इस कोट-पतलून की आड़ में आ निकला।

शीरीं : (आकर स्वगत) उई अल्ला ! वह मेरा पीछा नहीं छोड़ता।

खैरसल्ला : हैं ! यह अंधेरे में गैस लाइट कहां से आ गई !

शीरीं : साहब कौन हैं ?

खैरसल्ला : जनाब, मैं साहब नहीं हूँ, एक मामूली देसी आदमी हूं !

शीरीं : माफ कीजिए। आपके लिबास से ऐसा मालूम हुआ कि आप कोई जैण्टलमैन हैं।

खैरसल्ला : बेशक, यह तो मैंने दिखावे के लिए बना रखा है। क्योंकि आजकल देसी पेसेंजरों के साथ रेलवे बदसलूकी से पेश आते हैं इसलिए मैंने यह कोट-पतलून व वास्कट पहन लिया कि साहब समझकर मेरे कमरे में कोई न आये।

शीरीं : आपका नाम ?

खैरसल्ला : खैरसल्ला !

शीरीं : जनाब, मैं अपने पति के साथ रेल में आ रही थी। मेरा शौहर एक स्टेशन पर पानी पीने के लिए उतरा। इतने में सीटी हुई और रेल चल पड़ी। मैं यहां आई तो एक अर्द्धजंगली शख्स मेरे पीछे पड़ गया।

खैरसल्ला : आप जैसी औरत को अकेले सफर न करना चाहिये। क्या आपको मालूम नहीं कि आजकल रेलवे में औरतों पर बदमाश आदमी बुज़दिलाना हमला करते हैं।

शीरीं : मैं उमीद करती हूं कि मेरे शौहर के आने तक आप मुझे उस शख्स के जुलम से ज़रूर बचायेंगे।

खैरसल्ला : आप बिल्कुल बेफिक्र रहें, उसका सर तोड़ दूंगा।

शीरीं : अब मैं ज़रा बाज़ार जाती हूँ। वह ज़ालिम मेरे पीछे न आने पाए !

खैरसल्ला : आप बिल्कुल बेफिक्र रहें, हरगिज़ नहीं जाने दूंगा।

शीरीं : तो मैं आप पर भरोसा रखूं ?

खैरसल्ला : बल्कि आप समझिए कि आप अपने शौहर की हिफ़ाज़त में हैं।

शीरीं : तसलीम ! (जाती है)

खैरसल्ला : (स्वगत) भई वाह ! क्या मधुर बात है ! अगर यह किसी नाटक कम्पनी में नौकरी करे तो थेटर वालों के

दिन फिर जायें।

[शहबाज़ खां आता है]

शहबाज़ खां : अबे तू कौन है ? उसका बाप है याकि शौहर ? वह कहाँ है ?

खैरसल्ला : (स्वगत)यह नये टाइप का जंगली कहां से निकल आया !

शहबाज़ : मैं क्या पूछता हूँ ?

खैरसल्ला : क्या बकते हो ?

शहबाज़ : अबे गधे के बच्चे ! मेरी तरफ़ क्या देख रहा है ? निगाह नीची कर और बोल, वह कहां है ?

खैरसल्ला : (स्वगत) वह बिल्ली जो मेरे चूहे जैसे दिल को ज़ख्मी कर गई है !

शहबाज़ : वह कहाँ है ?

खैरसल्ला : मैं किसी को नहीं जानता !

शहबाज़ : देखना, खबरदार ! होशियार ! वरना डण्डे से तेरा भेजा हवा में उड़ता हुआ नज़र आएगा। (डण्डा उठाता है)

खैरसल्ला : अरे, अरे ! यह क्या करता है ?

शहबाज़ : ठहर जा, मैं देखता हूँ कि तू किस तरह मरता है।

खैरसल्ला : अरे दोस्त,खाहमखाह लड़ता है,अपना मतलब तो बता !

शहबाज़ : अच्छा तो देख, अगर तू उसका शौहर है तो मैं उसके इश्क़ से बाज़ आ जाऊंगा।

खैरसल्ला : अच्छा, मैं तुझ से कहता हूँ कि तुझे बाज़ रहना पड़ेगा।

शहबाज़ : क्यों ?

खैरसल्ला : क्योंकि वह मेरी बीवी है।

शहबाज़ : क्या कहा ? बीवी ! जा जा, तू तो उसका बाप मालूम होता है !

खैरसल्ला : तेरे बाप की क़सम। कल वीरवार को मेरा और उसका निकाह हुआ है।

शहबाज़ : कहाँ ?

खैरसल्ला : गिरजे में

शहबाज़ : तो क्या तू किरस्तान है ?

खैरसल्ला : बंदा आधा किरस्तान, आधा मुसलमान है।

शहबाज़ : यह कैसे ?

खैरसल्ला : ऐसे कि नमाज़ पढ़ता हूँ, मगर रोज़े नहीं रखता। शराब पीता हूँ मगर हराम नहीं खाता।

शहबाज : अच्छा, अब मैं उसके इश्क से हाथ उठाता हूं और अपने मरहूम इश्क़ के जनाज़े को और किसी माशूक़ की कब्र पर फातेहाख्वानी[1] कराता हूं। मगर तेरा नाम ?

खैरसल्ला : मेरा नाम मिस्टर खैरसल्ला !

शहबाज़ : तू झूठा है, पाजी है, खबीस है। उसने तो अपने शौहर का नाम मुश्किल आसां बताया था।

खैरसल्ला : (स्वगत) मुश्किल आसां ने तो और भी मुश्किल कर दी है ! (प्रकट) हां, हां, दोस्त, मेरा यही नाम है।

शहबाज़ : तो पहले यह क्यों नहीं बताया ?

खैरसल्ला : मैंने तुम्हें ज़रा हंसी में आज़माया।

शहबाज़ : अच्छा, मैं अब जाता हूं।

खैरसल्ला : जा भाई, खुदा के लिए जा।

शहबाज़ : (जाते-जाते रुककर) मगर देखना, अगर तू उसका शौहर न हुआ, तो मारे डण्डों के तेरी खोपड़ी तोड़ दूंगा।

खैरसल्ला : अरे कमबख्त, फिर आ गया ! जा भाई, मैं सच कहता हूं ! (शहबाज़ चला जाता है) कमबख्त ने डण्डा तान-तान कर मुझे अधमुआ कर डाला ! (स्वगत) चलो गया। कमबख्त का मुंह काला। अरे, यह मौत का फरिश्ता और कौन आ रहा है ?

१. फातेहा पढ़ना.

[जमादार आता है]

जमादार : हां, यही।

खैरसल्ला : हां यही ! क्या कोई पागल तो नहीं !

जमादार : हैं ! हैं ! यही !

खैरसल्ला : खुदा जाने, क्या बड़बड़ाता है ?

जमादार : मगर ज़रा अच्छी तरह देखकर शक मिटाना चाहिये। चलो अपनी पीठ दिखाओ।

खैरसल्ला : पीठ दिखाओ ! क्या मुझे कोई सज़ा-याफ़्ता[1] समझा है ?

जमादार : चुप रहो ! हम कौन हैं, जानते हो ?

खैरसल्ला : आप इस शहर के झाड़ू हैं।

जमादार : क्या कहा ?

खैरसल्ला : जैसे सफाई वाले शहर के गंदे कूड़े-कर्कट को साफ़ करते हैं, वैसे ही आप शहर के बदमाशों को पाक करते हैं।

जमादार : भला यह क्या है ?

खैरसल्ला : यह बदमाशों की हजामत बनाने वाला उस्तरा।

जमादार : अच्छा, यह बताओ, इधर कोई अर्द्ध-विक्षिप्त आदमी तो नहीं आया था ?

खैरसल्ला : हां, हां, अभी इधर से गया है—तन-तड़ंगा, बात-बात पर सोटा तानता जाता था।

जमादार : तो तुमने उसको पकड़ा क्यों नहीं ?

खैरसल्ला : यह काम तुम्हारा है।

जमादार : पागल को पकड़ना हमारा काम नहीं।

खैरसल्ला : फिर तुम्हारा काम सौदा बेचने वालों को धमकाना और किसी शरीफ़ आदमी पर मुकदमा बनाना है !

जमादार : देखो, पुलिस वालों से अड़ी न करो।

खैरसल्ला : अच्छा भई, खता हुई, माफ करो।

जमादार : अच्छा तो बता, वह किस तरफ़ गया है ?

1. दण्डित अपराधी

खैरसल्ला : उधर।

जमादार : अच्छा, हम उसकी तलाश में जाते हैं। अगर वह यहां आये तो उसे पकड़ रखना।

खैरसल्ला : जरूर ! उसकी मुश्कें कस थाने में पहुंचा दूंगा (जमादार जाता है)
(स्वगत) लो मैं उसको पकडूंगा ! बात-बात पर तो वह पागल डण्डा तानता है। अगर पकड़ूं तो मेरा भुरकस निकाल दे !

मुश्किलआसां : (आकर) हां, मेरे चाचा यही हैं।

शहबाज़ : (आकर) क्या मुश्किलआसां ? मुश्किलआसां ! देखो, वह कौन है ?

मुश्किलआसाँ : यह क्या ?

शहबाज़ : क्यों तुम अपने चचा को नहीं पहचानते ?

मुश्किलआसाँ : नहीं।

शहबाज़ : सबब ?

मुश्किलआसां : सबब यह कि वह बहुत अर्से से यहाँ चले आए हैं, आज तक मैंने उनको और उन्होंने मुझको नहीं देखा है।(खैरसल्ला की ओर बढ़कर) मुझको अपने क़दम चूमने की इजाज़त दीजिए।

खैरसल्ला : हैं ! तू कौन है भाई ?

मुश्किलआसाँ : आपका भतीजा।

खैरसल्ला : (स्वगत) मेरा कोई भाई न था, यह भतीजा कहाँ से टपक पड़ा !

मुश्किलआसां : मैं आपका ख़त पाते ही खिदमत में हाज़िर होता, मगर ज़रा रास्ते में रेल छूट गई। इसलिए वक़्त पर न आ सका। माफ कीजिए !

खैरसल्ला : (स्वगत) खुदा जाने किस बात की माफ़ी मांगता है ? (प्रकट) मगर तेरा नाम ?

मुश्किलआसाँ : मुश्किल आसाँ !

खैरसल्ला : (स्वगत) कमबख्त मुश्किल आसाँ तो मुश्किल बढ़ाये चला जाता है ! मालूम होता है कि यह और के धोखे में मुझे चचा जानता है। अब मैं ऊट-पटाँग फेंकता जाऊँ।

मुश्किलआसाँ : चचा जान !

खैरसल्ला : चुप शैतान, तू बड़ा नालायक है।

मुश्किलआसाँ : बेशक !

खैरसल्ला : तेरा बाप तुझ से भी ज्यादा गधा था।

मुश्किलआसाँ : (स्वगत) सच है, मैंने जैसा गरम मिज़ाज सुना था, उससे ज़्यादा पाया !

खैरसल्ला : चल हट ! मैं एक शरीफ आदमी हूं, इसलिए तेरा कसूर माफ़ करता हूं।

शहबाज़ : चल, अपने चचा को आदाब कर !

मुश्किलआसाँ : आदाब !

खैरसल्ला : आदाब से क्या होगा, कान पकड़ !

मुश्किलआसाँ : लीजिए, कान पकड़े।

खैरसल्ला : कान पकड़ने से क्या होता है, पांव पड़।

मुश्किलआसाँ : लीजिए, पांव पड़ता हूं।

खैरसल्ला : पाँव पड़ने से क्या होता है……

शहबाज़ : बस, दोस्त, बस ! इतनी विनम्रता पर तो खुदा भी माफ़ कर देता है। चलो, अब अपने भतीजे को गले से लगाओ।

[मुश्किल आसां और खैरसल्ला आपस में गले मिलते हैं। दोनों खुश होते हैं, हिप…हिप…हुर्रे !]

मुश्किलआसाँ : चचा जान ! आपकी दासी भी आई है। अगर इजाज़त हो तो वह भी आपकी खिदमत में आये।

शहबाज़ : पूछने की क्या ज़रूरत है, जा बुला ला !

[मुश्किल आसां जाता है और उसके असली चचा आते हैं]

खैरसल्ला : (स्वगत) चलो एक बला तो टली ! अब यह दूसरी भी टल जाय तो बंदा यहां से निकल जाय !

चचा : (आकर) मैंने अपने भतीजे को खत भेजकर बुलवाया है।

यक़ीन है कि वह आया होगा। बोलो, तुम दोनों में कौन मेरा भतीजा है ? जवाब दो, मैं किसका चचा हूं ! बोलते क्यों नहीं, क्या तुम दोनों गूंगे हो ? (शहबाज़ से) तुम्हारा नाम ?

शहबाज़ : शहबाज़ खाँ डण्डे बाज़ !

चचा : (खैरसल्ला से) और तुम्हारा नाम ?

खैरसल्ला : मुश्किलआसाँ !

चचा : मुश्किलआसां ! बस तू ही मेरा भतीजा है !

खैरसल्ला : (स्वगत) लो थोड़ी देर पहले चचा था, अब भतीजा हो गया!

चचा : नालायक, इधर देख, बता मैं तुझे क्या कहूं !

खैरसल्ला : तुम मुझे कुछ न कहो।

चचा : तू इस दुनिया में एक ही बेवकूफ़ है।

खैरसल्ला : नहीं, यह और मैं।

चचा : क्यों बे !

खैरसल्ला : माफ़ करो !

चचा : मुझे इस बात का जवाब दे, तूने शादी क्यों की ?

खैरसल्ला : (स्वगत) इसलिए कि इक बेवकूफ़ और पैदा हो !

चचा : शादी की भी तो किस औरत के साथ ?

खैरसल्ला : (स्वगत) औरत के साथ नहीं तो किसी मरद के साथ ?

चचा : और फिर यह ढिठाई कि शादी के लिए मेरी आज्ञा भी न ली !

खैरसल्ला : शादी के लिए आज्ञा लेने की क्या ज़रूरत है ?

शहबाज़ : ज़रूरत क्यों नहीं ? आज चचा की आज्ञा के बिना एक बीबी का शौहर बन गया, कल बग़ैर इजाज़त के एक बच्चे का बाप बन जायगा !

चचा : खैर, अगर चाहता है कि वसीयत से तेरा नाम रद्द न करूं, तो फिर अपने अपराध स्वीकार कर और आइंदा नेकचलनी अख्तियार कर।

खैरसल्ला : (स्वगत) पर मैंने कोई गुनाह किया भी हो ! अगर साफ बोलता हूँ तो यह कमबख़्त डण्डा तानता है। अगर चुप

रहता हूं तो बुड्ढा गले पड़ता है ! (प्रकट शहबाज़ से) क्यों दोस्त, आज खाना खाने नहीं जाओगे ?

शहबाज़ : नहीं, मैंने ढाई दिन का रोज़ा रखा है।

खैरसल्ला : रोज़ा रखा है, तो कुछ लैमन सोडा ले आऊं ?

शहबाज़ : अरे, कोई रोज़ों में सोडालैमन पीता है ?

खैरसल्ला : क्या खुदा ने पानी भी मना कर रखा है ?

चचा : नालायक ! मालूम होता है, तूने मज़हब भी छोड़ दिया है !

खैरसल्ला : मैंने मज़हब तो नहीं छोड़ा।

चचा : बस, बस, मज़ाक छोड़ ! अपने कसूर की माफी मांग और बोल कि मैंने गुनाह किया है।

खैरसल्ला : (स्वगत) किस गुनाह की माफी मांगूं ?

चचा : माफी क्यों नहीं मांगता ? शरम आती है ?

खैरसल्ला : नहीं, नहीं, शरम काहे की ?

चचा : तो बोल कि चचा, मैं ख़तावार हूं।

खैरसल्ला : चचा जान ! मैं शैतान से ज्यादा गुनहगार हूं।

चचा : और माफी का तलबगार हूं।

खैरसल्ला : और माफी का उमीदवार हूं !

चचा : शाबाश ! जिन्दाबाद ! अब मैं तेरे कसूर को माफ करता हूं और तेरी बीवी की तरफ से दिल साफ करता हूं !

खैरसल्ला : मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं।

[शीरीं आती है]

शीरीं : (स्वगत) मालूम नहीं कि मेरे मियां ने कहां देर लगाई ?

शहबाज़ : बेगम, आओ और अपने चचा को आदाब करो।

शीरीं : आप तशरीफ़ ले आए ! मैं चरण छूती हूं।

चचा : बेटी, तू यह सुनकर बहुत खुश होगी कि मैंने तेरे शौहर के कसूर बिल्कुल माफ कर दिये।

शीरीं : चचा जान ! इस वक्त शुक्रिये के लिए मेरे शौहर मौजूद नहीं, लेकिन मैं उनकी तरफ से शुक्रिया अदा करती हूं।

चचा : बेटी, तेरा शौहर तो पहले ही यहाँ मौजूद है।
शीरीं : आप किसे शौहर बताते हैं ? मैं समझी नहीं!
खैरसल्ला : बीवी, इधर आओ, मैं समझाऊं !
शीरीं : हैं, साहब ! आप दिवाने तो नहीं हो गए ?
खैरसल्ला : हुआ तो नहीं, मगर हो जाऊंगा।
शीरीं : छोड़ो, छोड़ो मेरा हाथ ! मैं तुम्हें एक शरीफ़ आदमी समझती थी, मगर तुम तो कमीने निकले !
खैरसल्ला : शरीफ़ तो हूँ मगर जरूरत के वक़्त पाजी बन जाता हूं।
शहबाज़ : क्यों बे, उधर छिप कर क्या समझा रहा है ?
खैरसल्ला : चुप, मियां-बीवी के मामले में क्यों दखल देता है ?
शीरीं : तुमने मुझे बीवी कहा !
खैरसल्ला : (अलग हटकर) खुदा के लिए पांच मिनट के लिए मेरी बीवी बन जाओ और मुझे इस आफ़त से बचाओ !
शीरीं : तुम कहीं पाजी तो नहीं हो गए हो ?
खैरसल्ला : देखो बीवी, मान जाओ।
शीरीं : अरे जा भाई !
चचा : नालायक, यह क्या मामला है ? यह तो तुझे भाई कहती है, तू इसे बीवी बताता है ! तुम दोनों का गड़बड़-घुटाला कुछ मेरी समझ में नहीं आता है।

[मुश्किल आसां आता है]

मुश्किल आसां : आहा ! प्यारी शीरीं, तुम आ गई !
शीरीं : वाह साहब ! खूब राह दिखाई !
मुश्किलआसां : मैंने राह दिखाई या तुमने देर लगाई ! चलो, चचा जान के चरण छूओ। (खैरसल्ला की ओर संकेत करता है)
शीरीं : हैं ! तुम्हारे चचा जान तो ये हैं। (चचा की ओर संकेत करती है)
मुश्किलआसां : यह नहीं, प्यारी शीरीं, मेरे चचा ये हैं ! (खैरसल्ला की ओर संकेत)

शीरीं : नहीं, प्यारे मुश्किल आसां, तुम्हारे चचा ये हैं।

चचा : हैं ! मुश्किलआसां तो इसका नाम है ! (खैरसल्ला की ओर संकेत)

शीरीं : कौन कहता है ? इसका नाम तो खैरसल्ला है।

खैरसल्ला : अब अल्ला ही अल्ला है !

चचा : मालूम होता है, यह मेरा भतीजा नहीं है।

मुश्किलआसां : मालूम होता है, यह मेरा चचा नहीं है।

शहबाज़ : मालूम होता है, यह इसका शौहर नहीं है।

शीरीं : मालूम होता है, यह शरीफ़ आदमी नहीं है।

खैरसल्ला : अरे भाई, मैं कुछ भी नही हूं। खुदा के लिए मुझे अब जाने दो।

चचा : भागता कहाँ है ? नामुराद ! तू मेरा भतीजा है, यह तूने कहा ही क्यों ?

शीरीं : तू मेरा शौहर है, यह कहा ही क्यों ?

खैरसल्ला : अच्छा तो अलग-अलग जवाब दूं या एकदम !

चचा : एकदम !

खैरसल्ला : बहुत अच्छा ! सुनो ! ऐ जेन्टलमैन एंड लेडीज़ ! मैं आपका बहुत शुक्रगुज़ार हूं कि आप अपना कीमती टाइम वेस्ट करके मेरा लेक्चर सुनने के लिए तैयार हैं !

चचा : अबे तुझे लेक्चरबाज़ी करने के लिए किसने कहा है ?

खैरसल्ला : अच्छा, ओ माई लार्ड एंड लेडीज ! तुम सबके सामने मैं खुदा को हाज़िर-नाज़िर जानकर बयान करता हूं कि न कोई मेरा चचा है, न कोई मेरा भतीजा है। यह जो कुछ हुआ है, इस डण्डेबाज़ के सोटे का नतीजा है। इसने कहा कि जब तक इस औरत का शौहर न होगा, मैं इसके इश्क़ से हाथ न उठाऊंगा। तो मैंने इसका शौहर बनकर इसकी लाज बचाई जिससे यह मुसीबत मेरे सिर पर आई !

चचा : मगर तूने अपना नाम मुश्किल आसां क्यों बताया ?

खैरसल्ला : अगर मैं अपना नाम मुश्किल आसाँ न बताता तो यह कमबख़्त इसके इश्क़ से कभी बाज़ न आता।

चचा : तौबा, तौबा ! कैसे भले आदमी को मैंने सताया ! भाई, मेरा कसूर माफ करना।

मुश्किल आसां : मैंने भी जो कुछ कहा है, उसकी माफ़ी चाहता हूं।

शीरीं : जनाब, केवल मेरी लाज बचाने के सबब आप पर यह मुसीबत आई थी, तो खुदा के लिए मुझे माफ़ कीजिए।

खैरसल्ला जाओ, सबसे पहले मैंने तुम्हारा कसूर माफ़ किया।

[जमादार आता है]

जमादार : हत्तेरे की ! बहुत मुश्किल से हाथ आया। (शहबाज़ को पकड़ता है)

मुश्किल आसां : अरे भाई ! इस बेगुनाह को क्यों गिरफ्तार करते हो ?

जमादार : यह अर्द्धविक्षिप्त पागलखाने की दीवार कूदकर भाग आया है। इस कमबख़्त ने हमें सख़्त परेशान कर रखा है !

शहबाज़ : अरे, मुझे छोड़, नहीं तो मार डालूंगा, पीस डालूंगा; रगड़ डालूंगा।

खैरसल्ला : क्यों चचा, अब डण्डा तानना भूल गए ! कमबख़्त ने डंडा तानकर मेरा नाक में दम कर दिया था !

(सब गाते-से हैं)

सब : हमें माफ़ करना अब जो कुछ हमने है किया।

खैरसल्ला : मुझको घन चक्कर यह डण्डेबाज़ ने किया।।

सब : बेशक पागल ने हम पर भी यह अंधेरा कर दिया।
गड़बड़झाला, सब घोटाला हुआ, जिया अंदेश मिट गया।।
हरेक था भोला-भाला, आया है मुद्दा क्या ही दोबाला।
सबका अंदेशा तो मिट गया !

(गाते-गाते सब जाते हैं)

[पटाक्षेप]

चौथा दृश्य

[जश्ने-ताजपोशी]

पहला चोबदार : किस्मत खुली कि नई बहार की सुगंध चमन में आई।
दिलों को आनन्द मिला कि रूह फिर जान-ओ-तन में
आई॥

दूसरा : मुबारक बुझे दिलों को कि बहार है फिर चमन में आई।
इन्तज़ार करती आँखों के लिए शम्आ फिर अंजुमन[1]
में आई॥

पहला : गुज़र गई रात रंज-ओ-ग़म की जहां में राहत का रोज़
आया।
जलूस करने को तख़्ते-दौलत पै महरे-आलम अफ़रोज़[2]
आया॥

क़हरमान : खुदा का शुक्र है कि फरेबियों को हार और हक़दार को फ़तह नसीब हुई और मुल्क के खैरखाहों[3] ने जिस काम का ज़िम्मा लिया था, बड़े गर्व से कामयाब हुए। जब तक चांद-सूरज की रोशनी ज़मीन व आसमान में कायम रहेगी तब तक इस ज़िन्दा वफ़ादारी की यह तस्वीर दुनिया में यादगार रहेगी।

दूसरा : सच्ची भविष्यवाणी है !

शहरयार : बेशक ! दुनिया की कोई ताक़त इसको मिटा नहीं सकती। ये शब्द तमाम मुल्क की ज़बान बनकर इस

१. महफ़िल २. दुनिया का चांद चमकता-बढ़ता आया. ३. हितैषियों

बयान की पुष्टि करते हैं।

ताहिरा : मुझे भी अपनी किस्मत पर नाज़ है कि खुदा का फ़र्ज़ और शौहर का हुक्म पूरा करने में धैर्य और दृढ़ता ने मेरा साथ दिया और मुझे ईमान के साथ कामयाब किया। आज मैं अपने बादशाहज़ादे को अपने उत्तराधिकार पाते हुए देखकर बीते ग़मों को भूल गई हूं। अपनी उम्मीद के गुलज़ार[1] में इस नौनिहाल को देखकर खुशी से फूल गई हूं।

क़हरमान : आदरणीया बानो, बेशक, आपने इस मासूम के वास्ते जो-जो कीमती कुर्बानियां की हैं, दुनिया की तारीख़ में उसकी मिसाल मिलनी कठिन है। आपकी वफ़ादारी और नमकहलाली दुनिया में एक अमिट छाप और यादगार है।

ताहिरा : जनाबे-आली, आप मेरे पिछले ग़मों की तरफ़ बार-बार इशारा करके मौजूदा खुशी को गमगीन न बनाइए। स्वर्ग में उनकी रूहें आज का नज़ारा देखकर खुश हो रही होंगी और खुशी के फूल बरसाकर हमें मुबारकबाद दे रही होंगी।

शहरयार : आदरणीया बानो, यह तो आप के ही शरीफ़ खानदान की वजह से आज सहील ज़िन्दा और बादशाह के रूप में हमारे सामने है।

क़हरमान : बेशक !

ताहिरा : जनरल साहब, आप मुल्क के बड़े उपकारक हैं। इसलिए ताजपोशी की मुबारक रस्म आप ही के मुबारक और नेक हाथों से अदा होनी चाहिये।

क़हरमान : मैं इस कार्रवाई को अपना गर्व और गौरव समझता हूँ।

१. बाग़

सहील : ठहरिये ! पहले यह ताज अम्मीजान को पहनाइये !

ताहिरा : नहीं बेटा, इसे तुम पहनो, यह तुम्हारा हक़ है।

सहील : क्यों, मैं आपका बेटा नहीं हूं ? यह ताज आपको...... जरूर पहनना पड़ेगा।

ताहिरा : तुमने कभी माँ के साथ जिद्द नहीं की, अब क्यों करते हो ?

सहील : तुमने कभी बेटे की बात नहीं टाली, आज क्यों टालती हो ?

क़हरमान : कितनी ख़ूबसूरत दलील !

ताहिरा : अच्छा, तुम्हारी जिद्द और खुशी से लाचार हूं। (ताज पहनती है)

सहील : अब मेरा दिल बहुत खुश हुआ।

ताहिरा : बस लो, तुम्हारी खुशी पूरी हो गई। लो अब तुम पहनो और इसके साये में न्याय और इन्साफ़ से प्रजा को खुश करो—

नूर इक़बाल तेरा आज से घर-घर चमके।
हश्र[1] तक ताजे-हुकूमत तेरे सर पर चमके॥

क़हरमान : बेज़बान को अपने आक़ा की जुदाई शाक़[2] है।
एक मुद्दत से क़दमबोसी का यह मुश्ताक़[3] है॥

क़हरमान : आइए और तख्त पर जलवा फरमाइए। (सहील को ताज पहनाया जाता है और तख्त पर बैठने को उठाया जाता है)

सहील : नहीं, पहले अम्मीजान को बिठलाइए।

ताहिरा : नहीं बेटा, इस पर तुम बैठो ताकि तुम्हें बुलंदी पर देख-कर मेरी आँखें रौशन हों।

सहील : मगर पहले आप बैठेंगी, फिर मैं बैठूंगा।

ताहिरा : नहीं बेटा, इस पर बैठने का मुझे कोई हक़ नहीं है।

१. प्रलय, क़यामत २. नागवार ३. लालायित

सहील : क्यों ? क्या मैं तुम्हारा बेटा नहीं हूं ? अगर इस पर मेरा हक़ है तो फिर तुम्हारा भी है।

क़हरमान : बानो, अपने प्यारे की दूसरी जिद्द भी पूरी कीजिए।

ताहिरा : अच्छा, मजबूरी ! (तख़्त पर बैठती है और उसके साथ सहील भी)

क़हरमान : या इलाही यह तेरा इक़बाल ताबंदा[1] रहे।
मुल्क की किस्मत का मालिक हश्र तक ज़िन्दा रहे॥
(सब मिलकर मुबारकबाद देते हैं और सखियाँ गाना गाती हैं)
साजे रे दुल्हन साजे, फूलन सेज बनी बनी तैयार !
हिलमिल जिया पिया सोहे, शादी का रंग, बाजे मृदंग;
अचरंग है है है है दुल्हन साजे…
प्यारी मालनियां सेहरा गुंथावे, बनी बने के गल हार सुहावे।
बाजे धना ना ना बाजे धना ना ना अचरंग,
साजे रे दुल्हन…
(सबका गाते हुए अन्दर जाना)

[पटाक्षेप]

डा० डिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय

1. कायम

२०९.४३२
३५ ५२८ २५

शारदा प्रकाशन
दरियागंज
नयी दिल्ली-११०००२